

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

आगम_संबंधी_साहित्य

भाग

1



आगमीय-सूक्तावलि-आदि:

मूल संशोधक :- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

अभिनव-संकलनकर्ता :- आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से
श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब



श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ
वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

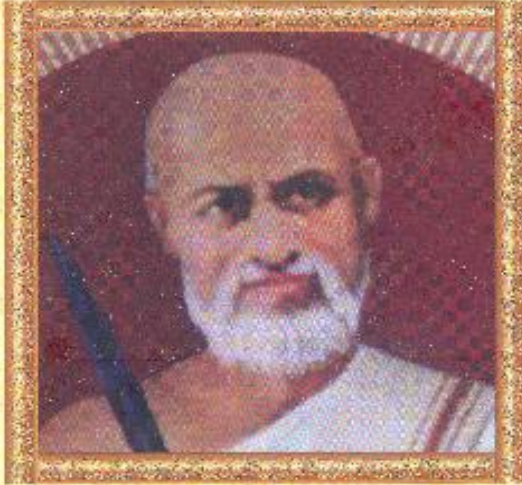
करीब पचास साल पहले परम पूज्य स्वर्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है ।

इस संघमें पूज्य साधू-भगवंत एवं साध्वी-महाराज के लिए उपाश्रय भी है, जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओं को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है । इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है । ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है ।

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

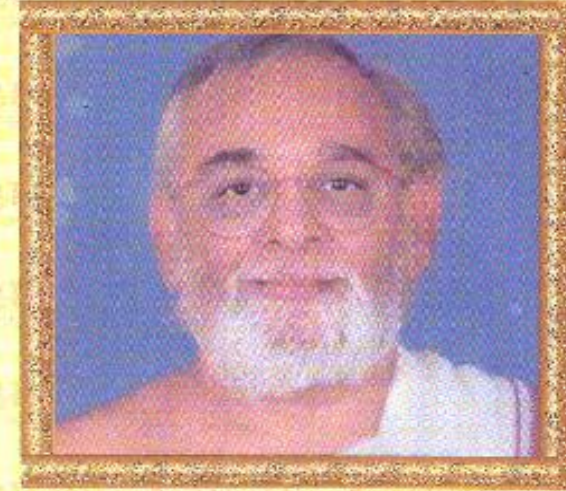
आगम_संबंधी_साहित्य

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपकनसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेयरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका

मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275



आजम

वाचना शताब्दी वर्ष

[भाग-1] श्री आगमीयसूक्तावल्यादि

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

आगमीय-सूक्तावलि-आदिः [आगम-संबंधी-साहित्य]

[आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]
(किञ्चित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता → मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५

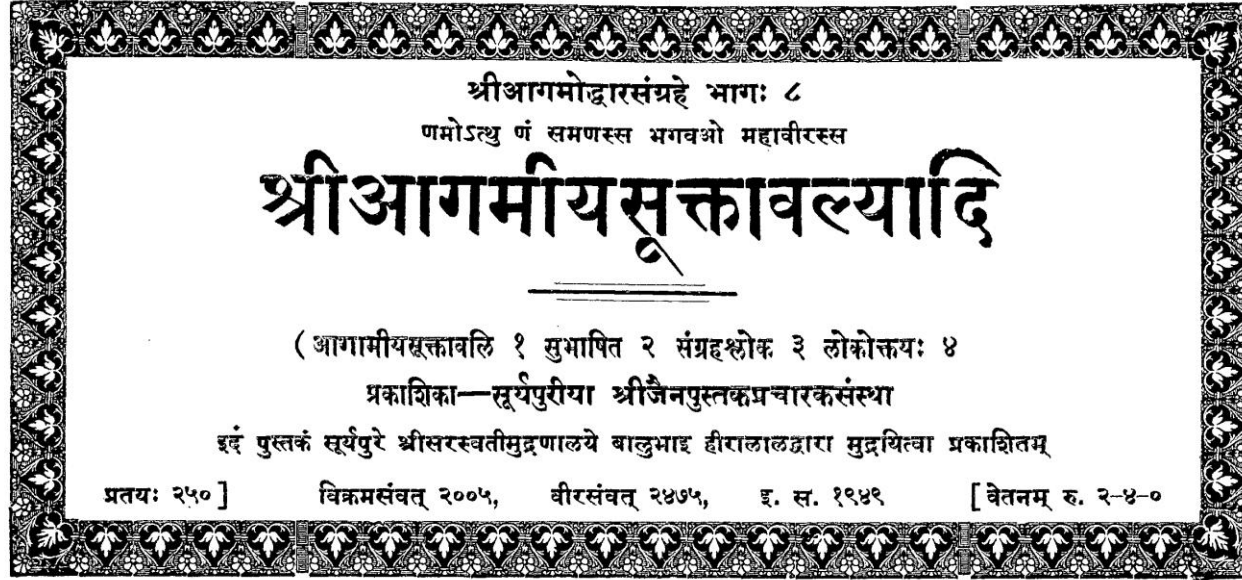
‘आगम-संबंधी-साहित्य’ श्रेणि भाग-१

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)



*** मूल संपादकेन मुद्रापितः मुखपृष्ठः

सामाचारी-संरक्षक, ज्ञानधनी, आगम-संशोधक, तीव्र-मेधावी, समाधिमृत्यु-प्राप्त, बहुमुखीप्रतिभाधारक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

◆ जिन्होंने शुद्ध-श्रद्धा, सम्यक्-श्रुत आराधना, यथाख्यातचारित्र के प्रति गति और अंत समय देह-ममत्व के त्याग के द्वारा कायोत्सर्ग नामक अभ्यंतर-तप कि मिशाल कायम कि है ऐसे बहुश्रुत आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज का परिचय कराना मेरे लिए नामुमकिन है, फिर भी गुरुभक्ति बुद्धि से श्रद्धांजली स्वरूप एक मामूली सी झलक पैस करने का यह प्रयास मात्र है ।

◆ चारित्र-ग्रहण के बाद अल्प कालमे जो अपने गुरुदेव की छत्रछाया से दूर हो गये, तो भी गुरुदेव के स्वर्ग-गमन को सिर्फ कर्मों का प्रभाव मानकर अपने संयम के लक्ष्य प्रति स्थिर रहते हुए अकेले ज्ञान-मार्ग कि साधना के पथ पर चले । पढाई के लिए ही कितने महिनो तक रोज एकासणा तप के साथ बारह किल्लोमिटर पैदल विहार भी किया । लेकिन अपने मंझिल पे डटे रहे, और परिणाम स्वरूप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का, प्राचीन लिपिओ का, व्याकरण-न्याय-साहित्य आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया । जैन आगमशास्त्रो के समुद्र को भी पार कर गए।

◆ एक अकेला आदमी भी क्या नहीं कर सकता? इस प्रश्न का उत्तर हमें इस महापुरुष के जीवन और कवन से मिल गया, जब वे चल पड़े देवर्दिगणी क्षमाश्रमण के स्थापित पथ पर. बिना किसी सहाय लिए हुए सिर्फ अकेले ही “जैन-आगम-शास्त्रो” को दीर्घजीवी बनाने के लिए अनेक हस्तप्रतो से शुद्ध-पाठ तैयार किये । दो वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र और निर्युक्तिओ को जोड़कर ४५ आगम-शास्त्रो को संशोधित कर के संपादित किया । फिर पालीताणामें आगम मंदिर बनवाकर आरस-पत्थर के ऊपर ये सभी आगम-साहित्य को कंडारा, सूरतमें ताम्रपत्र पर भी अंकित करवाए और “आगम मंजूषा” नाम से मुद्रण भी करवा के बड़ी बड़ी पेटीमें रखवा के गाँव गाँव भेज दिए । वर्तमानकालमे सर्व प्रथमबार ऐसा कार्य हुआ ।

◆ सिर्फ मूल आगम के कार्य से ही उन के कदम रुके नहीं थे, उन्होंने आगमो की वृत्ति, चूर्णि, निर्युक्ति, अव चूरी, संस्कृत-छाया आदि का भी संशोधन-सम्पादन किया । उपयोगी विषयो के लिए उन्होंने एक लाख श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत नए ग्रंथो की रचना भी की । कितने ही ग्रंथो की प्रस्तावना भी लिखी । ये सम्यक्-श्रुत मुद्रित करवाने के लिए आगमोदय समिति, देवचंद लालभाई इत्यादि विभिन्न संस्था की स्थापना भी की ।

◆ ज्ञानमार्ग के अलावा सम्मत्तशिखर, अंतरीक्षजी, केशरियाजी आदि तीर्थरक्षा कर के सम्यक-दर्शन-आराधना का परिचय भी दिया । राजाओं को प्रतिबोध कर के और वाचनाओ द्वारा अपनी प्रवचन-प्रभावकता भी उजागर करवाई । बालदिक्षा, देवद्रव्य-संरक्षण, तिथि-प्रश्न इत्यादि विषयोमे सत्य-पक्षमें अंत तक दृढ़ रहे । जैनशासन के लिए जब जरूरत पड़ी तब अदालती कारवाईओ का सामना भी बड़ी निडरता से किया था ।

◆ सागरानंदजी के नाम से मशहूर हो चुके पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजीने अपने परिवार स्वरूप ७०० साधू-साध्वीजी भी शासन को भेट किये ।

...ये थे हमारे गुरुदेव “सागरजी”...

.....मुनि दीपरत्नसागर...

संयमैकलक्षी, उपधान-तप-प्रेरक, चारित्र-मार्ग-रागी, प्रवचन-पटु, सुपरिवार-युक्त

पूज्य गच्छाधिपतिआचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

*** परमपूज्य आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी के पाट-परंपरामे हुए तिसरे गच्छाधिपति थे पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी, जो एक पून्यवान् आत्मा थे, दीक्षा ग्रहण के बाद अल्पकालमे ही एक शिष्य के गुरु बन गये । फिर क्या ! शिष्यो कि संख्या बढती चली, बढते हुए पुन्य के साथ-साथ वे आखिर 'गच्छाधिपति' पद पे आरूढ हो गए । इस महात्मा का पुन्य सिर्फ शिष्यों तक सिमित नही था, वे जहा कहीं भी 'उपधान-तप' की प्रेरणा करते थे, तुरंत ही वहां 'उपधान' हो जाते थे । प्रवचनपटुता एवं पर्षदापुन्य के कारण उन के उपदेश-प्राप्त बहोत आत्माओने संयम-मार्ग का स्वीकार किया । खुद भी संयमैकलक्षी होने के कारण चारित्रमार्ग के रागी तो थे ही, साथसाथ ज्ञानमार्ग का स्पर्श भी उन का निरंतर रहेता था । आप कभी भी दुपहर को चले जाइए, वे खुद अकेले या शिष्य-परिवार के साथ कोई भी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापनमें रत दिखाई देंगे ।

*** ये तो हमने उनके जीवन के दो-तीन पहेलु दिखाए । एक और भी अनुसरणीय बात उन के जीवनमें देखने को मिली थी- 'आराधना-प्रेम'। कैसी भी शारीरिक स्थिति हो, मगर उन्होंने दोनों शाश्वती ओलीजी, [पोष]दशमी, शुक्ल पंचमी, त्रिकाल देववंदन, पर्व या पर्वतिथि के देववंदन आदि आराधना कभी नहीं छोड़ी । आखरी सालोंमें जब उन को एहसास हो गया की अब 'अंतिम-आराधना' का अवसर नजदीक है, तब उन के मुहमें एक ही रटण बारबार चालु हो गया- "अरिहंतनुं शरण, सिद्धनुं शरण, साधुनुं शरण, केवली भगवंते भाखेला धर्मनुं शरण " इसी चार शरणो के रटण के साथ ही वे समाधि-मृत्यु-रूप सम्यक् निद्रा को प्राप्त हुए थे । ऐसे महान् सूरिवर को भावबरी वंदना ।

*** मुनि दीपरत्नसागर...

अनुदान दाता संस्था:- "श्री परम-आनंद श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ"

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठककर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब ५० साल पहेले परम पूज्य स्व. गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीजी म०सा० ही है । इस संघमें पूज्य साधू भगवंत एवं साध्वीजीओ का उपाश्रय भी है जहा हर-साल चातुर्मास करवाके श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है । इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है । ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है ।

‘सागर-समुदाय-एकता-संरक्षक, तीर्थ-उद्धार-कार्य-प्रवृत्त, गुणानुरागी’

इस “आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणि भाग १ से ४ के संपूर्ण अनुदान के प्रेरणादाता

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराज साहेब

पूज्यपाद स्व. गच्छाधिपति देवेन्द्रसागर-सूरीश्वरजी के विनयी शिष्य एवं दो गच्छाधिपतिओ के मुख्य सहायक के रूपमे ‘सागर समुदाय’ के सुचारु संचालक पूज्य हर्षसागरसूरिजी, जिन की प्रेरणा से ये “आगम संबंधी साहित्य” के मुद्रण के लिए संपूर्ण द्रव्यराशि प्राप्त हुई, उनका अत्यल्प परिचय यहां करेंगे। समुदाय-एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हुए ये महात्मा समुदाय के साधु-साध्वीजी की आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए भी प्रवृत्त रहते हैं, प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार एवं विकाश के लिए भी उत्साहित रहते हैं, ज्ञान-क्षेत्र अछूता न रहे इसीलिए अनुमोदना, अनुदान एवं समय मिलने पर शास्त्र-वांचनमें भी रुचि रखते हैं। समुदाय के जरूरतमंद साध्वीजी भगवंतों के आवास का विषय हो या साध्वीजी के विहारमें मजदूर का वेतन चुकाना हो, ऐसे छोटे-छोटे कार्यों के प्रति भी उनका लक्ष्य रहता है। दर्शन-शुद्धि के लिए जब उन्होंने समग्र भारतवर्ष के १०० साल तक के पुराने जिनालयों में १८ अभिषेक की प्रेरणा की, उस वक्त लगभग सभी अभिषेक-सामग्री की द्रव्य-शुद्धि का खयाल रखते हुए अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय दिया था, साथमें अनुकंपा भाव से पुजारी या विधि करानेवाले को यत्किंचित् बहुमान प्रगट करते हुए कुछ धन-राशि प्रदान करवाई।

ऐसे बहुगुण-संपन्न महात्मा पूज्य आचार्यश्री हर्षसागर-सूरिजी को हम भावभरी वंदना करते हुए इस श्रुतकार्य का प्रारंभ करने जा रहे हैं।

*** मुनि दीपरत्नसागर

[कात्रेज]पूना, शंखेश्वर, कपडवंज, प्रभासपाटण आदि स्थानोमे आगममंदिर के प्रेरक, कर्मग्रंथ अभ्यासु, निस्पृह महात्मा

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर-सूरीश्वरजी महाराज साहेब

(एवं) अजातशत्रु, स्वाध्याय-रसिक, प्रशांतमूर्ती और अपने गुरु के प्रीतिपात्र

परम पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागर-सूरिजी महाराज साहेब

इस पवित्र श्रुत-कार्यमे दोनो सूरिवरो का स्मरण करते हुए कोटि कोटि वंदना के साथ

.....मुनि दीपरत्नसागर

श्री आगमीयसूक्तावल्यादि विषयानुक्रमः

क्रम	विषय	पृष्ठांकः
१	• आगमीय सूक्तावलि	१३
२	• आगमीय सुभाषित	६२
३	• आगमीय संग्रहश्लोक	६३
४	• आगमीय लोकोक्ति	६६

‘आगम-संबंधी-साहित्य’-श्रेणि

[श्री आगमीयसूक्तावल्यादि] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

✦ यह प्रत “श्री आगमीयसूक्तावल्यादि” के नामसे सन १९ ४९ (विक्रम संवत् २००५) में श्री ‘सूर्यपूरीया जैनपुस्तकप्रचारक संस्था’ नामक संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब ।

✦ इस प्रतमे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेबने चार विषयो का संग्रह किया है । (१) आगमीय सूक्तावलि, (२) आगमीय सुभाषित, (३) आगमीय संग्रहश्लोक, (४) तथा आगमीय लोकोक्ति । इन चार विषयोमे ‘आगमीय सूक्तावलि’ का वर्णन विस्तार से प्राप्त है, ‘आगमीय लोकोक्ति’ मे भी कुछ-कुछ विस्तार तो दिखाइ देत है, मगर आगमीय सुभाषित और आगमीय संग्रहश्लोक ये दो विषयमे बहोत कम माहिती दिखाइ दे रही है । जैसा वडीलो के पास से सुना था, उस हिसाब से तो पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री संकलित माहिती कुछ ज्यादा ही थी, परंतु इस प्रत को छपने से पहले उस संकलनमे से कितना कुछ नष्ट हो गया था । (हो सकता है ये बात सच हो) ।

✦ पूज्यपाद आगमोद्धारकश्रीने इसमे ‘विशेषावश्यकभाष्य’का भी समावेश किया है ।

✦ हमारा ये प्रयास क्यों? ✦ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, अब तक मेरे प्रकाशित किये हुए पुस्तको के १,००,००० से ज्यादा पृष्ठ हो चुके हैं, किन्तु लोगो की पूज्यश्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरूप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिस के बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे प्रत संबंधी उपयोगी माहिती लिख दी है, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा विषय आदि चल रहा है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके ।

✦ पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री ने ऐसे ५२ विषयो को वर्गीकृत किया था, आज भी उनमे से कइं प्रते मिलती हैं, जिसमे ये विभाजन-क्रमांक देखने को मिलते हैं, उनमे से थोडे विषयो का काम हुआ भी है, जो मुद्रित स्थितिमे भी प्राप्त है ।

✦ शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणासे और श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये ‘आगम-संबंधी-साहित्य’ भाग-१ का मुद्रण हुआ है, हम उन के प्रति हमारा आभार व्यक्त करते हैं ।

.... मुनि दीपरत्नसागर.

[ભાગ-1] શ્રી આગમીય-સૂક્તાવલિ-આદિ

આગમીય સૂક્તાવલિ

પૂજ્ય આગમોદ્ધારકશ્રી સંશોધિત: મુનિ દીપરત્નસાગરેણ પુનઃ સંકલિત: આગમીય-સૂક્તાવલિ-આદિ (આગમ-સંબંધી-સાહિત્ય)

~❧~ બે ઘોલ ❧~

આ ગ્રંથનું નામ શ્રીઆગમીયસૂક્તાવલિ-આદિ છે. તેની અંદર પરમતારક આગમોદ્ધારક આચાર્યદેવ શ્રીઆનન્દસાગરસૂરીશ્વરજી મહારાજશ્રી આગમોમાંથી તારવેલા તેષ્વર (૫૩) વિષયોમાંથી (૧) આગમીયસૂક્તાવલિ (પત્ર. ૪૯ સુધી), (૨) આગમીયસુભાષિત (પત્ર. ૪૯ થી ૫૦ સુધી), (૩) આગમીયસંગ્રહશ્લોકો (પત્ર. ૫૦ થી ૫૧ સુધી) અને (૪) આગમીયલોકોત્કૃષ્ટિ (પત્ર. ૫૨ થી અંત્ય પત્ર સુધી)-એમ ચાર વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. આ સર્વ વસ્તુને સમજવાને માટે જે પત્ર અંક અને પંક્તિ અંક આપવામાં આવેલ છે તે આગમોદય સમિતિ અને દેવચંદ લાલભાઈના છપાયેલા આગમોના છે. હેતુ ગ્રંથોના જ વિભાગ અંક, પત્ર અંક અને પંક્તિ અંક જે આપેલા છે તે તેઓશ્રીના મંડાર શ્રીજૈનાનંદ પુસ્તકાલયની હાથપોથી ઉપરથી આપવામાં આવેલા છે. આ ગ્રંથ પત્ર ૫૧ સુધી જૈન વિજયાનંદ પ્રિન્ટિંગ પ્રેસમાં અને બાકીના પત્રો સરસ્વતી પ્રિન્ટિંગ પ્રેસમાં છપાયેલાં છે. આ ગ્રંથનું આટલું મૂલ્ય વર્તમાનકાલને આભારી છે. આ ગ્રંથના પ્રૂફોનું કાર્ય મુનિ શ્રીકંચનવિજયજી તથા મુનિ શ્રીક્ષેમંકરસાગરજી કર્યું છે. ઉપરાંત, તે કાર્યમાં જ્યારે જ્યારે શંકા પડી ત્યારે ત્યારે આગમોદ્ધારક આચાર્યદેવશ્રીના પટ્ટધર, દીર્ઘદીક્ષિત, વિદ્યાવ્યાસંગી અને નિરભિમાની આચાર્ય મહારાજશ્રી માણેક્યસાગરસૂરીશ્વરજી મહારાજને પૂછીને તેનું નિવારણ કરવામાં આવ્યું છે. વળી તેઓશ્રીપ્રૂફ ઉપર પણ દષ્ટિપાત કર્યો છે. તેથી તેઓશ્રીઓના અમે કૃણી છીએ. આ ગ્રંથનું પ્રકાશન શ્રીજૈન પુસ્તક પ્રચારક સંસ્થા તરફથી શ્રીઆગમોદ્ધારકસંગ્રહ ભાગ ૮ તરીકે બહાર પાડવામાં આવ્યું છે. સજ્જન પુરુષો આ સૂક્તાવલિ આદિનો ઉપયોગ કરશે અને આ પ્રયત્નને સફળ કરશે.

વિ. સં. ૨૦૦૫ }
અક્ષયતૃતીયા.

લિ. પ્રકાશક.

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [नन्दीसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ

॥ १ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

श्रीआगमोद्धारसंग्रहे भागः ८

णमोऽस्तु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

श्रीआगमीयसूक्तावलिः

नन्दीसूक्तानि

- १ जयति भुवनैकभानुः सर्वत्राविहृतकेवलालोकः ।
नित्योदितः स्थिरस्तापवर्जितो वर्धमानजिनः ॥ (१पत्रे)
- २ जयति जगदेकमङ्गलमपहतनिःशेषदुरितघनतिमिरम् ।
रविविम्बमिव यथास्थितवस्तुविकाशं जिनेशवचः ॥ (१)
- ३ भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारणं तु यल्लोके ।
तद्द्रव्यं तत्त्वज्ञैः सचेतनाचेतनं कथितम् ॥ (२)
- ४ जयइ जगजीवजोणीवियाणओ जगगुरू जगणंदो ।
जगणाहो जगबंधू जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥ (२)
- ५ दुर्गतिप्रसृतान् जन्तून्, यस्माद्धारयते ततः ।
धत्ते चैतान् शुभे स्थाने, तस्माद्धर्म इति स्मृतः ॥ (१५)

- ६ जयइ सुआणं पभवो तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाणं जयइ महप्पा महावीरो ॥ (१५)
- ७ सुनिश्चितं नः परतंत्रयुक्तिषु स्फुरंति याः काश्चन सूक्तिसम्पदः ।
तवैव ताः पूर्वमहार्णवोत्थिता, जगत्प्रमाणं जिन ! वाक्य-
विप्रपः ॥ (१६)
- ८ भइं सव्वजगुज्जोयगस्स भइं जिणस्स वीरस्स ।
भइं सुरासुरनमंसियस्स भइं धुययस्स ॥ (२३)
- ९ जैनैश्वरे हि वचसि, प्रमासंवाद इष्यते ।
प्रमाणवाधा त्वन्येषामतो द्रष्टा जिनैश्वरः ॥ (३०)
- १० नाणी तवमि निरओ चारिस्सि भावणाए जोगोस्सि ॥ (३४)

श्रीनन्देः
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥ १ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [नन्दीसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥ २ ॥

- ११ जं कुच्छियाणुयोगो पयइविसुद्धस्स होइ जीवस्स ।
एएसिमो नियाणं बुहाण न य सुंदरं एयं ॥
१२ रूवंपि संकिलेसोऽभिस्संगो पीइमाइलिंगो उ ।
परमसुहपच्चणीओ एयंपि असोहणं चेव ॥
१३ विसओ य भंगुरो खलु गुणरहिओ तह य तहतहारूवो ।
संपत्तिनिप्फलो केवलं तु मूलं अणत्थाणं ॥
१४ जम्मजरामरणाई विचित्तरूत्रो फलं तु संसारो ।
बुहजणनिव्वेयकरो एसोऽवि तहाविहो चेव ॥ (३४)
१५ अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिर्दिव्यो ध्वनिश्चामरमासनं च ।
भामण्डलं दुन्दुभिरातपत्रं सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वरा-
णाम् ॥ (४१)
१६ पिंडस्स जा विसोही समिईओ भावणा तवो दुविहो ।
पडिमा अभिग्गहावि य उत्तरगुणमो वियाणाहि ॥ (४२)
१७ गुणभवणगहणसुयरयणभरिय दंसणविसुद्धत्थागा ।
संघनगर ! भइं ते अखंडचारित्तपागारा ॥ (४२)
१८ संजमतवतुंभारयस्स नमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।
अप्पडिच्चक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥ (४३)

- १९ पञ्चाश्रवाद्विरमणं पञ्चेन्द्रियनिग्रहः कषायजयः ।
दण्डत्रयविरतिश्चेति संयमः सप्तदशभेदः ॥ (४३)
२० अनशनमूनोदरता वृत्तेः सङ्क्षेपणं रसत्यागः ।
कायक्लेशः संलीनतेति बाह्यं तपः प्रोक्तम् ॥ (४३)
२१ प्रायश्चित्तध्याने वैयावृत्यविनयावथोत्सर्गः ।
स्वाध्याय इति तपः षट्प्रकारमाभ्यन्तरं भवति ॥ (४३)
२२ भइं सीलपडागूसियस्स तवनियमतुरयमुत्तस्स ।
संघरहस्स भगवओ सज्झायसुनंदिघोसस्स ॥ (४३)
२३ कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स सुयरयणदीहनालस्स ।
पंचमहव्वयथिरकन्नियस्स गुणकैसरालस्स ॥
२४ सावगजणमहुअरिपरिवुडस्स जिणसूरतेयबुद्धस्स ।
संघपउमस्स भइं समणगणसहस्सपत्तस्स ॥ (४४)
२५ संपत्तदंसणाई पयदियहं जइजणा सुणेई य ।
सामायारिं परमं जो खलु तं सावगं विति ॥ (४४)
२६ यः समः सर्वभूतेषु, ब्रह्मेणु स्थावरेषु च ।
तपश्चरति शुद्धात्मा, श्रमणोऽसौ प्रकीर्तितः ॥ (४४)
२७ तवसंजमयलंछण अकिरियराहुमुहदुद्धरिस्स निच्चं ।

श्रीनन्देः
सूक्तानि

॥ २ ॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [नन्दीसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥ ३ ॥

जय संघचंद ! निम्नलसम्पत्तविमुद्धजोणहागा ! ॥ (४५)
२८ परतिथियगहपहनासगस्स तवतेयदिच्छेसस्स ।
नाणुज्जोयस्स जण भइं दमसंघसूरस्स ॥ (४५)
२९ भइं धिइवेलापरिगयस्स सज्झायजोगमगरस्स ।
अक्खोहस्स भगवओ संघसमुदस्स रुंदस्स ॥
३० सम्मदंसणवरवइर[दढ]रुढगाढावगाढपेढस्स ।
धम्मवररणमंडिअचामीयरमेहलागस्स ॥
३१ नियमूसियकणयसिलायलुज्जलजलंतचित्तकूडस्स ।
नंदणवणमणहरसुरमिसीलगंधुदुमायस्स ॥
३२ जीवदयासुंदरकंदरुदियमुणिवरमइंदइस्स ।
हेउसयधाउपगलंतरयणदित्तोसहिगुहस्स ॥ (४५)
३३ संवरवरजलपगलियउज्झरपविरायमाणहारस्स ।
सावगजणपउररवंतमोरनच्चंतकुहरस्स ॥
३४ विणयनयपवरमुणिवरफुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स ।
विविहगुणकप्परुक्खगफलभरकुसुमाउलवणस्स ॥
३५ नाणवररणदिप्पंतकंतवेरुलियविमलचूलस्स ।
वंदामि विज्जयपणओ संघमहामंदरगिरिस्स ॥ (४६)

३६ निव्वुइवहसासणयं जयइ सया सव्वभावदेसणयं ।
कुसमयमयनासणयं जिणिंदवरवीरसासणयं ॥ (४८)
३७ न य कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेणं ।
वत्थिव्व वायपुण्णो फुट्टइ गामिल्लयविअट्ठो ॥ (६४)
३८ पिंडवित्तोहीअ समिई५ भावण१२ पडिमा१२ य इंदिय-
निरोहो५ । पडिरेहण२५ गुत्तीओ३ अभिग्गहाअ चैव
करणं तु ॥ (५०, २१०)
३९ नत्तेगसहावत्ते आभिणिबोहाइ किंकओ मेदो ? ।
मेयवित्तेसाओ चे न सव्ववित्तेयं जओ चरिमं ॥
४० अह पडिवित्तिवित्तेसा नेगमि अणेगमेयभावाओ ।
आवरणवित्तेओवि हु सभावमेयं विणा न भवे ॥
४१ तम्मि य सइ सव्वेस्सि खीणावरणस्स पावई भावो ।
तद्धम्मत्ताउ च्चिय जुत्तिविरोहा स चाणिट्ठो ॥
४२ अरहावि असव्वन्नू आभिणिबोहाइभावओ नियमा ।
केवलभावाओ चे सव्वण्णू नणु विरुद्धमिणं ॥ (६७)
४३ तस्सा अक्खगहाओ आरब्भ इहेगमेव नाणंति ।
जुत्तं छउमत्थस्सासगलं इयरं च केवलिणो ॥ (६८)

श्रीनन्देः
सूक्तानि

॥ ३ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [नन्दी+अनुयोगद्वारसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥ ४ ॥

४४ न य पड्वित्तिविसेसा एगंमि य णेगमेयभावेवि ।
जं ते तहा विसिट्टे न जाइमेए विलंघेइ ॥ (६९)
४५ नत्तेगसहावत्तं ओहेण विसेसओ पुण असिद्धं ।
एगंततस्सहावत्तणओ कह हाणिबुद्धीओ ? ॥
४६ जं अविचलियसहावे तत्ते एगंततस्सहावत्तं ।
न य तं तहोवलद्धा उक्करिसावगरिसविसेसा ॥
४७ तम्हा परिश्रूराओ निमित्तमेयाओ समयसिद्धाओ ।
उववत्तिसंगओ च्चिय आभिणिबोहाइओ मेओ ॥
४८ घाइक्खओ निमित्तं केवलनाणस्स वद्धिओ समए ।
मणपज्जवनाणस्स उ तहाविहो अप्पमाउत्ति ॥
४९ ओहीनाणस्स तहा अण्णिदिणसुपि जो खओवसमो ।
मइसुयनाणाणं पुण लक्खणमेयादिओ मेओ ॥ (६८)
५० जं सामिकालकारणविसयपरोक्खत्तणेहिं तुल्लाइं ।
तव्भावे सेसाणि य तेणाईए मइसुयाईं ॥ (७०)
५१ दो वारे विजयाइसु गयस्स सिन्नऽच्चुए अहव ताईं ।
अइरेगं नरभवियं नाणाजीवाण सव्वद्धा ॥ (७०)
५२ कालविवज्जयसामित्तलाभसाहम्मओऽवही तत्तो ।

माणसमित्तो छुउमत्थविसयभावाइसाहम्मा ॥ (७१)
अथानुयोगद्वारसूक्तानि

१ यस्याः प्रसादमतुलं संप्राप्य भवन्ति भव्यजननिवहाः ।
अनुयोगवेदिनस्तां प्रयतः श्रुतदेवतां वन्दे ॥ (१)
२ सम्यक्सुरेन्द्रकृतसंस्तुतिपादपद्ममुद्रामकामकरिराजकठोर-
सिंहम् । सद्धर्मदेशकवरं वरदं नतोऽस्मि, वीरं विशुद्धतर-
बोधनिधिं सुधीरम् ॥
३ अनुयोगभृतां पादान् वन्दे श्रीगौतमादिसूरीणाम् ।
निष्कारणबन्धूनां विशेषतो धर्म्मदातृणाम् ॥ (१)
४ अब्भुअतरमिह एत्तो अन्नं किं अत्थि जीवलोगंमि ।
जं जिणवयणे अत्था तिकालजुत्ता मुणिज्जंति ? ॥ (१३६)
अथावश्यकसूक्तानि ।

१ तित्थयरे भगवंते, अणुत्तरपरक्कमे अमियनाणी ।
तिण्णे सिद्धगइगए, सिद्धिपहपदेसए वंदे ॥ (५९)
२ पङ्कदाहपिपासानामपहारं करोति यत् ।
तद्धर्म्मसाधनं तथ्यं, तीर्थमित्युच्यते बुधैः ॥ (५९)
३ वंदामि महाभागं महामुणिं महायसं महावीरं ।

श्रीनन्द्य-
नुयोगद्वारा-
वश्यकानां
सूक्तानि

॥ ४ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आवश्यकसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥ ५ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

अमरनररायमहिं तित्थयरमिमस्स तित्थस्स ॥ (६०)
४ त्वद्वाक्यतोऽपि केपाश्चिदबोध इति मेऽद्भुतम् ।
भानोर्मरीचयः कस्य, नाम नालोकहेतवः ? ॥
५ न चाद्भुतमुलूकस्य, प्रकृत्या क्लिष्टचेतसः ।
स्वच्छा अपि तमस्त्वेन, भासन्ते भास्वतः कराः ॥ (६८)
६ संसारसागराओ उब्बुडो मा पुणो निवुडिज्जा ।
चरणगुणविप्पहीणो बुडुइ सुवहुं पि जाणंतो ॥ (७०)
७ उवसामं उवणीआ गुणमहया जेणचरित्तसरिसं पि ।
पडिवायंति कसाया किं पुण सेसे सरागत्ये ? ॥
८ जइ उवसंतकसाओ लहइ अणंतं पुणोऽपि पडिवायं ।
ण हु मे वीससियव्वं थेवे य(ऽवि) कसायसेसंमि ॥
९ अणथोवं वणथोवं अग्गीथोवं कसायथोवं च ।
णहु मे वीससियव्वं थेवंपि हु तं बहुं होइ ॥ (८३)
१० कस्स न होही वेसो अनब्भुवगओ अनिरुवगारी अ ।
अप्पच्छंदमईओ पडिअओ गंतुकामो अ ॥
११ विणओणएहिं कयपंजलीहिं छंदमणुअत्तमाणेहिं ।
आराहिओ गुरुजणो सुयं बहुविहं लहुं देइ ॥ (१००)

१२ अह वहुइ सो भयवं दियलोयचुओ अणोवमसिरीओ ।
देवगणसंपरिवुडो नंदाइ सुमंगला सहिओ ॥
१३ असिअसिरओ सुनयणो विवुडो धवलदंतपंतीओ ।
वरपउमगव्वगोरो फुल्लुप्पलगंधनीसासो ॥
१४ जाइस्सरो अ भयवं अप्परिवडिणहिं तिहि उ नाणेहिं ।
कंतीहि य बुद्धिहि य अब्भहिओ तेहि मणुएहिं ॥ (१२६)
१५ अमूढलक्खा तित्थयरा (१५३)
१६ दुब्भासिएण इक्केण मरीई दुक्खसायरं पत्तो ।
भमिओ कोडाकोडिं सागरसरिनामधेज्जाणं ॥
१७ तम्मूलं संसारो नीआगोत्तं च कास्ति तिवइंमि ।
अपडिक्कंतो वंसे कविलो अंतद्धिओ कहए ॥ (१७१)
१८ जस्स थ इच्छाकारो मिच्छाकारो य परिचिया दोऽवि ।
तइओ य तहक्कारो न दुल्लमा सोग्गई तस्स ॥
१९ एगग्गस्स पसंतस्स न होति इरियाइया गुणा होति ।
गंतव्वमवस्सं कारणंमि आवस्सिया होइ ॥ २६५
२० णिदाविगहापरिवज्जिएहिं गुत्तेहिं पंजलिउडेहिं ।
भत्तिवहुमाणं पुव्वं उवउत्तेहिं सुणेयव्वं ॥

आवश्यकस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥ ५ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आवश्यकसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलि
॥ ६ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

- २१ अभिकंखंतेहिं सुहासियाइं वयणाइं अत्यसाराइं ।
विभियमुहेहिं हरिसागणहिं हरिसं जणंतेहिं ॥
२२ गुरुपरिओसगणं गुरुभत्तीए तहेव विणएणं ।
इच्छियसुत्तथाणं खिणं पारं समुवयंति ॥ (२६९)
२३ माणुस्स खेत्त जाई कुलरूवाऽऽरोगमाउयं बुद्धी ।
सवणोग्गहसद्धा संजमो य लोगंमि दुलहाइं ॥
२४ इदियलद्धी निव्वत्तणा य पज्जत्ति निरुवहय खेमं ।
धायारोगं सद्धा गाहगउवओग अट्टो य ॥ (अन्यदीया.)
२५ चोलुग पासग घण्णे जूए रयणे य सुमिण चक्के य ।
चम्मजुगे परमाणू दस दिट्ठंता मणुयलंमे ॥ (३४१)
२६ जह तमिह सत्थवाहं नमइ जणो तं पुरं तु गंतुमणो ॥
परमुवगारित्तणओ निव्विग्गत्थं च भत्तीए ॥
२७ अरिहो उ नमुक्कारस्स भावओ खीणरागमयमोहो ।
मुक्खत्थीणंमि जिणो तहेव जम्हा अओ अरिहा ॥ ३८५
२८ संसाराअडवीण मिच्छत्तऽआणमोहिअपहाए ।
जेहिं कय देसिअत्तं ते अरिहंते पणिचयामि ॥
२९ सम्मदंसणदिट्ठो नाणेण य सुट्ठु तेहिं उवलद्धो ।

- चरणकरणेण पहओ निव्वाणपहो जिणिंदेहिं ॥ (३८६)
३० सिद्धिवसहिमुवगया निव्वाणसुहं च ते अणुप्पत्ता ।
सासयमव्वावाहं पत्ता अयरामरं ठाणं ॥ (३८६)
३१ पावंति जहा पारं सम्मं निज्जामया समुहस्स ।
भवजलहिस्स जिणिंदा तहेव जम्हा अओ अरिहा ॥ (३८६)
३२ मिच्छत्तकालियावायविरहिणं सम्मत्तगज्जभपवाए ।
एगसमएण पत्ता सिद्धिवसहिपट्ठणं पोया ॥
३३ निज्जामगरयणाणं अमूढनाणमइकणधारणं ।
वंदामि विणयपणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥
३४ पालंति जहा गावो गोवा अहिसावयाइदुग्गेहिं ।
पउरतणपाणिआणि अ वणाणि पावंति तह-खेव ॥
३५ जीवनिकाया गावो जं ते पालंति ते महागोवा ।
मरणाइभया उ जिणा निव्वाणवणं च पावंति ॥
३६ तो उवगारित्तणओ नमोऽरिहा भविअजीवलोगस्स ।
सव्वस्सेह जिणिंदा लोगुत्तमभावओ तह य ॥
३७ रागदोसकसाए य, इंदिआणि अ पंचवि ।
परीसहे उवसग्गे, नामयंता नमोऽरिहा ॥ (३८७)

आवश्यकस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

॥ ६ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आवश्यकसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलि

॥ ७ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धार
क
सं
शो
ध
ित
मु
नि
दी
पर
त्न
सा
ग
रे
ण
पु
नः
सं
क
लि
तः
आ
ग
मी
य-
सू
क्ता
व
लि-
आ
दि

३८ नेह लोके सुखं किञ्चिच्छादितस्याहंसा भृशम् ।
मितं च जीवितं नृणां, तेन धर्मे मर्ति कुरु ॥ (३९९)
३९ इन्द्रियविसयकसाए, परीसहे वेयणा उवस्सग्गे ।
एए अरिणो हंता अरिहंता तेण वुच्चंति ॥
४० अट्टविहंपि य कम्मं अरिभूअं होइ सव्वजीवाणं ॥
तं कम्ममरिं हंता अरिहंता तेण वुच्चंति ॥
४१ अरिहंति वंदणनमसणाइ अरिहंति पूअसक्कारं ।
सिद्धिगमणं च अरिहा अरहंता तेण वुच्चंति ॥
४२ देवासुरमणुएसुं अरिहा पूआ सुरुत्तमा जम्हा ।
अरिणो हंता रयं हंता अरिहंता तेण वुच्चंति ॥
४३ अरहंतनमुक्कारो, जीवं मोएइ भवसहस्साओ ।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहिलाभाए ॥ (४०६)
४४ अरिहंतनमुक्कारो, धन्नाण भवक्खयं कुणंताणं ।
हिअयं अणुमुअंतो विसुत्तियाचारओ होइ ॥
४५ अरहंतनमुक्कारो एवं खलु वणिणओ महत्थुत्ति ।
जो मरणमि उवग्गे, अभिक्खणं कीरण बहुसो ॥
४५ अरिहंतनमुक्कारो, सव्वपावण्णणासणो ।

मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं ॥ (४०७)
४७ उवओगदिट्ठसारा कम्मपसंगपरिघोलणविसाला ।
साहुक्कारफलवई कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ (४१६)
४८ अणुमाणहेउदिट्ठंसाहिया वयविवागपरिणामा ।
हिअनिस्सेअसफलवई, बुद्धी परिणामिआ नाम ॥ (४२७)
४९ निव्वाणसाहए जोए, जम्हा साहंति साहुणो ।
समा य सव्वभूएसु, तम्हा ते भावसाहुणो ॥ (४४९)
५० विसयसुहनियत्ताणं विसुद्धचारित्तनिअमजुत्ताणं ।
तच्चगुणसाहयाणं सदायकिच्चुज्जयाण नमो ॥
५१ असहाइ सहायत्तं करंतिमे संजमं करितस्स ।
एएण कारणेणं नमामिऽहं सव्वसाहुणं ॥ (४५०)
५२ जीवो अणाइनिहणो तच्चावणभाविओ य संसारे ।
खिणं सो भाविज्जइ, मेलणदोसाणुभावेणं ॥ (५२१)
५३ सव्वाओवि गईओ अविरहिया नोणदंसणधरेहि ।
ता मा कासि पमायं नाणेण चरित्तरहिएणं ॥ (५३२)
५४ जम्हा दंसणनाणा संपुण्णफलं न दिति पत्तेयं ।
चारित्तजुया दिति उ विसिस्सए तेण चारित्तं ॥ (५३३)

आवश्यकस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धार
क
सं
शो
ध
ित
मु
नि
दी
पर
त्न
सा
ग
रे
ण
पु
नः
सं
क
लि
तः
आ
ग
मी
य-
सू
क्ता
व
लि-
आ
दि

॥ ७ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आवश्यकसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ

॥ ८ ॥

५५ उज्जममाणस्स गुणा जहं हुंति ससत्तिओ तवसुएसुं ।
एमेव जहासत्ती संजममाणे कहां न गुणा ? ॥
५६ अणिगृहंतो विरियं न विराहेइ चरणं तवसुएसुं ।
जइ संजमेऽवि विरियं न निगूहिज्जा न हाविज्जा ॥ (५३४)
५७ सुत्तत्थवालुद्धे य असहुदव्वाइआवईओ या ।
निस्साणपयं काउं संथरमाणावि सीयंति ॥ (५३८)
५८ जे जत्थ जया जइया बहुस्सुया चरणकरणपेम्भट्टा ।
जं ते समायरंती आलंघण मंदसद्धानं ॥
५९ किइकम्मं च पसंसा सुहसीलजणम्मिं कम्मबंधाय ।
जे जे पमायटाणा ते ते उववूहिया हुति ॥ (५३९)
६० पसंते आसणत्थे य, उवसंते उवट्ठिण ।
अणुन्नचित्तु मेहावी, किइकम्मं पउज्ज ॥ (५४१)
६१ विणओवयार माणस्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स ।
तित्थयरान य आणा सुअधम्माराहणाऽकिरिया ॥
६२ विणओ सासणे मूलं, विणीओ संजओ भवे ।
विणयाउ विण्णमुक्कस्स, कओ धम्मो ? कओ तवो ? ॥
६३ जम्हा विणयइ कम्मं अट्टविहं चाउरंतमुक्खाण ।

तम्हा उ वयंति विऊ विणउत्ति विलीनसंसारा ॥ (५४५)
६४ तरियव्वा य पइणिण्या मरियव्वं वा समरे समत्थएणं ।
असरिसजणउल्लावा न हु सहियव्वा कुलपस्यएणं ॥ (५५७)
६५ जीव ! तुमे संसारं हिंडतेणं निरयतिरियगईसुं कहमवि
माणुसत्ते सम्मत्तणाणचरित्ताणि लद्धाणि, जेसिं पसाएण
सव्वलोयमाणणिज्जो पूयणिज्जो य, ता मा गव्वं काहिसि
जहाअहं बहुस्सुओ उत्तिमचरित्तो वत्ति ॥ (५६१)
६६ थोवाहारो थोवभणिओ य जो होइ थोवनिहो य ।
थोवोवहिउवगरणो तस्स हु देवावि पणमंति ॥
६७ सिद्धे नमंसिऊणं संसारत्था य जे महाविज्जा ।
वोच्छामि दंडकिरियं सव्वदिसनिवारणि विज्जं ॥
६८ सव्वं पाणइवारं पच्चक्खाई मि अलियवयणं च ।
सव्वमदत्तादाणं अब्बंभ परिग्गहं स्वाहा ॥ (५६८)
६९ पुव्वावरसंजुत्तं वेरग्गकरं सतंतमविरुद्धं ।
पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं ॥ (६२८)
७० असस्यकत्वपरीषह-सर्वपापस्थानेभ्यो विरतः प्रह-
वृतपोऽनुष्ठायी निःसंज्ञश्चाहं तथापि धर्माधर्मात्मदेव-

आवश्यकस्य
सूक्तानि

॥ ८ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आवश्यकसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावलि
॥ ९ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

नारकादिभावाच्चे अतो मृषा समस्तमेतदिति अस-
म्यक्त्वपरीषहः, तत्रैवमालोचयेत्-धर्माधर्मौ पुण्यपाप-
लक्षणौ यदि कर्मरूपौ पुद्गलात्मकौ ततस्तयोः कार्यदर्श-
नानुमानसमधिगम्यत्वम्, अथ क्षमाक्रोधादिकौ धर्मा-
धर्मौ ततः स्वानुभवत्वादात्मपरिणामरूपत्वात् प्रत्यक्ष-
विरोधः, देवास्त्वत्यन्तसुखासक्तत्वान्मनुष्यलोके कार्या-
भावात् दुष्यमानुभावाच्च न दर्शनगोचरमायान्ति, नार-
कास्तु तीव्रवेदनार्त्ताः पूर्वकृतकर्मोदयनिगडबन्धनव-
शीकृतत्वादस्वतन्त्राः कथमायान्तीति, एवमालोचय-
तोऽसम्यक्त्वपरीषहजयो भवति ॥ (६५८)

७१ जहा जलं ताइ(त) कट्टाई, उवेहाई न चिरं जले ।
घट्टियाइ इत्ति, तम्हा सहह घट्टणं ॥

७२ सुचिरं पि वंकुडाई होहिंति अणुपमज्जमाणाई ।
करमहिदारुयाई गयंकुसागारवेटाई ॥ (७२१)

७३ अङ्गुष्ठपर्वमात्रो द्वीन्द्रियाद्यात्मेति । (७३०)

७४ एमेव बलसमगो न कुणइ मायाइ सम्ममुस्सगं ।
मायावडियं कम्मं पावइ उस्सगकेसं च ॥ (७९७)

७५ मायाए उस्सगं सेसं च तवं अकुव्वओ सहुणो ।
को अन्नो अणुहोही सकम्मसेसं अणिज्जरियं ? ॥

७६ निककूडं सविसेसं वयाणुरूवं बलाणुरूवं च ।
खाणुव्व उद्धदेहो काउस्सगं तु ठाइज्जा ॥ (७९७-७९९)

७७ अन्नं इमं सरीरं अन्नो जीवुत्ति एवकयवुद्धी ।
दुक्खपरिकिलेसकरं छिंद ममत्तं सरीराओ ॥

७८ जावइया किर दुक्खा संसारे जे मए समणुभूया ।
इत्तो दुव्विरुहतरा नरएसु अणोवमा दुक्खा ॥ (८०१)

७९ पच्चक्खाणंमि कए आसवदाराई हुंति पिहियाई ।
आसववुच्छेएणं तण्हावुच्छेअणं होइ ॥

८० तण्हावोच्छेदेण य अउलोवसमो भवे मणुस्साणं ।
अउलोवसमेण पुणो पच्चक्खाणं हवइ सुद्धं ॥

८१ तत्तो चरित्तधम्मो कम्मविवेगो तओ अपुव्वं तु ।
तत्तो केवलनाणं तओ अ मुक्खो सयासुक्खो ॥ (८५१)

अथ विशेषावश्यकसूक्तानि

१ नामाइतियं दव्वट्टियस्स भावो य पज्जवनयस्स । (५०)

२ वेहण्णुरणं सहसोइयं च सिमिणो य काइयाईणि ।

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

आवश्यक-
विशेषाव-
श्यकयोः
सूक्तानि

॥ ९ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [विशेषावश्यकसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावलौ
॥१०॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

सगयाई निमित्ताई सुभासुभफलं निवेष्टि ॥ (१३८)
३ एगपएसं खेत्त सत्तपएस य से फुसणा ॥ (२४५)
४ दो वारे विजयाईसु गयस्स तिच्चञ्चुए अहव ताई ।
अइरेगं नरभविं नाणाजीवाण सव्वद्धं ॥ (२४६)
५ जं वत्थुमत्थि लोए तं सव्वं सव्वपज्जायं ॥ (२६६)
६ आसज्ज उ सामित्तं लोइय-लोउत्तरे भयणा ॥ (२८३)
७ जइ उवसंतकसाओ लहइ अणंतं पुणोवि पडिवायं
न हु मे वीससियव्वं थेवेवि कसायसेसम्मि ॥
८ अण थोवं वण थोवं अग्गी थोवं कसाय थोवं च
न हु मे वीससियव्वं थेवंपि हु तं बहु होइ ॥ (५६९)
९ दासत्तं देइ अणं अइरा मरणं वणो विसप्पतो ।
सव्वस्सदाहमग्गी दिति कसाया भवमणंतं ॥ (५७०)
१० सीसोवि पहाणयरो णेगंतेणावियारियग्गाही
११ अविगलगोविक्रयेया व जो विमइक्खमो सुगंभीरो ॥ (६१९)
१२ अविणासियसुत्तथा सीसा-यरिया विणिहिट्ठा ।
१३ संभवइ, जं अगहिउं परदोसं चिट्ठए कोइ
१४ गरुया पिच्छंति परस्स न हु दोसं । (६२०)

१५ अह देवेणं भणियं जिणिउं वेणंति रयणाई ॥ (६२०)
१६ केपाञ्चित् तीर्थिकानामयं प्रवादः 'पुण्यमेवैकमस्ति
न पापम्' । अन्ये त्वाहु-पापमेवैकमस्ति न तु पुण्यम्' ।
अपरे तु वदन्ति-उभयमप्यन्योऽन्यानुविद्धस्वरूपं
मेचकमणिकल्पं संमिश्रसुख-दुःखाख्यफलहेतुः
साधारणं पुण्यपापाख्यमेकं वस्तु' इति । अन्ये तु
प्रतिपादयन्ति स्वतन्त्रमुभयं विदित्सुख-दुःखकारणं
'होज्जत्ति' भवेदिति । अन्ये पुनराहुः- 'मूलतः कर्मैव
नास्ति स्वभावसिद्धः सर्वोऽप्ययं जगत्प्रपञ्चः । (७९२)
१७ जे जत्तिया पगारा लोए भयहेअवो अविरयाणं ।
ते चेव य विरयाणं पसत्थभावाण मोक्खाय ॥ (१०२६)
१८ अणुरत्तो भत्तिगओ असुई अणुअत्तओविसेसन्नु (१२९३)
पियधम्मो ददधम्मो संविग्गोऽवज्जऽभीरु असदो य ।
खंतो दंतो गुत्तो थिरव्वय जिइदिओ उज्जू ॥
असदो तुलासमाणो समिओ तह साहुसंगइरओ य ।
गुणसंपओववोओ जुग्गो सेसो अजुग्गो य ॥ (१२९४)
१९ नाणस्स होइ भागी थिरतरओ दंसणे चरिस्से य ।

विशेषाव-
श्यकस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

॥१०॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [विशेषावश्यक+दशवैकालिकसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥११॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
ि
तः
मु
नि
दी
प
र
त्न
सा
ग
रे
ण
पु
नः
सं
क
ल
ि
तः

- धन्ना आवकहाए गुरुकुलवासं न सुंचंति ॥ (१३०८)
२० गीयावासो रई धम्मे अणाययणवज्जणं ।
निग्गहो य कसायाणं, एयं धीराण सासणं ॥ (१३०९)
२१ किञ्चाकिच्चं गुरवो विदंति विणयपडिवत्तिहेउं च ।
उस्सासाइ पमोचुं तदणापुच्छाई पडिसिद्धं ॥
२२ विणओ सासणे मूलं, विणीओ संजओ भवे ।
विणयाउ विण्णमुक्कस्स, कओ धम्मो? कओ तवो? ॥
२३ विणओवयार माणस्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स ।
तित्थयराण य आणा सुयधम्माराहणाऽकिरिया ॥ (१३१०)

अथ दशवैकालिकसूक्तानि

- १ जयति विजितान्यतेजाः सुरासुराधीशसेदितः श्रीमान् ।
विमलखासविरहितखिलोकचिन्तामणिर्वीरः ॥ (१)
२ अन्नं पित्र से नामं कामा रोगसि पंडिया विति ।
कामे पत्थेमाणे रोगे पत्थेइ खलु जंतू ॥ (८६)
३ इंदियविसयकसाया परीसहा वेयणा य उवसग्गा ।
एए अवराहपया जत्थ विसीर्यति दुम्मेहा ॥ (८८)

अथ पिंडनिर्युक्तिसूक्तानि

- १ जयति जिनवर्धमानः परहितनिरतो विधूतकर्मरजाः ।
मुक्तिपथचरणपोषकनिरवद्याहारविधिदेशी ॥
२ अवि नाम होज्ज सुलभो गोणाईणं तणाइ आहारो ।
हिच्छिकारहयाणं न हु सुलहो होइ सुणगाणं ॥
३ केलासभयणा एए, आगया गुज्झगा महि ।
चरंति जक्खरूवेणं, पूयाऽपूया हियाऽहिया ॥ (१३१)
४ भुंजंति चित्तकम्मठिया व कारुणिय दाणरुइणो वा ।
अवि कामगद्देसुवि न नस्सई किं पुण जईसु ॥ (१३१)
५ 'लोयाणुग्गहकासि भूमीदेवेसु बहुफलं दाणं ।
अवि नाम बंभवंधुसु किं पुण छक्कम्मनिरएसु ॥
व्याख्या—पिण्डपदानादिना लोकोपकारिषु भूमिदेवेषु
ब्राह्मणेष्वपि नाम ब्रह्मबन्धुष्वपि-जातिमात्रब्राह्मणेष्वपि
दानं दीयमानं बहुफलं भवति, किं पुनर्यजनयाजनादि-
रूपपदकर्मनिरतेषु?, तेषु विशेषतो बहुफलं भविष्य-
तीति भावः ।
६ किवणेषु दुम्मणेषु य अवंधवायंकजुगियंगेसुं च ।

विशेषावश्यक-
दशवैका-
लिकपिण्ड-
निर्युक्तीनां
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
ि
तः
मु
नि
दी
प
र
त्न
सा
ग
रे
ण
पु
नः
सं
क
ल
ि
तः

॥११॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [पिंडनिर्युक्ति+उत्तराध्ययनसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥१२॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

पूयाहिज्जे लोण दाणपडागं हहइ दिंतो ॥ १३१
७ पाएण देइ लोगो उवगारिसु परिणिएसु झुल्लिए वा ।
जो पुण अद्धाखिअं अतिहिं पूएइ तं दाणं ॥ (१३१)
८ दीहरसीलं परिषालिऊण विसएसु वच्छ ! मा रमसु ।
को गोपयंमि बुद्धइ उयहिं तरिऊण वाहाहिं ? ॥ १३७
९ णउमत्थो सुयनाणी उवउत्तो उज्जुओ पयत्तेणं ।
आवन्नो पणवीसं सुयनाणपमाणओ सुद्धो ॥ (१४७)
१० ओहो सुओवउत्तो सुयनाणी जइवि मिहणइ असुद्धं ।
तं केवलीवि भुंजइ अपमाण सुयं भवे इहरा ॥ (१४७)
११ सुत्तस्स अपमाणे चरणाभावो तओ य मोक्खस्स ।
मोक्खस्सऽविय अभावे दिक्खपवित्ती निरत्था उ ॥ (१४८)
अथ उत्तराध्ययनसूक्तानि
१ कचित् सौत्र्या शैल्या कचिदधिकृतप्राकृतभुवा, कचि-
च्चार्थापत्त्या कचिदपि समारोपविधिना । कचिच्चार्था-
हारात् कचिदविकलप्रक्रमबलादियं व्याख्या ज्ञेया कचि-
दपि तथाऽऽस्त्रायवशातः ॥ (७१)

२ भयवंपि थूलभट्टो तिकखे चंक्रमिओ न उण लिओ ।
अग्गिसिहाए बुत्थो चाउम्मासे न उण दड्ढो ॥ (१०४)
३ माणुस्सं धम्मसुई सद्धा तव संजममि विरिअं च ।
एए भावंगा खलु दुल्लभगा हुंति संसारे ॥ (१४४)
४ माणुस्स खित्त जाई कुल रुवाऽऽरोग आउयं बुद्धी ।
सवणुग्गह सद्धा संजमो अलोगमि दुलहाइं ॥ (१४५)
५ चुल्लग पासग धन्ने जूए रयणे अ सुणिण चक्के य ।
चम्मजुगे परमाणू दस दिट्ठता मणुअलंसे ॥ (१४५)
६ आलस्स मोहऽवन्ना थंभा कोहा पमाय किविणत्ता ।
भय सोगा अन्नाणा वक्खेव कुज्जहला रमणा ॥
एएहिं कारणेहिं लद्धूण सुदुल्लहंमि माणुस्सं ।
न लहइ सुइं हिअकरिं संसारुत्तारिणिं जीवो ॥ (१५१)
७ मिच्छादिट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं न सहहइ ।
सहहइ असम्भावं उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं ॥ (१५१)
८ सम्मदिट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं तु सहहइ ।
सहहइ असम्भावं अणभोगा गुरुनिओगा वा ॥ (१५१)
९ खित्तं वत्थु हिरण्णं च, पसवो दास पोरुसं ।

पिण्डर्युक्त्यु-
त्तराध्यय-
नयोः
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥१२॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [उत्तराध्ययनसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलि
॥१३॥

चत्तारि कामखंधाणि, तत्थ से उववज्जइ ॥
१० मित्तवं नाह्वं होइ, उच्चागोत्ते य वण्णवं ।
अप्पायंके महापन्ने, अभिजायजसोवले ॥ (१८७)
११ मुक्खमग्गं पव्वेसु, साहसु बंभयारिसु ।
अहिअत्थं निवारितो, न दोसं वत्तुमरिहसि ॥ (३००)
१२ एकोऽहं न च मे कश्चिन्नाहमन्यस्य कस्यचित् ।
न तं पश्यामि यस्याहं, नासौ हृदयोऽस्ति यो मम ॥ (३०७)
१३ यद्धं मुभे महति पक्षिगणा विचित्राः, कृत्वाऽऽश्रयं
हि निशि यान्ति पुनः प्रभाते । तद्वज्जगत्यसकृदेव कुटुम्ब-
जीवाः, सर्वे समेत्य पुनरेव दिशो भजन्ते ॥
१४ आत्मार्यं सीदमानं स्वजनपरिजनो रौति हाहारवार्त्ता,
भार्या चात्मोपभोगं गृहविभवसुखं स्वं च यस्याश्च कार्यम् ।
क्रन्दत्यन्योऽन्यमन्यस्त्विह हि बहुजनो लोकयात्रा निमित्तं,
यो वाऽन्यस्तत्र किञ्चिन्मृगयति हि गुणं रोदितिष्टः स
तस्मै ॥ (३०९)
१५ एकोऽहं न च मे कश्चित्, स्वपरो वाऽपि विद्यते ।
यदेको जायते जन्तुर्भियतेऽप्येक एव हि ॥ (३५०)

१६ अहे वयइ कोहेणं, माणेणं अहमा गई ।
माया गइपडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं (३१८)
१७ एवं खलु जाया ! णिग्गंथे पावयणे सच्चै अनुत्तरे केव-
लिए एवं जहा पडिक्कमणे जाव सव्वदुक्खाण अंतं करेति,
किंतु अहीव एगंतदिट्ठीए खुरो इव एगंतधाराए लोहमया वा
जवा चावेयव्वा वालुयाकवले इव निस्साए० । (३२८)
१८ धण्णे सि तुमं देवाणुप्पिया ! एवं सपुण्णोऽसि णं, कयत्थे,
कयलक्खणे, सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए
जम्मे जीवियफले । (३२९)
१९ तए णं से अधारणिज्जमितिकट्टु करयलपरिग्गहियं जाव
अंजलिं कट्टु णमोऽत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव संप-
त्ताणं, नमोऽत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं
धम्मोवएसयाणं पुब्बिपि य णं मए थेराणं अंतिते सव्वे
पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव सव्वे अकर-
णिज्जे जोगे पच्चक्खाए, इयाणिपि तेसिं चेव णं भगवंताणं
अंतिते जाव सव्वं पाणातिवायं जाव सव्वं अकरणिज्जं

उत्तराध्यय-
नस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥१३॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [उत्तराध्ययनसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावलौ
॥१४॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

जोगं पञ्चकखामि, जंपिय मे इमं सरीरगं जाव पयंपि
चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामिप्ति । (३३१)
२० दुलहे खलु माणुसे भवे; चिरकालेणवि सव्वपाणिणं ।
गाढा य विवागकम्मुणो, समयं गोयम मा पमायण ॥ (३३५)
२१ भवसिद्धिया उ जीवा सम्महिट्टी उ जं अहिज्जति ।
तं सम्मसुणण सुयं कम्मद्विहस्स सोहिकरं ॥
२२ मिच्छहिट्टी जीवा अभव्वसिद्धी य जं अहिज्जति ।
तं मिच्छसुणण सुयं कम्मादाणं च तं भणियं ॥ (३४३)
२३ अह चोदसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणो उ संजए ।
अविणीए वुच्चती सो उ, णिव्वाणं च ण गच्छइ ॥ (३४५)
२४ अह पन्नरसहिं ठाणेहिं, सुविणीएत्ति वुच्चइ ।
नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ॥ ०
२५ भट्टण्णेव होअवं, पावइ भट्टाणि भट्टओ ।
सविसो हम्मए सण्णो, भेरुंडो तत्थ मुच्चइ ॥ ३५४
२६ सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं विडंवणा ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥
२७ बालाभिरामेसु दुहावहेसु, न तं सुहं कामगुणेसु रायं !

विरत्तकामाणं तवोधणाणं, जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं (३८६)
२८ जाणमाणोऽवि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ॥ (३९०)
२९ सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वंपि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तव ॥ (४०८)
३० देवदानवगंधव्वा, जक्खरक्खसक्किन्नरा ।
बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति तं ॥ (४३०)
३१ नाणी संजमसहिओ नायव्वो भावओ समणो । (४३१)
३२ अभयं तुज्झ नरवट्टे ! जलवुव्वुअसंनिमे अ माणुस्से ।
किं हिंसाइ पसज्जसि जाणंतो अप्पणो दुक्खं ? (४४१)
३३ सव्वमिणं चइऊणं अवसस्स जया य होइ गंतव्वं ।
किं भोगेसु पसज्जसि ? किंपागफलोवमनिमेसुं ॥ (४४२)
३४ अम्मताय ! मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा ।
पच्छा कट्टयविवागा, अणुबंधदुहावहा ॥
३५ इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं ।
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥
३६ असासए सरीरंमि, रइ नोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणवुव्वुयसंनिमे ॥ (४५३)

श्री
आ
ग
मो
द्धार
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

उत्तराध्यय-
नस्य
सूक्तानि

॥१४॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [उत्तराध्ययनसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥१५॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

३७ माणुसत्ते असारंमि, वाहीरोगाण आलए ।
जरामरणघर्थंमि, खणंमि न रमामहं ॥
३८ जम्म दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो ॥
३९ खित्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बंधवा ।
चइत्ताण इमं देहं, गंतव्वमवसस्स मे ॥
४० जह किंपागफलाणं, परिणामो न सुंदरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ॥ (४५४)
४१ तं वित्तं ऽम्मापियरो, एवमेयं जहाफुडं ।
इहलोगे निप्पिवासस्स, नत्थि किंचिवि दुक्करं ॥
४२ सारीरमाणसा चेव, वैयणा उ अणंतसो ।
मए सोढाओ [इं] भीमाओ [इं], असइं दुक्खभयाणि य ॥
४३ जरामरणकंतारे, चाउरंते भयागरे ।
मया सोढाणि भंसाइ, जम्माइ मरणाणि य ॥ (४५८)
४४ सो वित्तं ऽम्मापियरो! एवमेयं जहाफुडं ।
परिकम्मं को कुणई, अरत्ते मिगपक्खिणं? ॥
४५ एगव्वभूओ अरत्ते वा, जहा ऊ चरई मिगो ।

एव धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥
४६ जया मिगस्स आयंको महारणंमि जायई ।
अच्छंतं रुक्खमूलंमि, को णं ताहे चिगिच्छई? ॥
४७ को वा से ओसहं देइ, को वा से पुच्छई सुहं ।
को से भत्तं व पाणं वा, आहरित्तु पणामई? ॥
४८ जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोअरं ।
भत्तपाणस्स अट्टाए, वल्लराणि सराणि य ॥
४९ खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य ।
मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छई मिगचारियं ॥
५० एवं समुट्ठिए भिक्ख, एवमेव अणेगए ।
मिगचारियं चरित्ताणं, उहं पक्कमई दिसं ॥
५१ जहा मिए एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोअरे अ । एवं
मुणी गोयरियं पविट्ठे, नो हीलए नोवि य खिसइज्जा ॥ (४६२)
५२ सीहत्ता निक्खमिउं सीहत्ता चेव विहरसु पुत्ता! ।
जह नवरि धम्मकामा विरत्तकामा उ विहरंति ॥
५३ नाणेण दंसणेण य चरित्ततवनियमसंजमगुणेहिं ।
खंतीए मुत्तीए होहि तुमं वइमाणो उ (४६४)

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

उत्तराध्यय-
नस्य
सूक्तानि

॥१५॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [उत्तराध्ययनसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥१६॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

५४ पंचमहव्ययुक्तो पंचसमिधो तिगुत्तिगुत्तो अ ।
सच्चिन्मंतरबाहिरिण, तद्योक्त्तमंमि उज्जुओ ॥
निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो ।
समो अ सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु अ ॥
लाभालामे सुहे दुक्खे, जीविण मरणे तहा ।
समो निंदापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥
गारवेषु कसाएसु, वंडसल्लभएसु अ ।
नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अबंधणो ॥
अणिस्सिओ इहं लोण, परलोण अणिस्सिओ ।
वासीचंदणकप्पो अ, असणे अणसणे तहा ॥
अप्पसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवो ।
अज्झप्पज्ञाणजोगेहिं, पसत्थदमसासणो ॥ (४६४)
५५ अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥
५६ अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥ (४७६)
५७ विसं तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।

एसेव धम्मो विसंओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो (४७७)
५८ दंसमसगसामाणां जलूयकविच्छुयसमा य जे हुंति ।
ते किर होंति खलुंका तिकवमिउचंडमद्विया ॥
५९ जे किर गुरुपडिणीआ सबला असमाहिकारगा पावा ।
अहिगरणकारगप्पा जिणवयणे ते किर खलुंका ॥
६० पिसुणा परोयतावी भिन्नरहस्सा परं परिभवति ।
निव्विअणिज्जा य सदा जिणवयणे ते किर खलुंका ॥ (५४९)
६१ नाणेण जाणाई भावे, संमत्तेण य सहहे ।
चरित्तेण निगिणहाइ, तवेण परिसुज्झई ॥ (५६९)
६२ आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
निकेयमिच्छिज्ज विवेगजोगं, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥
६३ तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झायपंगंतनिसेवणा य, सुत्तत्थसंचित्तणया धिई य ॥ (६२२)
६४ जहा य अंडप्पभवा बलागा, अंडं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हं, मोहं च तण्हाययणं वयंति ॥
६५ रागो य दोसोविय कम्मवीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयंति ।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाईमरणं वयंति ॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

उत्तराध्यय-
नस्य
सूक्तानि

॥१६॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [उत्तराध्ययनसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥१७॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

६६ दुःखं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा । तण्हा हया जस्स न होइ लोभो, लोभो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ (६२३)
६७ रसा पगामं न हु सेवियव्वा, पायं रसा दिक्किरा नराणं । दिक्कं च कामा समभिद्वंति, दुमं जहा साउफलं च पक्खी ॥
६८ जहा दवग्गी पउरिधेणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ । एविदियग्गीवि पगामभोइणो, न बंभयारिस्स हियाय कस्सइ ॥
६९ विवित्तसिज्जाऽऽसणजंतिंयाणं, ओमासणाणं दमिइंदियाणं । न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥
७० जहा विरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसहीपसत्था । एमेव इत्थीनिलयस्स मज्जे, न बंभयारिस्स खमो निवासो ॥
७१ न रुवलावण्णविलासहासं, न जंपिअं इगिय पेहियं वा । इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, ददुं वयस्से समणे तवस्सी ॥
७२ अदंसणं चेव अपत्थणं च, अचित्तणं चेव अकित्तणं च ।

इत्थीजणस्सारियझाणजुग्गं, हियं सया बंभवए रयाणं ॥
७३ कामं तु देवीहिं विभूसियाहिं, न चाइया खोभइउं तिगुत्ता । तहावि एगंतहियंति नच्चा, विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥
७४ मुख्वाभिकिस्सवि माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे । नेयारिस्सं दुत्तरमत्थि लोए, जहत्थिओ वालमणोहराओ ॥
७५ एए य संग्गा समइकमित्ता, सुहुत्तरा खेव हवंति सेसा । जहा महासागरमुत्तरित्ता, नईं भवे अवि गंगासमाणा ॥
७६ कामाणुगिद्धिण्णभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स । जं काइयं माणसियं च किच्चि, तस्संतयं गच्छइ वीयरगो ॥
७७ जहा य किपागफला मणोरमा, रसेण वज्जेण य भुज्जमाणा । ते खुदए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे (६२५)
७८ न कामभोगा समयं उवित्ति, न यावि भोगा विगइं उवित्ति । जे तण्णओसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥ (६३५)
७९ अच्चणं रयणं चेव, वंदणं पूअणं तहा । इहीसक्कारस्समाणं, मणसावि न पत्थए ॥ (६६९)

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

उत्तराध्यय-
नस्य
सूक्तानि

॥१७॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [उत्तराध्ययन+आचारांगसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावलौ
॥१८॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

- ८० जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं जे करेति भावेण ।
अमला असंकलिद्धा ते हुंति पस्सितसंसारी ॥
८१ बालमरणाणि बहुसो अकाममरणाणि चेव बहुयाणि ।
भरिहंति ते वराया जिणवयणं जे न याणंति ॥ (७०८)

अथाचारांगसूक्तानि

- १ एकं हि चक्षुरमलं सहजो विवेकस्तद्विभरेव सह
संवसतिद्वितीयम् । एतद् द्वयं भुवि न यस्य स तत्त्वतो-
ऽन्धस्तस्यापमार्गचलने खलु कोऽपराधः ? ॥ (४१-११९)
२ विजिओ कसायलोगो सेयं खु तओ नियत्तिउं होइ ।
कामनियत्तमई खलु संसारा मुच्चई खिप्पं ॥ (८४)
३ पंचसु कामगुणेषु य सहप्परिसरसरूवगंधेषु ।
जस्स कसाया वट्ठंति मूलद्वुणं तु संसारे ॥ (८९)
४ दृश्यं वस्तु परं न पश्यति जगत्यन्धः पुरोऽवस्थितं,
रागान्धस्तु यदस्ति तत्परिहरन् यन्नास्ति तत् पश्यति ।
कुन्देन्दीवरपूर्णेचन्द्रकलशश्रीमल्लतापल्लवानारोप्याशुचि-
राशिषु प्रियतमागात्रेषु यन्मोदते ॥

- ५ जह सव्वपायवाणं भूमीं पइट्ठियाइं मूलाइं ।
इय कम्मपायवाणं संसारपइट्ठिया मूला ॥
६ अट्टविहकम्मरुक्खा सव्वे ते मोहणिज्जमूलागा ।
कामगुणमूलगं वा तम्मूलगं च संसारो ॥ (९०)
७ संसारस्स उ मूलं कम्मं तस्सवि हुंति य कसाया । (९१)
८ पुत्रा मे भ्राता मे स्वजना मे गृहकलत्रवर्गो मे ।
इति कृतमेमेशब्दं पशुमिव मृत्युर्जनं हरति ॥
९ पुत्रकलत्रपरिग्रहममत्वदोषैर्नरो व्रजति नाशम् ।
कृमिक इव कोशकारः परिग्रहाद्दुःखमाप्नोति ॥
१० संसारं छेत्तुमणो कम्मं उम्मूलणं तदद्वुणं ।
उम्मूलिज्ज कसाया तम्हा उ चइज्ज सयणाई ॥
११ माया मेत्ति पिया मे भगिणी भाया य पुत्तदारा मे ।
अत्थमि चेव गिद्धा जम्मणमरणाणि पावन्ति ॥ (१०१)
१२ स्वतोऽन्यत इतस्ततोऽभिमुखधावमानापदामहो निपुणता
नृणां क्षणमपीह यज्जीव्यते । मुखे फलमतिश्रुधा सर-
समल्यमायोजितं, कियच्चिरमचरितं दशनसङ्कटे स्थास्यति ॥
१३ उच्छ्वासावधयः प्राणाः, स चोच्छ्वासः समीरणः ।

उत्तराध्यय
नाचारां-
गयोः
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥१८॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आचारांगसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥१९॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
ित
मु
नि
दी
पर
त्न
सा
ग
रे
ण
पु
नः
सं
क
लि
तः
आ
ग
मी
य
सू
क्ता
व
लि
आ
दि

समीरणाच्चवलं नान्यत्, क्षणमप्यायुरद्भुतम् ॥ (१०३)
१४ गात्रं सङ्कुचितं गतिर्विगलिता दन्ताश्च नाशं गताः, दृष्टिभ्रं-
श्यति रूपस्यैव हसते वक्त्रं च लालायते । वाक्यं नैव करोति
बान्धवजनः पत्नी न शुश्रूषते, धिक्कष्टं जरयाऽभिभूतपुरुषं
पुत्रोऽप्यवज्ञायते ॥ (१०६)
१५ न विभूषणमस्य युज्यते, न च हास्यं कुत एव विभ्रमः ? ।
अथ तेषु च वर्त्तते जनो, भ्रवमायाति परां विडम्बनाम् ॥
१६ जं जं करेह तं तं न सोहृणं जोव्वणे अतिक्रंते ।
पुरिसस्स महिलिया इव एकं धम्मं पमुत्तुणं ॥
१७ सम्प्राप्य मानुषत्वं संसारासारतां च विज्ञाय ।
हे जीव ! किं प्रमादाच्च चेष्टसे शान्तये सततम् ॥
१८ ननु पुनरिदमतिदुर्लभमगाधसंसारजलधिविभ्रष्टम् ।
मानुष्यं खद्योतकतडिल्लताविलसितप्रतिमम् ॥
१९ नहिवेगसमं चवलं च जीवियं जोव्वणं च कुसुमसमं ।
सोक्खं च जं अणिच्चं तिण्णिवि तुरमाणभोज्जाहं ॥ (१०७)
२० सह कलेवर ! दुःखमन्विन्तयन्, स्ववशता हि पुनस्त-
व दुर्लभा । बहुतरं च सहिष्यसि जीव हे !, परवशो न

च तत्र गुणोऽस्ति ते ॥ (१०९)
२१ तज्ज्ञानमेव न भवति यस्मिन्नुदिते विभाति रागगणः ।
तमसः कुतोऽस्ति शक्तिर्दिनकरकिरणाग्रतः स्थातुम् ॥
२२ अज्ञानान्धाश्चटुलवनितापाङ्गविक्षेपितास्ते, कामे सक्तिं
दधति विभवाभोगतुङ्गाजने वा । विद्वच्चित्तं भवति
हि महन् मोक्षमार्गैकतानं, नाल्पस्कन्धे विटपिनि कष-
त्यंशमिति गजेन्द्रः ॥ (११२)
२३ अज्ञानं खलु कष्टं क्रोधादिभ्योऽपि सर्वपापेभ्यः ।
अर्थं हितमहितं वा न वेत्ति येनावृतो लोकः ॥
२४ स्वेच्छाविरचितशास्त्रैः प्रव्रज्यावेषधारिभिः क्षुद्रैः ।
नानाविधैरुपायैरनाथवन्मुष्यते लोकः ॥
२५ इन्द्रियाणि न गुप्तानि, लालितानि न चेच्छया ।
मानुष्यं दुर्लभं प्राप्य, न युक्तं नापि शोषितम् ॥ (११३)
२६ धावेह रोहणं तरह सायरं भमह गिरिणिगुंजेसुं ।
मारेह बंधवंपि हु पुरिसो जो होह धणलुद्धो ॥
२७ अडह वहुं वहह भरं सहह लुहं पावमायरह धिट्ठो ।
कुलसीलजाइपच्चयधिइं च लोभदुओ चयइ ॥ (११४)

आचारांगस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
ित
मु
नि
दी
पर
त्न
सा
ग
रे
ण
पु
नः
सं
क
लि
तः
आ
ग
मी
य
सू
क्ता
व
लि
आ
दि

॥१९॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आचारांगसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥२०॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

२८ तिथिपूर्वोत्सवाः सर्वे, त्यक्ता येन महात्मना ।
अतिथिं तं विजानीयाच्छेषमभ्यागतं विदुः ॥
२९ आराध्य भूपतिमवाप्य ततो धनानि, भोक्ष्यामहे किल
वयं सततं सुखानि । इत्याशया धनविमोहितमानसानां,
कालः प्रयाति मरणावधिरेव पुंसाम् ॥
३० एहि गच्छ पतोत्तिष्ठ, वद मौनं समाचार ।
इत्याद्याशाग्रहग्रस्तैः, क्रीडन्ति धनिनोऽधिभिः ॥ (११५)
३१ सर्वसुखान्यपि बहुशः प्राप्तान्यटता मयाऽत्र संसारे ।
उच्चैः स्थानानि तथा तेन न मे विस्मयस्तेषु ॥
३२ जइ सोऽवि निज्जरमओ पडिसिद्धो अट्टमाणमहणेहिं ।
अवसेस मयट्ठाणा परिहरिअव्वा पयत्तेणं ॥
३३ अवमानात्परिभ्रंशाद्वधबन्धधनक्षयात् ।
प्राप्ता रोगाश्च शोकाश्च, जात्यन्तरशतेष्वपि ॥
३४ संते य अविमहइउं असोइउं पंडिण य असंते ।
सक्का हु दुमोवमिअं हिअएण हिअं धरंतेण ॥
३५ होऊण चक्रवट्टी पुहइवई विमलपंडरच्छत्तो ।
सो चेव नाम भुज्जो अणाहसालालओ होइ ॥ (११८)

३६ जीवन्नेव मृतोऽन्धो यस्मात्सर्वक्रियासु परतन्त्रः ।
नित्यास्तमितदिवाकरस्तमोऽन्धकारार्णवनिमग्नः ॥
३७ लोकद्वयव्यसनवह्निविदीपिताङ्गमन्धं समीक्ष्य कृपणं
पर्यष्टिनेयम् । को नोद्विजेत भयकृज्जननादिवोग्रात्,
कृष्णाहिनैकनिचितादिव चान्धगर्त्तात् ॥ (१२०)
३८ धर्मश्रुतिश्रवणमङ्गलवर्जितो हि, लोकश्रुतिश्रवणसंव्यव-
हारबाह्यः । किं जीवतीह बधिरो भुवि यस्य शब्दाः,
स्वप्नोपलब्धधननिष्फलतां प्रयान्ति ॥
३९ स्वकलत्रबालपुत्रकमधुरवचःश्रवणबाह्यकरणस्य ।
बधिरस्य जीवितं किं जीवन्मृतकाकृतिधरस्य ॥
४० दुःखकरमकीर्तिकरं मूकत्वं सर्वलोकपरिभूतम् ।
प्रत्यादेशं मूढाः कर्मकृतं किं न पश्यन्ति ॥
४१ काणो निमग्नविषमोन्नतदृष्टिरेकः, दाक्को विरागजनने
जननातुराणाम् । यो नैव कस्यचिदुपैति मनःप्रियत्व-
मालेख्यकर्मलिखितोऽपि किमु स्वरूपः ॥ (१२०)
४२ दाराः परिभवकारा बन्धुजनो बन्धनं विषं विषयाः ।
कोऽयं जनस्य मोहो? ये रिपवस्तेषु सुहृदाशा ॥

आचारांगस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥२०॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आचारांगसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलि

॥२१॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

४३ इणमेव नावकं वंति, जे जणा धुवचारिणो । जाई-
मरणं परिस्त्राय, चरे संकमणे ददे ॥ नत्थि कालस्स
णागमो, सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया दुक्खपडि-
कूला अप्पियवहा पियजीविणो जीविउकामा, सव्वेसिं
जावियं पियं, तं परिगिज्झ दुपयं चउपयं अभिजुजिया
णं संसिचिया णं तिविहेण जाऽवि से तत्थ मत्ता
भवइ अप्पा वा बहुया वा से तत्थ गड्डिण चिट्ठइ
भोअणाए, तओ स एगया विविहं परिसिट्ठं संभूयं
महोवगरणं भवइ, तंसे एगया दायाया वा विभ-
यंति, अदत्तहारो वा से अवहरंति, रायाणो वा से
विलंपंति, नस्सइ वा से विणस्सइ वा से, अगार-
दाहेण वा से डज्झइ, इय से परस्सऽट्ठाए कूराइं
कम्माइं बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण संमूढे विप्प-
रियासमुवेइ, मुणिणा हु एयं पदेइयं, अणोहतरा एए
नो य ओहं तरित्तए, अतीरंगमा एए नो य तीरं गमित्तए,
अपारंगमा एए नो य पारं गमित्तए, आयाणिज्जं च
आयाय तंमि ठाणे न चिट्ठइ, वितहं पण्णऽखेयन्ने तंमि

ठाणांमि चिट्ठइ ।

(१२१)

४४ सन्दिग्धेऽपि परे लोके, त्याज्यमेवाशुभं बुधैः ।
यदि नास्ति ततः किं स्यादस्ति चेन्नास्तिको हतः ॥
४५ शिशुमशिशुं कठोरमकठोरमपण्डितमपि च पण्डितं,
धीरमधीरं मानिनममानिनमपगुणमपि च बहुगुणम् ।
यतिमयतिं प्रकाशमवलीनमचेतनमथ सचेतनं, निशिदिश-
सेऽपि सान्ध्यसमयेऽपि विनश्य(नाशय)ति कोऽपि कथमपि ॥
४६ रमइ विहवी विसेसे ठितिमित्तं श्रेववित्थरो महई ।
मग्गइ सरीरमहणो रोगी जीए च्छिय कयत्थो ॥ (१२२)
४७ कुमिकुलचित्तं लालाक्किन्नं विगन्धि जुगुप्सितं, निरु-
पमरसप्रीत्या खादन्नरास्थिनिरामिषम् । सुरपति-
मपि श्वा पार्श्वस्थं सशङ्कितमीक्षते, न हि गणयति
क्षुद्रो लोकः परिग्रहफल्युताम् ॥
४८ रागद्वेषाभिभूतत्वात्कार्याकार्यपराङ्मुखः ।
एष मूढ इति ज्ञेयो, विपरीतविधायकः ॥ (१२३)
४९ उतो यः स्वत एव मोहसलिलो जन्माऽऽलवालोऽशुभो,
रागद्वेषकपायसन्ततिमहाभिर्विघ्नबीजस्त्वया । रोगैरङ्कु-

आचारांगस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥२१॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आचारांगसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावलौ
॥२२॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

रितो विपत्कुसुमितः कर्मद्रुमः साम्प्रतं, सोढा नो यदि
सम्यगेष फलितो दुःखैरधोगामिभिः ॥
५० पुनरपि सहनीयो दुःखपाकस्त्वयाऽयं, न खलु भवति
नाशः कर्मणां संचितानाम् । इति सह गणयित्वा
यद्यदायाति सम्यग्, सदसदिति विवेकोऽन्यत्र भूयः
कुतस्त्यः ? ॥ (१२६)
५१ यल्लोके व्रीहियवं, हिरण्यं पशवः स्त्रियः ।
नालमेकस्य तत्सर्वमिति मत्वा शमं कुरु ॥
५२ उपभोगोपायपरो वाञ्छति यः शमयितुं विषयतृष्णाम् ।
धावत्याक्रमितुमसौ पुरोऽपराणहे निजच्छायाम् ॥ (१२८)
५३ जरामरणदौर्गत्यव्याधयस्तावदासताम् ।
मन्ये जन्मैव धीरस्य भूयो भूयस्त्रपाकरम् ॥ (१३२)
५४ लभ्यते लभ्यते साधुः, साधुरेव न लभ्यते ।
अलब्धे तपसो वृद्धिर्लब्धे तु प्राणधारम् ॥ (१३४)
५५ लज्जां गुणौघजननीं जननीमिवार्यामत्यन्तशुद्धहृदया-
मनुवर्त्तमानाः । तेजस्विनः सुखमसूनपि सन्त्यजन्ति,
सत्यस्थितिव्यसनिनो न पुनः प्रतिज्ञाम् ॥ (१३५)

५६ मसद्विरुहिरणहारुवणद्वकलमलयमेयमज्जासु ।
पुण्णंमि चम्मकोसे दुग्धे असुइवीभच्छे ॥
५७ संचारिमजंतगलंतवच्चमुत्तंतसेअपुण्णंमि ।
देहे हुज्जा किं रागकारणं असुइहेउम्मि ? ॥ (१३७)
५८ दुःखार्त्तः सेवते कामान्, सेवितास्ते च दुःखदाः ।
यदि ते न प्रियं दुःखं, प्रसङ्गास्तेषु न क्षमः ॥ (१३९)
५९ दुःखद्विद सुखलिप्सुमोहान्धत्वाददृष्टगुणदोषः ।
यां यां करोति चेष्टां तथा तथा दुःखमादत्ते ॥ (१४१)
६० विभवइति किं मदस्ते ? च्युतविभवः किं विषादमुपयासि ? ।
करनिहितकन्दुकसमाः पातोत्पाता मनुष्याणाम् ॥ (१४३)
६१ शिवमस्तु कुशास्त्राणां वैशेषिकपश्चितन्त्रवौद्धानाम् ।
येषां दुर्विहितत्वाद् भगवत्यनुरज्यते चेतः ॥ (१४५)
६२ सीउण्हफाससुहदुहपरीसहकसायवेयसोयसहो ।
हुज्जा समणो सया उज्जुओ य तवसंजमोवसमे ॥ (१५१)
६३ नातः परमहं मन्ये, जगतो दुःखकारणम् ।
यथाऽज्ञानमहारेगो, दुरन्तः सर्वदेहिनाम् ॥ (१५२)
६४ रक्तः शब्दे हरिणः स्पर्शो नागो रसे च वारिचरः ।

आचारांगस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥२२॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आचारांगसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥२३॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

कृपणपतङ्गो रूपे भुजगो गन्धे ननु विनष्टः ॥
पञ्चसु रक्ताः पञ्च विनष्टा यत्रागृहीतपरमार्थः ।
एकः पञ्चसु रक्तः प्रयाति भस्मान्तताम्रबुधः ॥ (१५३)
६५ रागद्वेषवशाविद्धं, मिथ्यादर्शनदुस्तरम् ।
जन्मावर्ते जगत् क्षिप्तं, प्रमादाद् भ्राम्यते भृशम् ॥ (१५४)
६६ यथेष्टविषयाः सातमनिष्टा इतरत्तव ।
अन्यत्रापि विदित्वैवं न कुर्यादप्रियं जने ॥ (१५९)
६७ कुणमाणोऽपि निवृत्तिं परिच्यंतोऽपि सयणधनभोण ।
दितोऽपि दुहस्स उरं मिच्छदिष्टी न सिज्झइ उ ॥
६८ सम्मत्तुपत्ती सावणं य विरणं अणंतकम्भंसे ।
दंसणमोहक्खणं उवसामन्ते य उवसंते ॥
खवणं य खीणमोहे जिणे अं सेही भवे असंखिज्जा ।
तव्विवरीथो कालो संखिज्जगुणाइ सेहीए ॥ (१७७)
६९ आहारउवहिपूआइहीसु य गारवेसु कइतवियं ।
एमेव वारसविहे तवमि न हु कइतवे समणो ॥ (१७८)
७० वदति यदीह कश्चिदनुसंततसुखपरिभोगलालितः ।
प्रयत्नशतपरोऽपि विगतव्यथमायुरवाप्तवान्नरः ।

न खलु नरः सुरौघसिद्धासुरकिन्नरनायकोऽपि य । सोऽपिः
कृतान्तदन्तकुलिशाक्रमेण कृशितो न नश्यति ॥ (१८३)
नश्यति नौति याति वितनोति करोति रसायनक्रियाम्,
चरति गुरुव्रतानि विवराण्यपि विशति विशेषकातरः ।
तपति तपांसि खादति मितानि करोति च मन्त्रसाधनं,
तदपि कृतान्तदन्तयन्त्रकचक्रमणैर्विदार्यते ॥ (१८४)
७१ संसार एवायमनर्थसारः कः कस्य कोऽत्र स्वजनः परो
वा ? । सर्वे भ्रमन्तः स्वजनाः परे च, भवन्ति भूत्वा न
भवन्ति भूयः ॥
विचिन्त्यमेतद् भवताऽहमेको, न मेऽस्ति कश्चित् पुरतो
न पश्चात् । स्वकर्मभिर्भ्रान्तिरियं ममैव, अहं पुर-
स्तादहमेव पश्चात् ॥
सदैकोऽहं न मे कश्चित्, नाहमन्यस्य कस्यचित् ।
न तं पश्यामि यस्याहं, नासौ भावीति यो मम ॥
एकः प्रकुरुते कर्म, भुनक्त्येकश्च तत्फलम् ।
जायते म्रियते चैक, एको याति भवान्तरम् ॥ (१९१)
७२ क्षितितुलशयनं वा प्रान्तभ्रैक्षाशनं वा, सहजपरिभवो

आचारांगस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥२३॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आचारांगसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥२४॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

वा मीचदुर्भाषितं वा । महति फलविशेषे नित्यमभ्यु-
द्यतानां, न मनसि न शरीरे दुःखमुत्पादयन्ति ॥
७३ तणसंथारनिसण्णोऽवि मुणिवरो भट्टरागमयमोहो ।
जं पावइ मुत्तिसुहं तं कत्तो चक्कवट्टीवि ? ॥
७४ लोगंमि कुसमणसु य कामपरिग्गहकुमग्गलग्गोसुं ।
सारो हु नाणदंसणतवचरणगुणा हियट्ठाण । (१९७)
७५ लोगस्स सार धम्मो धम्मंमि य नाणसारियं चित्ति ।
नाणं संजमसारं संजमसारं च निव्वाणं ॥ (१९८)
७६ पावोवरण अपरिग्गहे अ गुरुकुलनिसेवण जुत्ते ।
उम्मग्गवज्जण रागदोसविरण य से दिहरे ॥ (२०३)
७७ सुकृतपरिणतानां दुर्नयानां विपाकः, पुनरपि सह-
नीयोऽन्यत्र ते निर्गुणस्य । स्वयमनुभवतोऽसौ दुःखमो-
क्षाय सद्यो, भवशतगतिहेतुर्जायतेऽनिच्छतस्ते ॥ (२०६)
७८ जो चंदणेण वाहुं आलिपइ वासिणा व तच्छेति ।
संथुणइ जो अ णिंदति महेसिणो तत्थ समभावा ॥ (२०९)
७९ सन्मागं तावदास्ते प्रभवति पुरुषस्तावदेवेन्द्रियाणां,
लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालम्बते तावदेव ।

भूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथजुषो नीलपक्षमाण एते, याव-
ल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुषो दृष्टिबाणाः पतन्ति ॥ (२१९)
८० किमिदमचिन्तितमसदृशमनिष्टमतिकष्टमनुपमं दुःखम् ।
सहसैवोपनतं मे नैरयिकस्येव सत्त्वस्य ? ॥ (२३४)
८१ श्रवणलवनं नेत्रोद्धारं करक्रमपाटनं, हृदयदहनं नासा-
च्छदं प्रतिक्षणदारुणम् । कटविदहनं तीक्ष्णापातत्रिशूलवि-
भेदनं, दहनवदनैः कङ्कधोरैः समन्तविभक्षणम् ॥
तीक्ष्णैरसिभिर्दंसैः कुन्तैर्विषमैः परश्वधैश्चक्रैः ।
परशुत्रिशूलमुद्गरतोमरवासीमुषण्डीभिः ॥
सम्भिन्नतालुशिरसश्छिन्नभुजाश्छिन्नकर्णनासौष्ठाः ।
भिन्नहृदयोदरान्त्रा भिन्नाक्षिपुटाः सुदुःखार्त्ताः ॥
निपतन्त उत्पतन्तो विचेष्टमाना महीतले दीनाः ।
नेक्षन्ते त्रातारं नैरयिकाः कर्मपटलान्धाः ॥
छिद्यन्ते कृपणाः कृतान्तपरशोस्तीक्ष्णेन धारासिना,
क्रन्दन्तो विषवीचिभिः परिचृताः संभक्षणव्यापृतैः ।
पाट्यन्ते क्रकचेन दारुवदसिना प्रच्छिन्नबाहुद्वयाः,
कुम्भीषु त्रपुपानदग्धतनवो मूपासु चान्तर्गताः ॥

आचारांगस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥२४॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आचारांगसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावलौ
॥२५॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
प्र
ह
भा
गः
८

भूज्यन्ते ज्वलदम्बरीषहुतभुग्ज्वालाभिराराविणो, दीप्ता-
ङ्गारनिमेषु वज्रभवनेष्वङ्गारकेषूत्थिताः । दहयन्ते विकृतो-
र्ध्वबाहुवदनाः क्रन्दन्त आर्त्तस्वनाः, पश्यन्त कृपणा
दिशो विशरणास्त्राणाय को नो भवेत् ? ॥ (२३६)
८२ क्षुत्तुङ्गहिमात्युष्णभयार्दितानां, पराभियोगव्यसनानुराणाम् ।
अहो तिरश्चामतिदुःखितानां, सुखानुपङ्गाः किल वार्त्त-
मेतत् ॥ (२३७)
दुःखं स्त्रीकुक्षिमध्ये प्रथममिह भवे गर्भवासे नराणां,
बालत्वे चापि दुःखं मललुलिततनु स्त्रीपयःपानमिश्रम् ।
तारुण्ये चापि दुःखं भवति विरहजं वृद्धभावोऽप्यसारः,
संसारे रे मनुष्या ! वदत यदि सुखं स्वल्पमप्यस्ति
किञ्चित् ॥
बाल्यात्प्रभृति च रोगैर्दृष्टोऽभिभवश्च यावदिह मृत्युः ।
शोकवियोगायोगैर्दुर्गतदोषैश्च नैकविधैः ॥
क्षुत्तुङ्गहिमोष्णानिलशीतदाहदारिद्र्यशोकप्रियविप्रयोगैः ।
दौर्भाग्यमौर्ख्यानभिजात्यदास्यवैरूप्यरोगादिभिरस्वतन्त्रः ॥
देवेषु व्यवनवियोगदुःखितेषु, क्रोधेर्ष्यामदमदना-

तितापितेषु । आर्या ! नस्तदिह विचार्य संशिरन्तु,
यत् सौख्यं किमपि निवेदनीयमस्ति ॥ (२३७)
८३ दुर्बलान्यविनयवन्ति चेन्द्रियाणि, अचिन्त्या मोहशक्तिः,
विचित्रा कर्मपरिणतिः किं न कुर्यादिति, उक्तञ्च-
कम्माणि णूणं घणचिक्कणाहं गरुयाहं वइरसाराहं ।
णाणट्ठिअपि पुरिसं पंथाओ उप्पहं णिति ॥ (२४७)
८४ कह नाम सो तवोक्कम्मपंडिओ जो न निब्बुजुत्तप्पा ।
लट्ठु वित्तीपरिक्खेवं वच्चइ जेमंतओ चिव ? ॥
८५ आहारेण विरहिओ अप्पाहारो य संवरनिमित्तं ।
हासंतो हासंतो एवाहारं निरुंभिज्जा ॥ (२६४)
८६ एगे अहमंसि, न मे अत्थि कोई, न याहमवि कस्सवि ।
८७ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ आहारेमाणे
नो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं संचारिज्जा
आसाएमाणे, दाहिणाओ हणुयाओ वामं हणुयं नो
संचारिज्जा आसाएमाणे, से अणासायमाणे लाघवियं
आगमेमाणे तवे से अभिसमन्नाए भवइ । (२८३)
८८ तिथ्यरो चउनाणी सुरमहिओ सिज्झियव्वय धुवम्मि ।

आचारांगस्य

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
प्र
ह
भा
गः
८

॥२५॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [आचारांगसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥२६॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

अणिगृह्यबलविरिओ तवोविहाणंमि उज्जमइ ॥
किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयकारणा सुविहिएहिं ।
होइ न उज्जमियव्वं सपच्चवायंमि माणुस्से ॥
८९ जह खलु मइलं वत्थं सुज्झइ उदगाइएहिं दव्वेहिं ।
एवं भावुवहाणेण सुज्झए कम्ममट्ठविहं ॥ २९७
९० नाणं भविस्सई एवमाइया वायणाइयाओ य ।
सज्झाए आउत्तो गुरुकुलवासो य इय नाणे ॥ ३४०
९१ आलंघणे य काले मग्गे जयणाइ चेव परिसुद्धं ।
भंगेहिं सोलसविहं जं परिसुद्धं पसत्थं तु ॥ ३७५
९२ जम्माभिसेयनिकम्बमणचरणनाणुप्पया य निव्वाणे ।
दियलोअभवणमंदरनंदीसरभोमनगरेसु ॥
अट्ठावयमुज्जिते गयग्गपयए य धम्मचक्के य ।
पासरहावत्तनगं चमरुप्पायं च वंदामि ॥ ४१८
९३ गणियं निमित्तं जुत्ती संदिट्ठी अवितहं इमं नाणं ।
इय एगंतमुवगया गुणपच्चइया इमे अत्था ॥
गुणमाहप्यं इसिनामकित्तणं सुरनरिंदिपूया य ।
पोराणचेइयाणि य इय एसा देसणे होइ ॥ ४१९

९४ साहुमहिंसाधम्मो सच्चमदत्तविरई य बभं च ।
साहु परिग्गहविरई साहु तवो वारसंगो य ॥
९५ वेरग्गमप्पमाओ एगत्ता(ग्गे) भावणा य परिसंगं ।
इय चरणमणुगयाओ भणिया इत्तो तवो वुच्छं ॥
९६ किह मे हविज्जऽवंशो दिवसो ? किं वा पट्टतवे काउं ? ।
को इह दव्वे जोगो खित्ते काले समयभावे ? ॥
९७ भावयितव्यमनित्यत्व १ मशरणत्वं २ तथैकता
३ ऽन्यत्वे ४ । अशुचित्वं ५ संसारः ६ कर्माश्रव
७ संवर ८ विधिश्च ॥
निर्जरण ९ लोकविस्तर १० धर्मस्वाख्याततत्त्वचिन्ता च
११ । बोधेः सुदुर्लभत्वं च १२ भावना द्वादश विशुद्धाः ॥ ४२०
९८ अणिच्चे पव्वए रुपे भुयगस्स तहा (या) महासमुदे य ।
एए खलु अहिगारा अज्झयणंमी विमुत्तीए ॥ ४२९
९९ विऊ नए धम्मपयं अणुत्तरं, विणीयतणहस्स मुणिस्स
झायओ । समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा, तवो
य पत्ता य जसो य वट्ठइ ॥ ४३०

आचारांगस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

॥२६॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [सूत्रकृत+स्थान+भगवतीसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावली
॥२७॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
भा
गः
८

अथ सूत्रकृतांगसूक्तानि

- १ उवसग्गभीरुणो श्रीवसस्स णरएसु होज्ज उववाओ ।
एव महप्पा वीरो जयमाह तहा जएज्जाह ॥ (८)
- २ अविय हु भारियक्कमा नियमा उक्कस्स निरयठित्तिगामी ।
तेऽवि हु जिणोवदेसेण तेणेव भवेण सिज्झंति ॥ (३०२)

अथ स्थानांगसूक्तानि

- १ श्रीवीरं जिननाथं नत्वा स्थानाङ्कतिपयपदानाम् ।
प्रायोऽन्यशास्त्रदृष्टं करोम्यहं दिवरणं किञ्चित् ॥ (१)
- २ स्याद्वादाय नमस्तस्मै, यं विना सकलाः क्रियाः ।
लोकद्वितयभाविन्यो, नैव साङ्गत्यमियूति ॥ (१३)
- नयास्तव स्यात्पदसत्त्वलाञ्छिता, रसोपविद्धा इव लोह-
धातवः । भवन्त्यभिप्रेतफला यतस्ततो, भवन्तमार्याः
प्रणता हितैषिणः ॥ (१३)
- ३ पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविधं बलं च, उच्छ्वासनिःश्वासमथा-
न्यदायुः । प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषां वियोजीकरणं
तु हिंसा ॥

- तप्पजायविणासो दुक्खुप्पाओ य संकिलेसो य ।
एस व्हो जिणभणिओ वज्जेयव्वो पयत्तेणं ॥ (२६)
- ४ छट्ठणाइं सव्वजीवाणं णो सुलभाइं भवंति, तं०-माणस्सए
भवे १ आयरिए खित्ते जम्मं २ सुकुले पच्चायाती ३ केवलि-
पन्नत्तस्स धम्मस्स सवणता ४ सुयस्स वा सद्दहणता ५
सद्दहितस्स वा पत्तितस्स वा रोइतस्स वा सम्मं काएणं
फासणया ६ । (३५५)
- ५ आहारत्यागिनो हि ब्रह्मचर्यं सुरक्षितं स्यादिति । (३६०)

अथ भगवतीसूक्तानि

- १ ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते
उत्पन्नानाणंदंसणधरे जाव सव्वन्नू सव्वदरिसी ।
- २ आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंवकूण-
गपडावणट्टयाए एगंतमंते संगारं कुव्वंति । (६८१)
- ३ गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरणं आभोएइ २ आजी-
विए थेरे सद्दावेइ आ० २ एवं वयासी-तुज्जे णं
देवाणुप्पिया ! मम कालगयं जाणेत्ता सुरभिणा

सूत्रकृतांग-
स्थानांग-
भगवतीनां
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
भा
गः
८

॥२७॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [भगवतीसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावली

॥२८॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
ित
मु
नि
दी
प
र
त्न
सा
ग
रे
ण
पु
नः
सं
क
ल
ितः
आ
ग
मी
य-
सू
क्ता
व
लि-
आ
दि

गंधोदपणं पहाभेह सु० २ पम्हलसुकुमालाए गंध-
कासाए गायार्हं लृहेह गा० २ सरसेणं गोसीस-
चंदणेणं गायार्हं अणुलिपह स० २ महरिहं हंस-
लक्खणं पडसाडगं नियंसेह मह० २ सव्वालंकार-
विभूसियं करेह स० २ पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं
दूरुहेह पुरि० सावत्थीए नयरीए सिंघाडगजाव-
पहेसु महया महया सहेणं उग्घोसेमाणा एवं वदह-
एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे
जिणप्पलावी जाव जिणसहं पगासेमाणे विहरिस्ता
इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थयराणं चरिसे
तित्थयरे सिद्धे जाव सव्वदुक्खपहीणे, इद्धिसकारसमु-
दपणं मम सरीरगस्स णीहरणं करेह, तए णं ते
आजीविषा थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमदं
विणएणं पडिसुणेंति । (६८२)

४ अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परू-
वेंति-एवं खलु समणा पंडिया समणोवासया बाल-
पंडिया जस्स णं एगपाणाएयि दंडे अणिविखत्ते से

णं एगंतवालेत्ति वत्तव्वं सिया ।

५ अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परू-
वेंति एवं खलु पाणातिवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसण-
सल्ले वट्टमाणस्स अन्ने जीवे अन्ने जीवाया पाणाइवाय-
वेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छा-
दंसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अन्ने जीवे अन्ने जीवाया । (७२३)

६ शरीरस्य प्राणातिपातादिषु वर्तमानस्य दृश्यत्वाच्छ-
रीरमेव तत्कर्तुं, न पुनरात्मेत्येके ।

७ अन्ये त्वाहुः-जीवतीति जीवो-नारकादिपर्यायः जीवात्मा
तु सर्वभेदानुगामि जीवद्रव्यं, द्रव्यपर्याययोश्चान्यत्वं
तथाविधप्रतिभासभेदनिबंधनत्वात् घटपटादिवत्,
तथाहि-द्रव्यमनुगताकारां बुद्धिं जनयति, पर्यायास्त्व-
ननुगताकाराम् ।

८ अन्ये त्वाहुः-अन्यो जीवोऽन्यश्च जीवात्मा जीव-
स्यैव स्वरूपः । (७२४)

९ अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति-
एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आतिट्ठे समाणे आहच्च

भगवत्याः
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
ित
मु
नि
दी
प
र
त्न
सा
ग
रे
ण
पु
नः
सं
क
ल
ितः
आ
ग
मी
य-
सू
क्ता
व
लि-
आ
दि

॥२८॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [भगवतीसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावलि

॥२९॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

देो भासाओ भासति, तं०-मोसं वा सञ्चामोसं वा । (७४९)
१० अन्नउत्थिया जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छ-
न्ति उवागच्छइत्ता भगवं गोयमं एवं वयासी-तुज्जे णं
अज्जो ! तिविहंतिविहेणं असंजया जाव एगंतवाला
यावि भवह, तए णं भगवं गोयमे अन्नउत्थिए एवं
वयासी-से केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहंतिविहेणं
अस्संजया जाव एगंतवाला यावि भवामो, तए णं ते अन्न-
उत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी-तुज्जे णं अज्जो ! रीयं
रीयमाणा पाणे पेचवेह अभिहणह जाव उवहवेह, तए णं
तुज्जे पाणे पेचवेमाणा जाव उवहवेमाणा तिविहं-
तिविहेणं जाव एगंतवाला यावि भवह, तए णं भगवं
गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी नो खलु अज्जो !
अम्हे रीयं रीयमाणा पाणे पेचवेमो जाव उवहवेमो,
अम्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं च जोयं च रीयं च
पडुच्च दिस्सा२ पदिस्सा२ वयामो तए णं अम्हे दिस्सा
दिस्सा वयमाणा पदिस्सा पदिस्सा वयमाणा णो पाणे
पेचवेमो जाव णो उवहवेमो, तए णं अम्हे पाणे अपेचवे-

माणा जाव अणोहवेमाणा तिविहंतिविहेणं जाव एगंत-
पंडिया यावि भवामो, तुज्जे णं अज्जो ! अण्णणा चेव
तिविहंतिविहेणं जाव एगंतवाला यावि भवह, तए
णं ते अन्न उत्थिया भगवं गोयमं एवं व० केणं
कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहंतिविहेणं जाव
भवामो ?, तए णं भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं व०
तुज्जे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेचवेह जाव
उवहवेह, तए णं तुज्जे पाणे पेचवेमाणा जाव उवहवे-
माणा तिविहं जाव एगंतवाला यावि भवह, तए णं
भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं पडिहणइ पडिह-
णित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवाग०२
समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति वंदित्ता णच्चा-
सत्ते ज्ञात्तः पज्जुवासति, गोयमादि ! समणे भगवं महा-
वीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-सुहु णं तुमं गो० ! ते
अन्नउत्थिए एवं व०, साहु णं तुमं गोयमा ते ! अन्न-
उत्थिए एवं व०, अत्थि णं गो० अम्हे बहवे अतेवासी
समणा निगंथा छउमत्था जे णं नो पभू एयं वागरणं

भगवत्याः
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥२९॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [भगवती+ज्ञाताधर्मकथासूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥३०॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
प्र
हे
भा
गः
८

वागरेत्तए जहा णं तुमं, तं सुट्टु णं तुमं गो० ते अन्त-
उत्थिए एवं वयासी साहू णं तुमं गो० ते अन्नउत्थिए
एवं वयासी। (७५)

अथ ज्ञाताधर्मकथासूक्तानि

- १ उग्गतवसंजमवओ पण्डितुफलसाहगस्सवि जियस्स ।
धम्मविसणवि सुहुमावि होइ माया अणत्थाय ॥
जह मल्लिस्स महावलभवमि तित्थयरनामवंधेऽवि ।
तवविसय थेवमाया जाया जुवइत्तहेउत्ति ॥ (१५५)
- २ जह रयणदीवदेवी तह एत्थं अविरई महापावा
जह लाहत्थी वणिगा तह सुहकामा इहं जीवा ॥
जह तेहिं भीणहिं दिट्ठो आघायमंडले पुरिसो ।
संसारदुक्खभीया पासंति तहेव धम्मकहं ॥
जह तेण तेसि कहिया देवी दुक्खाण कारणं घोरं ।
तत्तो बिय नित्थारो सेलगजक्खाओ नच्चत्तो ॥
तह धम्मकही भव्वाण साहए दिट्ठअविरइसहावो ।
मयलदुहहेउभूओ विसया विरयंति जीवाणं ॥
मत्ताणं दुहत्ताणं सरणं चरणं जिणिदपन्नत्तं ।

आणंदरूवनिव्वाणसाहणं तहय देसेइ ॥
जह तेसि तरियव्वो रुहसमुहो तहेव संसारो ।
जह तेसि सगिहगमणं निव्वाणगमो तहा एत्थं ॥
जह सेलगपिट्ठाओ भट्ठो देवीइ मोहियमईओ ।
सावयसहस्सपउरंमि सायरे पाविओ निहणं ॥
तह अविरईइ नडिओ चरणचुओ दुक्खसावयाइण्णे ।
निवडइ अपारसंसारसायरे दारुणसरूवे ॥
जह देवीए अखोही पत्तो सट्ठाण जीवियसुहाइं ।
तह चरणठिओ साहू अक्खोही जाइ निव्वाणं ॥ १६९
३ चंदोव्व कालपक्खे परिहाई पण पण पमायपरो ।
तह उग्घरविग्घरनिर्गणोवि न य इच्छियं लहइ ॥ १७१
जह चंदो तह साहू राहुवरोहो जहा तह पमाओ ।
वण्णाई गुणगणो जह तहा खमाई सभणधम्मो ॥
पुण्णोवि पइदिणं जह हायंतो सव्वहा ससी नस्से ।
तह पुण्णचरित्तोऽवि हु कुसीलसंसग्गिमाईहिं ॥
जणियपमाओ साहू हायंतो पइदिणं खमाईहिं ।
जायइ नट्ठचरित्तो तत्तो दुक्खाइं पावेइ ॥

भगवती-
ज्ञाताधर्म-
कथयोः
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
प्र
हे
भा
गः
८

॥३०॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [ज्ञाताधर्मकथासूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावलौ
॥३१॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
भा
गः
८

तथा-हीणगुणो विहु होउं सुहगुरुजोग्गाइ जणियसंवेगो ।
पुणसंरूवो जायइ विवहुमाणो ससहरोव्व ॥ (१७१)
४ जह दावइवतखणमेवं साह जहेव दीविच्चा ।
वाया तह समणाइय सपक्खवयणाइं दुसहाइं ॥
जह सामुइयवाया तहऽण्णतित्थाइकडुयवयणाइं ।
कुसुमाइसंपया जह सिवमग्गाराहणा तह उ ॥
जह कुसुमाइविणासो सिवमग्गविराहणा तहा नेया ।
जह दीववाउजोगे बहु इही ईसि य अणिही ॥
तह साहम्मियवयणाण सहमाणाऽऽराहणा भवे बहुया ।
इयराणमसहणे पुण सिवमग्गविराहणा थोवा ॥
जह जलहिवाउजोगे थेविही बहुयरा यऽणिही य ॥
तह परपक्खक्खमणे आराहणमीसि बहु इयरं ॥
जह उभयवाउविरहे सव्वा तरुसंपया विणट्ठत्ति ॥
अनिमित्तोभयमच्छरूवे विराहणा तह य ॥
जह उभयवाउजोगे सव्वसमिही वणस्स संजाया ॥
तह उभयवयणसहणे सिवमग्गाराहणा वुत्ता ॥
ता पुन्नसमणधम्माराहणचित्तो सया महासत्तो ॥

सव्वेणवि कीरंतं सहज्ज सव्वंपि पडिक्कलं ॥ (१७२)
५ मिच्छत्तमोहियमणा पावपसत्तावि पाणिणो विगुणा ।
फरिहोदगं व गुणिणो हवंति वरगुरुपसायाओ ॥ (१७३)
६ तिरियाणं चारित्तं निवारियं अह य तो पुणो तेसि ।
सुव्वइ बहुयाणंपि हु महव्वयारोहणं समण ॥
न महव्वयसंभावेवि चरणपरिणामसग्गवो तेसि ।
न बहुगुणाणंपि जओ केवलसंभूइपरिणामो ॥ (१७४)
७ संपन्नगुणोवि जओ सुसाहुसंसग्गिज्जिओ पायं ।
पावइ गुणपरिहाणीं दहुरजीवो व्व मणियारो ॥
तित्थयरवंदणत्थं चलिओ भावेण पावए सग्गं ।
जह दहुरदेवेणं पत्तं वेमाणियसुरत्तं ॥ (१७५)
८ जाव न दुक्खं पत्ता माणधंसं च पाणिणो पायं ।
ताव न धम्मं मेण्हति भावओ तेयलीसुउव्व ॥ (१७६)
९ चंपा इव मणुयगती धणो व्व भयवं जिणो दण्णरसो ।
अहिच्छत्तानयरिसमं इह निव्वाणं मुणेरव्वं ॥
घोसणया इव तित्थंकरस्स सिवमग्गदेसणमहग्गं ।
चरगाइणोव्व इत्थं सिवसुहकामा जिया वहुवे ॥

ज्ञाताधर्म-
कथायाः
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
भा
गः
८

॥३१॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [ज्ञाताधर्मकथासूक्तानि]

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलि
॥३२॥

श्री
आ
ग
मो
द्व
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

नंदिफलाइ व्व इहं सिवपहपडिवण्णगाण विसया उ ।
तव्वक्खणाओ मरणं जह तह विसण्हिं संसारो ॥
तव्वज्जणेण जह इट्ठपुरगमो विसयवज्जणेण तहा ।
परमानंदनिबंधणसिवपुरगमणं मुणेयव्वं ॥ (१९५)
१० सुबहुं पि तवक्खिलेसो नियाणदोसेण दूसिओ संतो ।
न सिवाय दोवतीए जह किल सुकुमालियाजम्मे ॥ (२२७)
११ अमणुन्नमभत्तीए पत्ते दाणं भवे अणत्थाय ।
जह कडुयतुंवदाणं नागसिभिभवंमि दोवइए ॥ (२२७)
१२ जह सो कालियदीवो अणुवमसोक्खो तहेव जइधम्मो ।
जह आसा तह साह्व वणियव्वऽणुकूलकारिज्जा ॥
जह सदाइअगिद्धा पत्ता नो पासबंधणं आसा ।
तह विसएस्स अगिद्धा बउद्धंति न कम्मणा साह्व ॥
जह सच्छंदविहारो आसाणं तहय इह वरमुणीणं ।
जरमरणाइं विवज्जिय संपत्ताऽऽणंदिनिव्वाणं ॥
जह सदाइस्सु गिद्धा बद्धा आसा तहेव विसयरया ।
पावेंति कम्मबंधं परमासुहकारणं घोरं ॥
जह ते कालियदीवा णीया अन्नत्थ दुहगणं पत्ता ।

तह धम्मपरिबुद्धो अधम्मपत्ता इहं जीवा ॥
पावेंति कम्मनरवइवसया संसारवाहयालीए ।
आसण्णमदएहिं व नेरइयाइहिं दुक्खाइं ॥ (२३४)
१३ जह सो चिलाइपुत्तो सुंसुमगिद्धो अकज्जपडिवद्धो ।
धणपारद्धो पत्तो महाडवि वसणसयकलियं ॥
तह जीवो विसयसुहे लुद्धो काऊण पावकिरियाओ ।
कम्मवसेणं पावइ भवाडवीए महादुक्खं ॥
धणसेट्ठीदिव गुरुणो पुत्ता इव साहवो भवो अडवी ।
सुयमंसमिवाहारो रायगिहं इह सिवं नेयं ॥
जह अडविनयरनित्थरणपावणत्थं तएहिं सुयमंसं ।
भुत्तं तहेह साह्व गुरुण आणाए आहारं ॥
भवलंघणसिवपावणहेउं भुज्जंति ण उण गेहीए ।
वण्णबलरूवहेउं च भावियप्पा महासत्ता ॥ (२४२)
१४ वाससहस्सं पि जई काऊणं संजमं सुविउलं पि ।
अंते किलिट्ठभावो न विसुज्झइ कंडरीउ व्व ॥
अप्पेणवि कालेणं केइ जहागहियसीलसामण्णा ।
साहिति निययकज्जं पुंडरीयमहारिसिव्व जहा ॥ (२४६)

ज्ञाताधर्म-
कथायाः
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्व
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

॥३२॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [प्रश्नव्याकरणसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावलौ
॥३३॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
प्र
हे
भा
गः
८

अथ प्रश्नव्याकरणसूक्तानि

- १ पंचविहो पण्णत्तो जिणेहिं इह अण्हओ अणादीओ ।
हिंसामोसमदत्तं अण्वंभपरिग्गहं चेव ॥ (४)
- २ जारिसओ जंनामा जह य कओ जारिसं फलं देति ।
जेवि व करेति पावा पाणवहं तं निसामेह ॥ (४)
- ३ नवि किंचि अणुधायं पडिसिद्धं वावि जिणवरिंदेहिं ।
मोत्तुं मेहुणमेगं न जं विणा रागदोसेहिं ॥
- ४ हरिहरहरण्यगर्मप्रमुखे भुवने न कोऽप्यसौ सुरः ।
कुसुमविशिखस्य विशिखान् अस्खलयत् यो जिनादन्यः ॥
- ५ सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति पुरुषस्तावदेवेन्द्रियाणां,
लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालम्बते तावदेव ।
भूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथजुषो नीलपक्षमाण एते,
यावल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुषो दृष्टिवाणाः पतन्ति ॥
- ६ किं किं ण कुणइ किं किं न भासए चित्तएऽविय न किं किं ?
पुरिसो विसयासत्तो विहलंघलिउव्व मज्जेण ॥
- ७ जो सेवइ किं लहई (थामं हारेइ दुव्वलो होइ ।

- पावेइ वेमणस्सं दुक्खाणि अ अत्तदोसेणं ॥ (६५)
- ८ कशः काणः खञ्जः श्रवणरहितः पुच्छविकलः, क्षुधाक्षामो
जीर्णः पिठरककपालार्पितगलः । व्रणैः पूयङ्गिभैः
कुमिकुलचितैरावृततनुः, शुनीमन्वेति श्वा हतमपि च
हन्त्येव मदनः ॥
- ९ तिब्बकसाओ बहुमोहपरिणओ रागदोससंजुत्तो ।
बंधइ चरित्तमोहं दुविहंपि चरित्तगुणघाई ॥
- १० अरिहंतसिद्धचेइ अतवसुअगुरुसाहुसंघपडणीओ ।
बंधति दंसणमोहं अणंतसंसारिओ जेणं ॥
- ११ संजइ चउत्थभंगे चेइयदव्वे य पवयणुडुहाहे ।
रिसिघ्राए य चउत्थे मूलगगी बोहिलाभस्स ॥
- १२ नामाऽपि स्त्रीति संह्लादि, विकरोत्येव मानसम् ।
किं पुनर्दर्शनं तस्या, विलासोल्लासितभ्रुवः ? ॥
- १३ सवेऽनर्था विधीयन्ते, नरैरर्थैकलालसैः ।
अर्थस्तु प्रार्थ्यते प्रायः, प्रेयसीप्रेमकामिभिः ॥
- १४ काम ! जानामि ते रूपं, सङ्कल्पात्किल जायसे ।
न त्वां सङ्कल्पयिष्यामि, ततो मे न भविष्यसि ॥ (६६)

प्रश्नव्याक-
रणस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
प्र
हे
भा
गः
८

॥३३॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [प्रश्नव्याकरणसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥३४॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

- १५ यच्चेह लोकेऽघपरे नराणामुत्पद्यते दुःखमसह्यवेगम् ।
विकाशनीलोत्पलचारुनेत्रा, मुक्त्वा स्त्रियस्तत्र न हेतुरन्यः ॥
१६ रसा पगामं न निसेवियच्चा, पायं रसा दित्तिकरा हवंति ।
दित्तं च कामा समभिद्वंति, दुमं जहा साउफलं तु पक्खी ॥
१७ प्रशान्तवाहचित्तस्य, संभवन्त्यखिलाः क्रियाः ।
मैथुनव्यतिरेकिण्यो, यद्विरागं न मैथुनम् ॥
१८ हृदयं वस्तु परं न पश्यति जगत्पन्धः पुरोऽवस्थितं,
रागान्धस्तु यदस्ति तत्परिहरन् यन्नास्ति तत्पश्यति ।
कुन्देन्दीवर पूर्णचन्द्रकलशश्रीमल्लतापल्लवा नाशेष्या-
शुचिराशिषु प्रियतमागात्रेषु यन्मोदते ॥
१९ निक्कडकडक्कडक्कडप्पहारनिम्बिजजोगसन्नाहा ।
महरिसिजोहा जुवईण जति सेवं विगयमोहा ॥
२० ये रामरावणादीनां, सङ्ग्रामा ग्रस्तमानवाः ।
श्रूयन्ते स्त्रीनिमित्तेन, तेषु कामो निबन्धनम् ॥
२१ दुःखात्मकेषु विषयेषु सुखाभिमानः, सौख्यात्मकेषु निय-
मादिषु दुःखबुद्धिः । उत्कीर्णवर्णपदपङ्क्तिरिवान्धरूपा,
सारूप्यमेति विपरीतगतिप्रयोगात् ॥

- २२ जइ गणी [जइ मोणी जइ मुंडी वक्कली तवस्सी वा ।
पत्थंतो अ अवंभं बंभावि न रोयण मज्झं ॥
२३ तो पडियं तो गुणियं तो मुणियं तो य चेइओ अप्पा ।
आवडियपेड्डियामंतिओऽवि जइ न कुणइ अकज्जं ॥] (६७)
२४ परदारानिवृत्तानामिहाकीर्तिविडम्बना ।
परत्र दुर्गतिप्राप्तिर्दौर्भाग्यं षण्डता तथा ॥ (८६)
२५ रसे-तीमनाऽऽरनालादौ जाता रसजाः । (९०)
२६ भीषाणविव सरणं पक्खीणंपिच गमणं तिसियाणंपिच
सलिलं खुहियाणंपिच असणं समुद्धमज्जेव पोतवहणं
चउप्पयाणं व आसमपयं दुहड्डियाणं च ओसहिवलं
अडवीमज्जे विसत्थगमणं । (९९)
२७ सत्येनाग्निर्भवेच्छीतो, गाथं दत्तेऽरुदु सत्यतः ।
नासिदिच्छनत्ति सत्येन, सत्याद्रज्ज्यते फणी ॥
२८ प्रियं सत्यं वाक्यं हरति हृदयं कस्य न जने ? गिरं
सत्यां लोकः प्रतिपदमिमामर्थयति च । सुराः सत्या-
द्राक्याददति मुदिताः कामिकफलमतः सत्याद्राक्या-
द्व्रतमभिमतं नास्ति भुवने ॥ (११५)

प्रश्नव्याक-
रणस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

॥३४॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [प्रश्नव्याकरण+प्रज्ञापना+जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलि
॥३५॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
ग्र
ह
भा
गः
<

- २९ व्रतानां ब्रह्मचर्यं हि, निर्दिष्टं गुरुकं व्रतम्
तज्जन्यपुण्यसंभारसंयोगाद् गुरुरुच्यते ॥
- ३० एकतश्चतुरो वेदाः, ब्रह्मचर्यं च एकतः ।
एकतः सर्वपापानि, मयं मांसं च एकतः ॥
- ३१ नवि किञ्चि अणुत्रायं पडसिद्धं वाधि जिणवरिंदेहि ।
मोक्षं मेहुण भावं ण तं विणा रागदोसेहि ॥ (१३३)
- ३२ देवदाणवगंधवा, जत्रखरखस्सकिनरा ।
बंभचारिं नमंस्संति, दुक्करं जं करिंति ते ॥ (१३४)
- ३३ दानालां लब्धेऽभयदानमिव प्रवरमिदं, तत्र दानानि-
ज्ञानधर्मापग्राभयदानमेदात् त्रीणि ॥ (१३५)
- ३४ सकलकलाकलापकलितोऽपि कविरपि पण्डितोऽपि
हि, प्रकटितसर्वशास्त्रतत्त्वोऽपि हि वेदविशारदोऽपि
हि । मुनिरपि वियति विततनानाद्भुतविभ्रमदर्शकोऽपि
हि, स्फुटमिह जगति तदपि न स कोऽपि हि यदि
नाक्षाणि रक्षति ॥ (१३७)

अथ प्रज्ञापनासूक्तानि

- १ जिनवचनामृतजलधिं वन्दे यद्विन्दुमात्रमादाय ।
अभवन्नूलं सत्त्वा जन्मजराव्याधिपरिहीणाः ॥
- २ प्रणमत गुरुपदपङ्कजमधरीकृतकामधेनुकल्पलतम् ।
यदुपास्तिवशाच्चिरुपममश्नुवते ब्रह्म तनुभाजः ॥
- ३ जयति नमदमरमुकुटप्रतिविम्बच्छविहितचदुरूपः ।
उद्धर्तुमिव समस्तं विश्वं भवपङ्क्तो वीरः ॥ (१)

अथ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूक्तानि

- १ सर्वजोकोपदेशेन, यः सत्त्वानामनुग्रहम् ।
करोति दुःखतप्तानां, स प्राप्नोत्यचिराच्छिवम् ॥
- २ सम्यग्भावपरिज्ञानाद्विरक्ता भवतो जनाः ।
क्रियासक्ता ह्यविघ्नेन, गच्छन्ति परमां गतिम् ॥ (३)
- ३ वैरं कृत्वा हि तदुत्थफलविपाके पुमाननुशेते । (१२३)
- ४ सव्यपाणिगतमप्यपसव्यप्रापणावधि न देवविलम्बः ।
न ध्रुवत्वनियमः किल लक्ष्म्यास्तद्विलम्बनविधौ न विवेकः ॥
- ५ अविलम्बितदानगुणात् समुज्ज्वलं मानवो यशो लभते ।

प्रश्नव्याकर-
णप्रज्ञापना
जंबूद्वीप-
प्रज्ञप्तीनां
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
ग्र
ह
भा
गः
<

॥३५॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति+बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय
सूक्तावलौ
॥३६॥

श्री
आ
ग
मी
या
र
सं
प्र
ह
भा
गः
८

प्रथमं प्रकाशदानाद्विशदः पक्षोऽपरः कृष्णः ॥ (१८७)
६ यत्तु लोकश्रीटीकाकृता उभययोगीतिपदं व्याख्यानयता
एतानि नक्षत्राण्युभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरेण दक्षिणेन च
युज्यन्ते, कदाचिद्भेदमप्युपयान्तीति, तच्च वक्ष्यमाणज्ये-
ष्ठासूत्रेण सह विरोधीति न प्रमाणम् । ४९
७ आषाढाद्वयमपि प्रमर्दयोगिनश्चत्रगणमध्ये कथं नोक्तमिति
वदतो निरासः, अनयोर्दक्षिणदिग्योगविशिष्टप्रमर्दयोगस्य
सम्भवादिति । ४९८

अथ बृहत्कल्पसूक्तानि

प्रथमे खंडे—

- १ प्रमाणानि प्रमाणस्थे, रक्षणीयानि यत्नतः ।
विपीदन्ति प्रमाणानि, प्रमाणस्थैर्विसंशुलैः ॥ १६६-२-१०
- २ नच्चा नरवह्णो सत्तसारबुद्धी परिक्रमविसेसे ।
भावेण परिक्रमेत् तेण तमन्ने परिहरन्ति ॥ १८६-१-१२
- ३ संसारदुःखमहणो विवोहो भवियपुंडरीयाणं ।
धम्मो जिणपन्नत्तो पगप्पजइणा कहेयव्वो ॥ १८८-१-३
- ४ तित्थाणुसज्जणाए आयहियाए परं समुद्धरति ।

- मग्गप्पभावणाए जइधम्मकहा अतो पढमं ॥ १८९-१-११
- ५ जहणा(ण्हा)उत्तिण्णगओ बहुअतरं रेणुयं लुभइ अंगे ।
सुद्धुवि उज्जममाणो तह अण्णाणी मलं चिणइ ॥ १८९-२-१५
- ६ सज्झायं जाणंतो पंचेदियसंबुडो तिगुत्तो य ।
होइ य इक्कग्गमणो विणएण समाहिओ साहू ॥ १९२-१-१४
- ७ आयहियमजाणंतो मुज्झइ मूढो समादिअति कम्मं ।
कम्मेण तेण जंतू परिंति भवसागरमणंतं ॥ १९२-१-८
- ८ नाणेण सव्वभावा नज्जंते जे जहिं जिणक्खाया ।
नाणी चरित्तगुत्तो भावेण उ संवरो होइ ॥ १९२-२-३
- ९ जहर सुयमोगाहइ असयरसपसरसंजुयमपुव्वं ।
तहर पव्वाइ मुणी नवसंवेगसद्धाओ ॥ १९२-२-५
- १० णाणाणत्तीए पुणो दंसणतवनियमसंजमे ठिष्ठा ।
विहरइ विसुज्झमाणो जावज्जीवंपि निक्कपो ॥ १९२-२-१०
- ११ बारसविहम्मि वि तवे सच्चित्तरवाहिरे कुसलदिट्ठे ।
न वि अत्थि नवि अ होही सज्झायसमं तवोक्कम्मं ॥ १९२-२-१३
- १२ जं अन्ताणीक्कम्मं खवेइ बहुयाहिं वासकोडीहिं ।
तं नाणी तिहिं गुत्तो खवेइ ऊसासमित्तेण ॥ १९३-१-४

जंबूद्वीपप्र-
ज्ञप्तिबृहत्क-
ल्पयोः
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मी
या
र
सं
प्र
ह
भा
गः
८

॥३६॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥३७॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
हे
भा
गः
८

- १३ धम्मोदण रुवं करंति रुवस्सिणोवि जइ धम्मं ।
गिज्झवओ य सुरुवो पसंसिमो रुवमेवं तु ॥ (१९८-१-१)
१४ वासोदगस्स व जहा वन्तादी होंति भायणविसेसा ।
सव्वेसिपि सभासं जिणभासा परिणमे एवं ॥ (१९८-१-१४)
१५ जम्मणनिक्खमणेषु य तित्थयराणं महाणुभावाणं ।
इत्थ किर जिणवराणं आगाढं धंसणं होइ ॥ (२०२-२-७)
१६ को नाम सारहीणं स होइ जो भइवाइणो दमण ।
दुट्ठेवि उ जो आसे दमेइ तं आसियं विति ॥ (२०९-२-५)
१७ होंति हु पमायखलिया पुव्वभासा य दुच्चया भंते । २०९-२-८
१८ जेण उ आयाणेहिं न विणा कलुसाण होइ उप्पत्ती । तो
तज्जयम्मि ववसिमो कलुसजयं चेव इच्छतो ॥ (२११-२-९)
१९ एगत्तभावणाए न कामभोगे गणे सरीरे वा ।
सज्जइ वेरग्गगओ फासेइ अणुत्तरं करणं ॥ (२१९-१-१०)
२० खामितस्स गुणा खलु निस्सल्लय विणयदीवणा मग्गे ।
लाघवियं एगत्तं अप्पडिबंधो अ जिणकप्पे ॥ (२२१-१-५)
२१ अनियताउ वसहीओ भमरकुलाणं च गोकुलाणं च ।
समणाणं सउणाणं सारइआणं च मेहाणं ॥ (२२५-२-४)

- २२ रयणगिरिसिहरसरिसे जंवूणयपवरवेइयाकलिण ।
मुत्ताजालगपयरगखिखिणिवरसोभितविडंगे ॥
वेरुलियपयरविट्ठुमखंभसहस्सोवसोभियमुदारे ।
साइण वसहिदाणा लभती पयारिसे भवणे ॥ (२४५-२-१)
२३ एयइोसविमुक्कं कडजोगि नायसीलमायारं ।
गुरुभत्तिमं विणीयं वेयावच्चं तु कारिजा ॥ (२४९-२-८)
२४ जीवो पमायबहुलो पडिवक्खं दुक्करं ठवेउं जे ।
केत्तियमित्तं वोज्झति पच्छित्तं दुग्गयरिणीव ॥ (२५८-१-८)
२५ एगणियस्स दोसा साणे इत्थी तहेव पडिणीए । भिक्ख-
उविसोहि महव्वय तम्हा सविइज्जयं गमणं ॥ (२६५-२-९)
२६ दातुरुन्नतचित्तस्य, गुणयुक्तस्य चार्थिनः ।
दुर्लभः खलु संयोगः, सुवीजक्षेत्रयोरिव ॥ (२७३-१-१२)
२७ जाईकुलरुवधणवलसंपन्ना इड्ढिमंतनिकूखंता ।
जयणाजुत्ता य जई समेच्च तित्थं पभावति ॥ २१९-२-६
२८ सोऊण जो गिलाणं उम्मग्गं गच्छ पडिवहं वावि ।
मग्गाओ वा मग्गं संकमई आणमाईणि ॥ २८८-१-३
२९ सोऊण जो गिलाणं पंथे गासे य भिक्खवेलाए ।

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
हे
भा
गः
८

॥३७॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलि
॥३८॥

श्री
आ
ग
मी
य
सू
क्ता
व
लि
॥३८॥

जइ तुरियं नागच्छइ लग्गइ गुरुण चउम्मासे ॥ २८८-१-१०
३० जइ भमरमहुयरिगणो निवतंती कुसुमियंमि चूयवणे ।
इय होइ निवइयव्वं गेलण्णे कइयवज्जेणं ॥ २८८-१-१३
३१ सोऊण ऊ गिलाणं जो उवयारेण आगओ सुद्धो ।
जो उ उवेहं कुज्जा लग्गइ गुरुण स वित्थारे ॥ (२८८-१-१३)
३२ पडिचरा(रया)मि गिलाणं गेलण्णे वावडाण वा काहं ।
तित्थाणुसज्जणा खलु भत्ती य कया हवइ एवं ॥ (२८८-२-१३)
३३ बंधुजणविप्पओगे अमायपुत्तेवि वट्टमाणंमि । तहवि
गिलाणं सुविहिया वच्चंति वइत्तणं साह ॥ (३०३-२-१४)
३४ सव्वजगजीवहियं साहुं न जहामु एस धम्मो जे ।
जति य जहाओ साहुं जीवियसेत्तेण किं अह ॥ (३०४-१-८)
३५ जइ संजमो जइ तवो दढमिस्सितं जहुत्तकारित्तं ।
जइ वंमं जइ सोयं एएसु परं न अन्नेसु ॥ (३०४-२-१)
३६ सच्चं तवो ध सीलं अणहिकखाओ अ एगमेगस्स ।
जइ वंमं जइ सोयं एयासु परं न अन्नासु ॥
३७ बाहिरमलपरिलुद्धा सीलसुगन्धा तवोगुणविसुद्धा ।
धन्नाण कुलुप्पन्ना एया अवि होज अहंमि ॥ (३१३-१-२)

३८ न वओ एत्थ पमाणं न तवस्सित्तं सुयं न परिआओ ।
अवियं खीणंमि वेवे थीलिंगं सव्वहा रक्खं ॥ (३१५-१-४)
३९ सीहं पालेइ गुहा अविहाडंतेण सा महिद्धिया । तस्स
पुण जोव्वणंमि पओयणं किं गिरिगुहाए ? ॥ (३१६-१-१५)
द्वितीये खंडे—
४० न य सो भावो विज्जइ अदोसवं जो अनिययस्स ॥ (२-२-९)
४१ जइवा सहीणरयणे भवणे कासइ पमायदोसेणं ।
डज्जंति समादिस्ते अणिच्छमाणस्सवि वसूणि ॥
इय संदंसणसंभासणेहिं संदीविओ मयणवण्णी ।
वंभादी गुणरयणे डज्जइऽणिच्छस्सवि पमाया ॥ (४-१-५)
४२ पावस्स लोरो पडिहाइ पावो, कल्लाणकारिस्स य
साहुकारी ॥ (११-१-१२)
४३ वारियवासो वलियतरं वाहए मोहो ॥ (१३-१-७)
४४ मोहग्गिआहुइनिंभाहिईयवायाहऽहियवायाहिं ।
धंतपि धिइसमत्था चलंति किमु दुव्वलधिईआ ॥ (१३-१-११)
४५ संदंसणेण पीई पीईओ रइ रईउ वीसओ ।
वीसंभाओ पणओ पंचविहं वड्डण पेम्मं ॥ (१६-१-५)

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मी
य
सू
क्ता
व
लि
॥३८॥

॥३८॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥३९॥

श्री
आ
ग
मी
य
सू
क्ता
व
लि
॥

४६ अन्नस्सवि संदेहं ददुं कंति जा लयाओ व ।
अवलाओ पगइभयालगाउ रक्खा अओ इत्थी ॥ (२३-२-५)
४७ जइभागगया मत्ता रागादीणं तहा चओ कम्मे ।
रागाइविहुरयाविहु पायं वत्थूण विहुरत्ते ॥ (४६-२-२)
४८ मोहोदण जइता जीवविउत्तेवि इत्थीदेहंमि ।
दिट्ठा दोसपविच्छी किं पुण सजिए भवे देहे ॥ (५९-२-७)
४९ कम्मं चिणंति सवसा तस्सुदयंमि उ परव्वसा होंति । रुक्खं
दुरुहइ सवसो दिगलइ स परव्वसो तत्तो ॥ (६९-२-१०)
५० कम्मवसा खलु जीवा जीववसाइं कहिंचि कम्माइं ।
कत्थइ धणिओ बलवं धारणिओ कत्थइ बलवं ॥ (६९-२-१४)
५१ जो जस्स उ उवसामइ विज्झवणं तस्स तेण कायव्वं ।
जो उ उवेहं कुज्जा आवज्जइ मासियं लहुयं ॥ (७१-२-२)
५२ परपत्तिया न किरिया मोपत्तुरठं च जयसु आयट्ठे ।
अविय उवेहाउत्ता गुणोवि दोसो हवइ एवं ॥ (७२-२-१४)
५३ आयट्ठे उवउत्ता मा य परट्ठंमि वावडा होह ।
हंदि परट्ठाउत्ता आयट्ठविणासगा होह ॥ (७२-१-९)
५४ तावो मेओ अयसो हाणी दंसणचरित्तनाणानं ।

साहुपओसो संसारवड्डणो साहिकरणस्स ॥ (७३-१-८)
५५ जह कोहाइविउट्ठी तह हाणी होइ चरणेवि ॥ (७३-२-४)
५६ साहुण पदोसेण य संसारं सोवि वड्डेइ । (७३-२-१०)
५७ जं अज्जियं समीखल्लएहि तवनियमबंभमइएहिं ।
तं दाणि पच्छनाहिसि छदंतो सागपत्तेहिं ॥ (७४-१-८)
५८ जं अज्जियं चरित्तं देसूणाएवि पुव्वकोडीए ।
तंमि कसाइयमित्तो हारेइ नरो मुहुत्तेणं ॥ (७४-२-१)
५९ आरंभनियत्ताणं अकिणंताणं अकारवित्ताणं ।
धम्मट्ठा दायव्वं गिहीहि धम्मे कयमणाणं ॥ (८८-२-४)
६० पगईपलवसत्ता लोभिज्जइ जेण तेण वा इत्थी ।
अविय हु मोहो दिप्पइ सइरं तासि सरीरेसुं ॥ (९०-१-३)
६१ जइऽविय फासुगदव्वं कुंथुपणगाइ तहवि दुप्पस्सा ।
पच्चक्खनाणिणोऽविहु राईभत्तं परिहरंति ॥ (९८-१-६)
६२ दोसे चैव विमग्गइ गुणदेसित्तेण निच्चमुज्जुत्ता ॥ (१३९-१-१५)
६३ संपुण्णमेवं तु भवे गणित्तं, जं कंखियाणं पविणेंति कंखं ।
(१४३-२-२)
६४ भीरु य किञ्चैवऽबला चला य, आसंकितेगा समणी

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मी
य
सू
क्ता
व
लि
॥

॥३९॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥४०॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

तु राओ । मा पुष्पभूयस्स भवे विणासो, सीलस्स थोवाण
ण हेति गंतुं ॥ (१४६-१-२)
६५ गुत्ते गुत्तदुवारे कुलपुत्ते इत्थिमज्झनिहेसे ।
भीतपरिसमद्विष अज्जासिज्जायरे भणिण ॥ (१४६-१-६)
६६ अपुव्वपुंसे अवि देहमाणी वारेसि धूतादि जहेव भज्जं ।
तहाऽवराहेसु ममंप्पि पेक्खे जीवो पमादी किमु जोऽवलाणं ॥
६७ पायं सकज्जोगहणाऽलसे य, बुद्धी परत्थेसु उ जागरू-
का । तमाउरो पस्सति नेहकत्ता, दोसं उदासीणजणो
जगं तु ॥ (१४७-१-१)
६८ कुलं विणासेइ सयं पयाता, नदीव कूलं कुलटा उ नारी ॥
(१४९-२-३)
६९ न चित्तकम्मस्स विसेसमंधो संजाणते णावि मियंककंतिं ।
किं पीढसप्पी कह दूतकम्मं, अंधो कहिं कत्थइ देसियत्तं ॥
बुद्धी बलं हीणवला वयंति किं सत्तजुत्तस्स करेइ बुद्धी ।
किं ते कही नेव सुता कयाई, वलुंधरेयं जह वीरऽभोज्जा ॥
(१५०-१-४)
७० वलया कोट्टागारा हेट्टाभूमी य होइ रमणिज्जा ।

वीणहि विप्पमुक्को उवस्सओ एरिसो होइ ॥ (१५७-१-५)
७१ जं जह सुत्ते भणियं तहेव जइ तं विथालणा नत्थि
किं कालियाणुओगो दिट्ठो दिट्ठिप्पहाणेहिं ॥ (१५९-२-१०)
७२ उस्सग्गसुयं किंची किंची अवयाइयं भवे सुत्तं ।
तदुभयसुत्तं किंची सुत्तस्स गमा मुण्येव्वा ॥ (१५९-२-१४)
७३ कत्थइ देसग्गहणं कत्थवि भण्णति निरवसेसाइ ।
उक्कमकमजुत्ताइं कारणवसओ निउत्ताइं ॥ (१६०-२-११)
७४ उस्सग्गेण निसिद्धाइं जाइं दव्वाइं संथरे मुणिणो ।
कारणजाते जाते सव्वाणिवि ताणि कप्पंति ॥ (१६१-१-१)
७५ णवि किंचि अणुण्णायं पडिसिद्धं वावि जिणवरिदेहिं ।
एसा तेसिं आणा कज्जे सचचेण होयव्वं ॥ (१६२-१-३)
७६ दोसा जेण निरुज्झंति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं ।
सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥ (१६२-१-८)
७७ अगीयस्स न कप्पति तिविहं जयणं तु सो न जाणाइ ।
अणुण्णवणाए जयणं सपक्खपरपक्खजयणं च ॥ (१६२-१-१५)
७८ ण हु सक्को सुत्तथो णिउणो खलु अपडिबोहिओ णाउं ।
(१६२-२-३)

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥४०॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥४१॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

७९ साहूणं वसहीणं रत्तिं महिला न कम्पय एंती । (१६७-२-१)
८० जागरह नरा णिच्चं जागरमाणस्स वड्डण बुद्धी । जो
सुवति न सो धण्णो जो जग्गति सो सया धण्णो (१६७-२-४)
सीयति सुवंताणं अत्था पुरिसाण लोगसारत्था ।
तम्हा जागरमाणा विधुणध पोरणयं कम्मं ॥ सुवति
सुवंतस्स सुत्तं संकितखलियं भवे पमत्तस्स । जागर-
माणस्स सुत्तं थिरपरिचितमप्पमत्तस्स ॥ जागरिया
धम्मीणं, अहम्मीणं च सुत्तया सेया । (१६७-२)
सुवइ य अयगरभूओ सुयं च से नासई अमयभूयं ।
होहिइ गोणभूओ नट्टुमि सुए अमयभूए ॥ (१६८-१-३)
८१ जं देउलादी उ निवेसणस्सा, मज्झंमि गुत्तं सुपुरोहडं च ।
अदुट्टगम्मं णय दुट्टमज्झे, अदूरगेहं तहियं वसंति ॥
जुवाणगा जे सविगारगा य, पुत्तादओ तुज्झ इहं वसंति ।
मा तेऽवि अम्हं इह संवयंतु, इच्छंति सत्ते य वसंति तत्थ ॥
(१८१-२-८)
८२ अच्चंतरे च वज्झं हरति रयं तेण होइ रयहरणं । (२०३-१-३)
८३ संजममहातडागस्स णाणव्रेरग्गसुण्डिपुणस्स ।

सुद्धपरिणामजुत्तो तस्स उ अणइक्कमो पाली । (२०६-२-५)
८४ तेलोक्कदेवमहिया तित्थयरा नीरया गया सिद्धि । थेरावि
गया केई चरणगुणपभावया धीरा ॥ वंभी य सुंदरी या
अन्नाविय जाउ लोगजिड्डाओ । ताओ चिय कालगया
किं पुण सेसाउ अज्जाओ ॥ नहु होइ सोइयव्वो जो
कालगतो दढो चरित्तंमि । सो होइ सोइयव्वो जो संजम-
दुव्वलो विहरे ॥ लद्धूण माणुसत्तं संजमसारं च दुल्ल-
भं जीवा । आणाइ पमाणं दोग्गइभयवड्डणा होति ।
(२१०-१-२)
८५ संतविभवा जइ तवं करेति अवउज्झिऊण इहीओ । सीयंत-
थिरीकरणं तित्थविवड्डी य वण्णो य । (२१२-२-११)
८६ सोऊण ऊ गिलाणिं पंथे गामे य भिक्खवेलाए ।
जइ तुरियं नागच्छइ लग्गइ गुरुए चउम्मासे ॥ (२१४-१-२)
८७ गव्वो निम्महवता निरवेक्खो निहयो निरंतरया ।
भूताणं तुवघाओ कसिणे चम्ममि छहोसा ॥ (२२३-२-२)
८८ विरतो पुण जो जाणं कुणति गीयत्थो व अप्पयओवा ।
तत्थवि अज्झत्थसमा संजायति णिज्जरा न चओ (२३३-१-५)

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥४१॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥४२॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

८९ संजमहेतुं जोगो पडज्जमाणो उ अदोसवं होइ ।
जह आरोगनिमित्तं गंडच्छेदो व विज्जस्स ॥ (२३५-१-१)
९० लक्खणहीणो उवही उवहणती णाणदंसणचरित्ते । (२३५-२-१२)
९१ जोवि दुवत्थ तिवत्थो एणेण अचेलगो व संथरइ ।
ण हु ते खिसंति परं सव्वेणवि तिवि घेत्तव्वा ॥ (२३९-२-१३)
९२ गिण्हति गुरुविदिण्णे पगास पडिलेहणे सत्त ॥ (२४०-१-२)
९३ जो उ गुणो दोसकरो न सो गुणो दोसमेव तं जाण ।
अगुणोऽवि होति उ गुणो विणिच्छओ सुंदरो जस्स ॥
(२४७-१-५)
९४ न भूसणं भूसयते सरीरं, विभूसणं सीलहिरीव इत्थी ।
गिरा हि संखारजुयावि सन्ती अपेसला होइ असा-
हुवाइणी ॥ (२५५-२-१२)
९५ उदओवि खलु पसत्थो तित्थकराहारउदयादी ॥ (२७०-२-६)
९६ मूर्खजने प्रकृतिरेषा यद् तथाविधिज्ञानविकलोऽपि एष
औद्धत्यमुद्रहति । (२८७-१-६)
९७ दुवियहुवुद्धिमलणं सद्धा सेज्जायरेयराणं च ।
तित्थविवट्टिपभावण असारियं चेव कहयंते ॥ (२९१-२-५)

९८ जहा तवस्सी धुणते तवेणं, कम्मं तहा जाण तवो-
णुमन्ता ॥ (२९२-१-८)
९९ यस्तं झुलुकं सारयति शिक्षां ग्राहयति उभयं च संज्ञा-
कायिकीलक्षणं तदीयं यो नयति तस्यैव पार्श्वं तं कुर्वन्ति ॥
(२९२-२-३)
१०० यस्य खेलः स्यन्दते तस्य मध्येऽवकाशः समायातः
ततस्तेन विमुक्तेऽवकाशे यस्य संस्तारकः सोऽनुज्ञापनी-
यः, यः पित्तलः स प्रवाते स्थातुमभिलषति, यस्तु वातलः
स निवाते, एतयोः परस्परं संस्तारकपरावर्त्तः (२९२-२-११)
तृतीये खंडे-
१०१ जह ते अणुद्धिहंता हियसव्वस्सा उ दुक्खमाभागी ।
तह नाणे आयरियं अणुद्धिहंताण वोच्छेदो ॥ (४-१-१०)
१०२ उट्ठाणसेज्जासणमासणेहिं, गुरुस्स जे होति सयाणुकूला ।
णाउं विणीए अहते गुरू ऊ संगिण्हई देइ य तेसि सुत्तं ॥
पज्जायजाई सुतओ य बुद्धा, जच्चवणिण्या सीससमिद्धिमंता
कुवंतऽवणं अह ते गणाओ, निज्जूहई णो य ददाइ
सुत्तं ॥ (४-२-१)

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

॥४२॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥४३॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

- १०३ परपक्खे य सपक्खे होइ अगम्मत्तणं च उट्ठाणे । सुय-
पूयणा थिरत्तं पभावणा निज्जरा चेव ॥ (५-१-६)
१०४ अकारणा नत्थिह कज्जसिद्धी, न याणुवाएण वयंति
तण्णा । उवायवं कारणसंपउत्तो कज्जाणि साहेइ
पयत्तवं च ॥ (५-१-११)
१०५ धम्मस्स मूलं विणयं वयंति, धम्मो य मूलं खलु
सोग्गईए । सा सोग्गई जत्थ अवाहयाऊ णिसंविताव्वो
विणओ तदट्ठा ॥ (५-२-१)
१०६ मंगल सद्धाजणणं विरियायारो न हाविओ चेव । एएहिं
कारणेहिं अतरंतगिलाण उट्ठाणं (५-२-१)
१०७ आचार्यं चक्रमणं कुर्वाणं दृष्ट्वा नाभ्युत्तिष्ठति पंचकं,
प्रश्रवणभूम्या आगतं नाभ्युत्तिष्ठति भिन्नमासः ॥ (६-१-६)
१०८ मणो उ वाया काओ य, तिविहो जोगसंगहो । ते
अंजुत्तस्स दोसाय, जुत्तस्स उ गुणावहा ॥ (६-१-६)
१०९ जह गुत्तस्स रियाई न होंति दोसा तहेव समियस्स ।
गुत्तीट्ठियण्णमायं संभइ समिई सचेट्ठस्स ॥ (६-२-१)
११० जहि नत्थि सारणा वारणा य पडिचोयणा य गच्छंमि ।

- सो उ अगच्छो गच्छो संजमकामीण मोत्तव्वो ॥ (७-१-६)
१११ नाणादितिगं मोत्तुं कारणमिहलोगसाहगं होइ ।
पूयागारवहेउं णाणग्गहणेऽवि एमेव ॥ (१२-१-१)
११२ सेदीअणट्ठिआणं कितिकम्मं बाहिराण भइयव्वं ।
सुत्तथजाणएणं कायव्वं आणुपुव्वीए ॥ (१४-२-१)
११३ निच्छयओ दुण्णेयं को भावे कांमे वट्ठई समणो ? ।
ववहारओ य कीरइ जो पुव्वठिओ चरित्तंमि ॥ (१५-१-२)
११४ ववहारोविहु बलवं जं छउमत्थंमि वंदए अरिहा ।
जा होइ अणाभिन्नो जाणंतो धम्मयं एयं ॥ (१५-१-५)
११५ ते कित्तिया पएसा सव्वागासस्स मग्गणा होइ ।
ते जत्तिया पएसा अविभागतओ अणंतगुणा ॥ (१५-१-५) ।
११६ अच्छित्तिसंजमट्ठा पालंति जती जतिजणं तु ॥ (१९-२-३)
११७ तुच्छमवलंबमाणो पडति निरालंबणो य दुग्गंमि ॥ (१९-२-१०)
११८ दंसणनाणचरित्तं तवविणयं जत्थ जत्तियं पासे ।
जिणपन्नत्तं भत्तीइ पूयए तं तहिं भावं ॥ (२३-१-३)
११९ ठाणं च कालं च तहेव वत्थुं आसज्ज जे दोसकरे
व ठाणे । तेणेव अणस्स अदोसवंते, भवंति रोगिस्स व

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥४३॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥४४॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

भोसहाइं ॥ २४-२-७
किं जाणंति वराया हलं जहत्ताण जे उ पव्वइया ।
एवंविहो अवण्णो मा होहिइ तेण कथयंति । २६-१-५
१२० जं इच्छसि अप्पणतो जं च न इच्छसि अप्पणतो ।
तं इच्छ परस्स वियारह, इत्तियगं जिणसासणयं ॥ २७-१-२
१२१ सव्वारंभपरिग्गहनिकखेवो सव्वभूयसमया य ।
एक्कगमणसमाहाणया य अह एत्तिओ मोक्खो ॥
(२७-१-४)
१२२ सव्वभूयऽप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं पासओ ।
पिहियासवस्स दंतस्स पावं कम्मं न वंधइ ॥ (२७-१-७)
१२३ साणेण कहेयव्वा तयणियमकहा विरागसंजुत्ता ।
जं कोऊण मणूसो वच्छर संणैमिअवेयं ॥ (२७-२-५)
१२४ अण्णापि ताव तेणं इह परलोकेऽपहारिणाम्हियं ।
परओ जायितलइं किं पुण मणुप्पहरणेसु ॥ (३२-२-१)
१२५ तूरह धम्मं काउं मा हु पमायं खणायि कुव्वित्था ।
वहुविग्घो हु मुहुत्तो मा अवरणं पडिच्छाहि ॥
(३८-२-८)

१२६ अणवज्जं निरुवहयं भुंजंति य साहुणो भिक्खं ॥ ५२-१-९
१२७ अतिसेसदेवतणिमित्तमादिअवितहपवित्ति सोऊणं ।
णिग्गमण होइ पुव्वं अणागते रुद्धवोच्छिण्णे ॥ (५४-१-१२)
१२८ आराहणा उ कप्पे विराहणा होइ दप्पेणं । (७२-१-१)
१२९ कामं सव्वपदेसुवि उस्सग्गववायता जुत्ता ।
मोत्तुं मेहुणभावं ण विणा सो रागदोसेहिं ॥ (७२-१-२)
१३० गीयत्थो जयणाए कडजोगी कारणमि निहोसो । ७२-१-११
१३१ तिद्वकसायपरिणतो तिद्वयरागाणि पावइ भयाणि ।
मयगस्स दंतभंजण सममरणं ढोक्कणुक्किरणे ॥ ७८-१-७
१३२ अतिशयज्ञानी वा उपशान्तोऽयमिति मत्वा तस्यापि
(कपायदुष्टस्यापि) लिंगं दद्यात् । (७८-२-१)
१३३ सव्वेहि वि धेत्तव्वं गहणे य निमंतणे य जो उ विही ।
भुंजंती जयणाए अजयणदोसा इमे हुंति ॥ (७८-२-१)
१३४ गुरुभत्तिमं जो हिययाणुकूलो, सो गिण्हती णिस्सम-
णिस्सितो वा । तस्सेव सो गिण्हति णेयरेसिं, अलब्भ-
माणमि च थोवं थोवं ॥ ७९-१-१
१३५ भुंचेइ य सावसेसं जाणइ उवयारभणियं च ॥ (७९-१-४)

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

॥४४॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥४५॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

१३६ गुरुणो भक्तुञ्जरियं बालादसती य मंडलिं जंति ।
जं पु ण सेसगहितं गिलाणमादीण तं देंति ॥ (७९-१-७)
१३७ परमवभाषितलाभं मुक्त्वा स न मण्डल्यां प्रक्षिप्यते,
किंतु ग्लानादीनामेव दीयते । (७९-१-११)
१३८ लिंगेण लिंणिणीए संपत्तिं जो नियच्छइ पावो ।
सव्वजिणाणज्जाओ संघो आसाइओ तेणं ॥ (७९-२-७)
१३९ पावाणं पावयरो दिट्ठिभासे न वट्ठई काउं ।
जो जिणपुंगवमुहं नमिऊण तमेव धरिसेइ ॥ (७९-२-११)
१४० संसारमणवयग्गं जाति जरामरणवेयणापउरं ।
पावपडलमलच्छणा भमंति मुदाधरिसणेणं ॥ (७९-२-१२)
१४१ आणादणंतसंसारियत्त बोहीय दुल्लभत्तं च ।
साहम्मियतेणंमी पमत्तछलणाऽहिगरणं च ॥ (८८-२-१३)
१४२ विणयस्स उ गाहणया कण्णामोडगखडुचवेडाहिं ।
सावेक्ख हत्थतालं दलाति मम्मणि फेडितो ॥ (९२-१-३)
१४३ कामं परपरितावो असायहेऊ जिणेहिं पणत्तो । आय-
परहितकरो खलु इच्छिज्जइ दुस्सले स पुण ॥ (९२-१-१०)
१४४ इय भवरोगत्तस्सवि अणुकूलेणं तु सारणा पुब्बि ।

पच्छा पडिकूलेणवि परलोगहियट्ठ कायव्वा ॥ (बृहद्भाष्यं)
(९२-२-५)
१४५ संविग्गो मइविओ अमुई अणुवत्तओ विसेसण्ण ।
उज्जुत्तमपरितंतो इच्छियमत्थं लहइ साहू ॥ (९२-२-८)
१४६ पुव्वावरसंजुत्तं वेरग्गकरं सतंतमविरुद्धं ।
पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं (१०३-१-३)
१४७ इहरा व ताव थंमइ अविणीओ लंभिओ किमु सुएणं ? ।
मा नट्ठो नासिहिती खए व खारोवसेओ उ ॥ (१०५-१-५)
१४८ विणयाहीया विज्जा देइ फलं इह परे लोगंमि ।
न य फलइ विणयहीणा सस्साणिव तोयहीणाइ ॥ (१०५-१-७)
१४९ अतवो न होइ जोगो न य फलए इच्छियं फलं विज्जा ।
अवि फलति विउलमगुणं साहणहीणा जहा विज्जा ॥
(१०५-२-२)
१५० जं तेहि अभिग्गहियं आमरणंताए तं न मुंचंति ।
सम्मत्तपि न लग्गति तेसिं कत्तो उ चरणगुणा ॥ (१०९-२-२)
१५१ मोक्खपसाहणहेऊ णाणाई तण्पसाहणो देहो ।
देहट्ठा आहारो तेण तु कालो अणुणाओ ॥ (१११-१-१)

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥४५॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥४६॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

१५२ काले उ अणुणाए जइवि हु लग्गिज्ज तेहि दोसेहिं ।
सुद्धोऽबुवादिणंतो लग्गति उ विवज्जयपरेणं ॥ (११७-१-१४)
१५३ कालसरीरावेक्खं जगस्सभावं जिणा वियाणिता ।
तह तह दिसंति धम्मं खिज्जति कम्मं जहा अखिलं ॥
(१२८-१-८)
१५४ आचार्य उपाध्यायो वा तस्य स्वगणे सूत्रार्थविषये
विस्मृते गच्छान्तरे संक्रमणं । (१२८-२-१)
१५५ पडिलेहि दिअतुअट्टण निक्खिवादाण विणय सज्जाए ।
आलोग ठवण भत्तट्टभासपडलसेज्जराईसु ॥ गच्छसी-
दनस्थानानि ॥ (१४०-२-१०)
१५६ जो जेण जंमि ठाणंमि ठाविओ दंसणे व चरणे वा ।
सो तं चुअं तओ तंमि चेव काउं भवे निरणो ॥ (१४४-१-८)
१५७ सव्वेवि मरणधम्मा संसारी तेण कासि मा सोगं ।
जं चऽप्पणोऽवि होहिति किं तत्थ भयं परगयंमि ? ॥
(१४७-१-१३)
१५८ अविओसियंमि लहुगा भिक्ख वियारे य वसहि गासे य ।
गणसंक्रमणे भण्णति इहंमि तत्थेव वच्चाहि ॥ (१५४-१-८)

१५९ दोसा हु अणुवसंते न सुज्झई तस्स सामाइयं ॥ (१५९-१-१५)
१६० नाणस्स होइ भागी थिरयरो दंसणे चरित्ते य ।
धन्ना आवकहाए गुरुकुलवासं न मुंचंति ॥ (१७२-१-१५)
१६१ भी(गी)यावासो रई धम्मे, अणाययणवज्जणा ।
निग्गहो य कसायाणं, एयं धीराण सासनं ॥ (१७२-२-३)
१६२ जइमं साहुसंसग्गि न वि मोक्खसि विमोक्खसि ।
उज्जतो व तवे निच्चं तओऽवाहो न होहिसि ॥
१६३ सच्छंदवत्तिया जेहिं, सग्गुणेहि जढा जढा । अप्पणो ते
परेसिं च, निच्चं सुविहिया हिया ॥ जेसिं चायं गणे वासो,
सज्जणाणुमओ मओ । दुहा वाऽऽराहियं तेहिं, निव्विकप्प-
सुहं सुहं ॥ नवधम्मस्स हि पाएण, धम्मे न रमती मती ।
वहए सोऽवि संजुत्तो, गोरिवाऽविधुरं धुरं ॥ एगागि-
स्स हि चित्ताइ, विचित्ताइं खणे खणे । उप्पज्जंति वयंते
य, वसेवं सज्जणे जणे ॥ (१७३-१)
१६४ वसिज्जा बंभवेरंसि भुज्जमाणी उ कादि उ । तहावि तं
न पृइंति, थेरा अयसभीरुणे ॥ तिक्वाभिग्गहसंजुत्ता,
थाणमोणासणे रया । जहा सुज्जंति जयओ, एगाणेग-

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

॥४६॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्पसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलि

॥४७॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
प्र
हे
भा
गः
८

विहारिणो ॥ लज्जं बंधं च तित्थं च, रक्खंतीउ
तवोरता । गच्छे चेव विसुज्झंती, तथा अणसणादिहिं ॥
जोवि दद्धिधणो हुज्जा, इत्थिचिधो हु केवली । वसते
सोवि गच्छमी, किमु त्थीवेदसिधणा ? ॥ अलायं घट्टियं
झाइ, फुंफुगा हसहसायइ । कोचितो वड्ढती वाही,
इत्थीवेएऽवि सो ममो ॥ (२००-२-१२)
१६५ खामियवोसवियाइं अहिगरणाइं तु जे उईरंती ।
ते पावा णायव्वा तेसिं व परूवणा इणमो ॥ (२२२-१-८)
१६६ रागद्दोसाणुगया जीवा कम्मस्स बंधगा होंति ।
रागादिविसेसेण य बंधविसेसोवि अविगीओ ॥ (२३५-१-३)
१६७ जो पिल्लिओ परेणं हेऊ वसणस्स होइ कायाणं ।
तत्थ न दोसं इच्छसि लोणेण समं तथा तं च ॥ (२३५-२-३)
१६८ विसस्स विसमेवेह ओसहं अग्गिमग्गिणो ।
मंतस्स पडिमंतो उ, दुज्जणस्स विवज्जणं ॥ (२४०-१-१४)
१६९ य उपशमनालब्धिमान् तेनोपशमितव्यः कलहः, नोपेक्षा
विधेया (अन्यथा) स्वशक्तेः नैष्कल्यमुपेक्षानिमित्ता
प्रायश्चित्तापात्तिश्च । (२४०-२-१५)

१७० आलोएंतो वच्चति धूमादीणि व कहेति वा धम्मं ।
परिवट्टणाणुपेहण न यावि पंथमि उवउत्तो ॥ (चक्षुर्लोः)
(२४८-१-१४)
१७१ इहपरलोयनिमित्तं अवि तित्थकरत्तचरमदेहत्तं ।
सव्वत्थेसु भगवया अणिदाणत्तं पसत्थं तु ॥ (२४८-२-१२)
१७२ जा सालंबणसेवा तं वीयपरं वयंति गीयत्था ।
आलंबणरहियं पुण निसेवणं दप्पियं वेंति ॥ (२५०-१-४)
१७३ संगं अणिच्छमाणो इहपरलोय य मुच्चति अवस्सं ॥
(२५०-२-८)
१७४ छण्हं जीविकायाणं, अप्पज्झो उ विराहओ ।
आलोइयपडिक्कंतो मूलच्छेज्जं तु कारण ॥ (२५८-१-११)
१७५ अप्पच्छित्ते य पच्छित्तं, पच्छित्ते अइमत्तया ।
धम्मस्साऽऽसायणा तिक्वा, मग्गस्स य विराहणा ॥
उस्सुत्तं च ववहरंतो, कम्मं बंधइ चिक्कणं । संसारं
च पवहेती मोहणिज्जं च कुव्वती ॥ उम्मग्गदेसणाए
य, मग्गं विण्णडिवायए । परं मोहेण रज्जिते, महामोहं
पकुव्वति ॥ (२५८-२)

बृहत्कल्पस्य
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
प्र
हे
भा
गः
८

॥४७॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [बृहत्कल्प+व्यवहारसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥४८॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

- १७६ जति दोसो तं छिंदति असति दोसंमि निज्जरं कुणति ।
कुसलतिणिच्छरसायणमुवणीयमिदं पडिक्कमणं ॥ (२५९-१-४)
१७७ एवं ठियंमि मेरं अट्टियक्कप्पे य जो पमादेति ।
सो वट्टति पासत्थे ठाणंमि तगं विवज्जेज्जा ॥ (२६०-१-९)
सरिक्कप्पे सरिच्छंदे तुल्लचरित्ते विसिद्धतरण वा ।
साह्महि संथवं कुज्जा नाणीहिं चरित्तगुत्तेहिं ॥ मध्यम-
तीर्थकृतां महाविदेहेषु च तीर्थेषु नास्ति परिहार-
कल्पस्थितिः (२६१-१-११)
१७८ यावद्भिः पारिहारिकगण ऊनस्तावत्साध्वन् उपसंप-
दर्थमागतानां मध्याद्गृहीत्वा गणः पूर्यते, ये शेषाः
ते पारिहारिकतपस्तुलनां कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति, ते च
पारिहारिकैः सार्धं तिष्ठन्तोऽपि अविरुद्धाः ॥ (२६३-१-९)
१८० यदि नव जनाः पूर्णाः ततः पृथग् गणो भवति, अथापूर्णा-
स्ततः प्रतीक्षाप्यन्ते यावदन्ये उपसंपदर्थमागच्छन्ति ।
(२६३-१-१३)
१८१ अनुपरिहारिकाः पारिहारिकाणां भिक्षादौ पर्यटतां
गोपाला इव गवां पृष्ठतः स्थिता नित्यमुद्युक्ताः प्रयत्न-

वन्तः आयुक्ता उपयुक्ता हिण्डन्ति-वाचनां च मुक्त्वा
नास्त्यन्या परस्परं संकथा, चत्वारोऽनुपरिहारिकाः
एकश्च कल्पस्थितस्तेषां पञ्चानामप्येक एव संभोगः,
यस्तु कल्पस्थितः स स्वयं न हिण्डते तस्य योग्यं भक्त-
पानमनुपरिहारिका आनयन्ति (२६३-२-१५)

अथ व्यवहारसूक्तानि

तृतीयोद्देशके

- १ जाया पितिवसा नारी, दत्ता नारी पतीवसा ।
विहवा पुत्तवसानारी, नत्थि नारी सयंवसा ॥ (३०४-१-४)
२ जायं पिय रक्खंती मात पिय सासु देवरा दिण्णं ।
पिति भाय पुत्त विहवं गुरु गणिणी य एव अज्जं पि ॥ या एगाणि
या य पुरिसा सकवाडं घर परं तु नो पविसे ॥ (३०४-१-९)
३ आयारे वट्टतो आयारपरूवणे असंकेओ ।
आयारपरिब्भट्टो सुद्धचरणदेसणे भइओ (३१४-१-१४)
४ संघो गुणाण पाओ संघो य विमोयगो य कम्माणं ।
रागदोसविमुक्को होइ समो सब्वजीवाणं । (३१४-२-५)

बृहत्कल्प-
व्यवहारयोः
सूक्तानि

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

॥४८॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सूक्तावलि [व्यवहारसूक्तानि]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥४९॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धार
सं
ग्र
ह
भा
गः
<

- ५ परीणामियबुद्धीए उववेओ होइ समणसंघाओ ।
कज्जे निच्छयकारी सुपरिच्छिय कारणो संघो ॥ (३१४-२-९)
- ६ आसासो बीसासो सीयघरसमो य होइ मा भाहि ।
अम्मापितिसामाणो संघो सरणं तु सव्वेसिं ॥ (३१५-१-६)
- ७ सीसो पडिच्छओ वा कुल गण संघो न सोग्गतिं नेति ।
जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएति ॥ (३१५-१-१४)
- ८ सीसो पडिच्छतो वा आयरिओ वा न सोग्गइ नेय ।
जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएति ॥ (३१५-१-९)
- ९ गिहिसंघायं जहिउं संयमसंघायगं उवगओ णं ।
णाणचरणसंघायं संघायं तो हवइ संघो । (३१५-२-७)
- १० नाणचरणसंघायं रागहोसेहिं जो विसंघाए ।
अबुहो गिहिसंघायंमि अप्पाणं मेलिओ न से संघो (३१५-२-७)
- ११ नाणचरणसंघायं रागहोसेहिं जो विक्सिणुए ।
सो भमिही संसारे चउरंगगतं अणवद्गं ॥ (३१५-२-७)
- १२ दुक्खेण लहइ बोहिं बुद्धोवि य न लभते चरित्तं तु ।
उम्मग्गदेसणाए तित्थंकरासायणाए यं ॥ (३१५-२)
- १३ इहलोए य अक्किती परलोए दुग्गई धुवा तेसिं ।

- अणणाए जिणिदाणं जे ववहारं ववहरंति ॥ (३१७-१-१०)
 - १४ एते उ कज्जकारी तगराए आसि तम्मि उ जुगम्मि ।
जेहिं कया ववहारा अक्खोभा अन्नरज्जेसु ॥ ३१७-१-१५
 - १५ परिवार इहि धम्मकह वादि खमगे तहेवऽहमिहिं ।
विज्जा रायणियाए गारवा इत्ति अट्टहा होइ ॥ (३१८-२-३)
 - १६ न हु गारवेण सक्का ववहरिउं संघमज्झयारम्मि ।
नासेइ अगीयत्थो अप्पाणं चेव कज्जं तु ॥ (३१९-१-३)
- इत्यागमीयसूक्तानि

--- X --- X --- X --- X ---

व्यवहारस्य
सूक्तानि
श्री आगमीयसु-
भाषितानि
च

॥४९॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय सुभाषित-वाक्यानि

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

आगमीय सुभाषित-वाक्यानि

अथागमीयसुभाषितवाक्यानि

- १ सुधोतं शुद्धं निर्मलं जलानुगतं। (विशे० ५७३)
- २ किं? 'विघ्नः' अन्तरायो निर्घातादिभिर्जायते?, आदि-
शब्दादिगदाहादिपरिग्रहः, 'तस्य' इन्द्रस्य परमेश्वर्ययुक्त-
त्वेन विघ्नानुपपत्तेरिति भावना, अथ वर्धति ऋतुसमये
गर्भसङ्घात इति वाक्यशेषः। (द०-६६)
- ३ अशक्यप्रत्युपकाराश्च भगवन्तो धर्माचार्याः (ठा०-११७)
- ४ जल्लेसाई दव्वाई परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उव-
वज्जइ। (भ०-१८८)

सं
प्र
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

॥४९॥

- ५ प्रणिपतितवत्सलाः प्रणम्रजनहितकारिणः खलु उत्तम-
पुरुषाः। (जं० २४७)

--- X --- X --- X --- X ---

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[३]
आगमीय संग्रह-श्लोकाः

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय संग्रह-श्लोकाः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावली
॥५०॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

अथागमीयसंग्रहश्लोकाः

- १ पिंडे उगमउप्पायणेसणा [सं] जोयणा पमाणं च ।
इंगाल धूम कारण अट्टविहा पिंडनिज्जुत्ती ॥ (पि० १-१०)
- २ उभयमुहं रासिदुगं हिट्टिलाणंतरेण भय पढमं ।
लद्धहरासिविभत्ते तस्सुवरि गुणित्तु संजोगा ॥ (पि० २१-२२)
- ३ पयसमदुगअवभासे माणं भंगाण तेसिमा रयणा ।
पगंतरियं लद्धगुरु दुगुणा दुगुणा य वामेसु ॥ (पि० १५३-२०)
- ४ उपक्रमोऽथ निक्षेपोऽनुगमश्च नयाः क्रमात्
द्वाराण्येतानि भिद्यन्ते, द्वेधा त्रेधा द्विधा द्विधा ॥
उपक्रम उपक्रान्तिर्दूरस्थनिकटक्रिया ।
निक्षेपणं तु निक्षेपो, नामादिन्यसनात्मकः ॥
सूत्रस्यानुगतिश्चित्राऽनुगमो नयनं नयः ।
अनन्तधर्मेणोऽर्थस्यैकांशेनेति निरुक्तयः ॥
न्यासदेशागतं शास्त्रं, न्यस्यते न्यस्तमेव तत् ।

- अन्वीयतेऽन्विते नीतिस्तेनैतेषामयं क्रमः ॥ (उत्त० ११-५)
- ५ शुद्धं द्रव्यं समाश्रित्य, सङ्ग्रहस्तदशुद्धितः ।
नैगमव्यवहारौ स्तः, शेषाः पर्यायमाश्रिताः ॥
अन्यदेव हि सामान्यमभिज्ञानकारणम् ।
विशेषोऽप्यन्यमेवेति, मन्यते नैगमो नयः ॥
सद्रूपतानतिक्रान्तस्वस्वभावमिदं जगत् ।
सत्तारूपतया सर्वं, सङ्गृह्यन् सङ्ग्रहो मतः ॥
व्यवहारस्तु तामेव, प्रतिवस्तुव्यवस्थिताम् ।
तथैव दृश्यमाणत्वाद्, व्यवहारयति देहिनः ॥
तत्रर्जुसूत्रनीतिः स्यात्, शुद्धपर्यायसंस्थिता ।
नश्वरस्यैव भावस्य, भावात्स्थितिवियोगतः ॥
अतीतानागताकारकालसंस्पर्शवर्जितम् ।
वर्तमानतया सर्वमृजुसूत्रेण सूड्यते ॥
विरोधिलिङ्गसङ्ख्यादिभेदाद्भिन्नस्वभावताम् ।
तस्यैव मन्यमानोऽयं, शब्दः प्रत्यवतिष्ठते ॥
तथाविधस्य तस्यापि, वस्तुनः क्षणवृत्तिनः ।
वृत्ते समभिरूढस्तु, संज्ञामेदेन भिद्यताम् ॥

आगमीय-
सुभाषिता-
नि संग्रह-
श्लोकाश्च

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

॥५०॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय संग्रह-श्लोकाः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
सूक्तावलौ
॥५१॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

- एकस्यापि ध्वनेर्वाच्यं, सदा तन्नोपद्यते ।
क्रियाभेदेन भिन्नत्वादेवंभूतोऽभिमन्यते ॥ (ठा० ३९३-४)
६ दुक्खाउए उदिन्ने आहारे कम्मवन्नलेस्सा य ।
समवेयणसमकिरिया समाउए चेव वोद्धव्वा ॥ (भ० ४१-४)
७ आहाराईसु समा कम्मे वन्ने तहेव लेसाए ।
वियणाए किरियाए आउयउववत्तिचउभंगी ॥ (४३-१)
८ कडचिया उवचिया उदीरिया वेदिया य निज्जिन्ना ।
आदितिए चउमेदा तियमेदा पच्छिमा तिन्नि ॥ (५३-१०)
९ तइएण उदीरेंति उवसामेंति य पुणोवि वीएणं ।
वेइंति निज्जरंति य पढमचउत्थेहिं सव्वेऽवि ॥ (५९-११)
१० कइ पयडी कह वंधइ कहहि व ठाणेहि वंधई पयडी ।
कइ वेदेइ य पयडी अणुभागो कहविहो कस्स ? (६३-१)
११ पुढवि द्वित्ति ओगाहण सरीर संघयणमेव संठाणे ।
लस्सा दिट्ठी णाणे जोगुवओगे य दस ठाणा ॥ (६८-४)
१२ वेयणं कसायं मरणे वेउवियं तेयणं य आहारे ।
केवलिए चेव भवे जीवमणुस्साण सत्तेव ॥ (१२९-२३)
१३ सवणे णाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।

- अणणहए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥ (१४१-१)
१४ किमियं रायणिहति य उज्जोए अंधयार समए य ।
पासंतिवासिपुच्छा रातिदिय देवलोगा य ॥ (२४८-१४)
१५ महावेदणे य वत्थे कदमखंजणमए य अहिगरणी ।
तणहत्थे य कवळे करण महावेदणा जीवा ॥ (२५२-१५)
१६ तमुकाए कप्पपणए अगणी पुढवी य अगणिपुढवीसु ।
आऊतेऊवणस्सइ कप्पुवरिमकणहराईसु ॥ (भ० २७९-२)
१७ संविन्निण्डैव सर्वाऽपि, विषयाणां व्यवस्थितिः । संवेदनं
च नामादिविकलं नानुभूयते ॥ तथाहि-घटोऽयमिति नामै-
तत्, पृथुबुध्नादि चाकृतिः । मृद्द्रव्यं भवनं भावो, घटे
दृष्टं चतुष्टयम् ॥ तत्रापि नाम नाकारमाकारो नाम नो
विना । तौ विना नाम नान्योऽन्यमुत्तरावपि संस्थितौ ॥
मयूराण्डरसे यद्वद्वर्णा नीलादयः स्थिताः ।
सर्वेऽप्यन्योऽन्यमुन्मिश्रास्तद्वन्नामादयो घटे ॥ (जं० १३-१)

इत्यागमीयसंग्रहश्लोकाः

इत्यागमीयसूक्तावलि १ सुभाषित २ संग्रहश्लोकाः ३

--- X --- X --- X --- X ---

आगमीय-
संग्रह-
श्लोकाः

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

॥५१॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[४]

आगमीय लोकोक्तयः

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [नन्दी+अनुयोग+आवश्यक-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥५२॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

अथ नन्दीलोकोक्तयः

अहिंसाव्यवस्थितः तपस्वी । (४७-१)
पात्रमायान्ति सम्पदः । (८१-१४)
हस्ती हस्तिना प्रेर्यते । (१५०-२)
ज्ञानं प्रत्ययसारम् । (१६०-९)
हन्यतामेष दण्डेनाश्वः । (१६३-१८)
कस्यापि दूरे शब्दः । (१७२-४)
दूरे शब्दः श्रूयते । („ ९)
न वयं प्रत्यासन्ना अपि त्वदीयं वचः शृणु-
मः पवनस्य प्रतिकूलमवस्थानात् ।
(१७२-१४)

अथानुयोगद्वारलोकोक्तयः

अभाषक एवायं द्रष्टव्योऽसारवचनत्वात्
(१४३-१)
प्रस्थकादिरयं पुञ्जीकृतस्तिष्ठति । (१५२-१६)

अथागमीयलोकोक्तयः

तत्किमपीदं भवद्भिः कृतं यद्भवन्त एव
कुर्वन्ति नान्यः कश्चिदिति । (२१८-१०)
लोके च पूर्वोक्तावस्थासु सर्वत्र प्रस्थक-
व्यवहारो दृश्यतेऽतो व्यवहारनयोऽप्येव-
मेव प्रतिपद्यत इति भावः । (२२३-२४)
लोकेऽप्येवं व्यवहृतिर्दृश्यते, यथा कश्चि-
दाह—मदीयदासेन खरः क्रीतः, तत्र
दासोऽपि मदीयः खरोऽपि मदीयः,
दासस्य मदीयत्वात् तत्क्रीतः खरोऽपि
मदीय इत्यर्थः । (२३६-२)
आकण्ठपूरिता अपि हि लोकरूढ्या भृता
उच्यन्ते । (२३६-१९)

अथावश्यकलोकोक्तयः

तथा च लोके वक्तारो भवन्ति-अमुञ्च मे
गते मनः इति । (१३-९)

मणसा देवाणं वायाए पत्थिवाणं ।
(६३-१४)
ओसीसए सप्पो जोयणसए विज्जो किं
करेहिति? । (६४-११)
पिउं ते जीएणं पंगपि तिलं न खामि ।
(९०-६)
जो करेइ सो पसंसिज्जइ सब्बो(ब्बो)
लोगववहारोत्ति । (११८-७)
राया करेइ दंडं । (१२७-१७)
जितो भवान् (कषायैः) वर्धते भयम्
(तेभ्यः) । (१५७-१६)
अग्निकुमारा वदनैः खलु अग्निं प्रक्षिप्त-
वन्तः, तत एव निबन्धनालोके 'अग्निमुखा
वै देवाः' इति प्रसिद्धम् । (१६९-६)
आचका देवान् अतिशयभक्त्या याचि-
तवन्तः, देवा अपि तेषां प्रचुरत्वात् महता

नन्दिनयो-
गद्वाराव-
श्यकानां
लोकोक्तयः

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

॥५२॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [आवश्यक-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ५३ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

यत्नेन याचनाभिद्रुता आहुः-अहो याचका
अहो याचका इति, तत एव हि याचका
रूढाः । (१६९-१६)
अग्निं गृहित्वा स्वगृहेषु स्थापितवन्तः,
तेन कारणेन आहिताग्नय इति ।
(१६९-१७)
भोगा अवमाणमूलंति । (१७३-१०)
जाव तरुणो वाहि ताव तिगिच्छामि ।
(२२४-८)
अनेन निमित्तेन-अनेन कारणेन मयेदं
प्रारब्धम्, अनेन कार्येणेत्यर्थः ततश्च भव-
त्यनावाधकार्यम् । (२८०-१४)
लोकेऽपि गत्यागतिलक्षणं-रूढी य घडो
चूतो दुमोत्ति नीलोप्पलं च लोगंमि ।
जीवो सचेयणोत्ति य विगप्पनियमादो
भणिया ॥ १ ॥ (२८१-२२)
लोगो कामियकामियओ । (२९४-१२)

उज्जोयं करिस्सामि अंधकारतरं कयं ।
(३०२-१५)
पुरिसो वा पुब्बं कामभोगे विप्पजहति,
कामभोगा वा पुब्बं पुरिसं विप्पजहयंति ।
(३५७-१५)
अलं वा परबुद्धिमान्धप्रदर्शनेन ।
(३७७-३)
अणुकपाए नइसरिस्ता रायाणो ।
(३७८-१८)
पासत्थाई अकल्लाणमिन्ता । (३८५-१२)
साडियं रक्खेज्जासि । (३९४-२)
न शक्यं त्वरमाणे प्राप्तुमर्थान् सुदुर्ल-
भान् । भार्या च रूपसम्पन्नां, शत्रूणां च
पराजयम् ॥ (३९९-११)
डंभएहि लोगो खज्जइति । (४१३-१)
सच्चं सुव्वइ एयं-मेहनइसमा हवंति
रायाणो । भरियाइं भरंति ददं रिच्चं

जत्तेण वज्जेइ ॥ १ ॥ (४१३-१५)
जले नट्टं जले चैव लब्धइ । (४१४-११)
निव्वहियव्वा य पइण्णत्ति (४१४-३)
वीरभोज्जा पुहवी । (४३४-५)
वस्तुतस्तुल्यबलयोर्विचारः श्रेयान् ।
(४५१-२०)
फलं अत्थि मणविसुद्धीए । (५२५-२१)
पुण्यफलो जिनगुणसङ्कल्पः । (५२६-११)
कलिणा कलीं घस्सउ । (५७७-२२)
णाणायट्ठा दिक्खा । (६२८-१९)
जडुस्स न कण्णई दिक्खा । (६२८-२०)
माउट्टे बुज्झ गुज्झया ? । (६३३-४)
जइ मए गए देइ तो देइ । (६९४-६)
जो सूरु वीरो विकंतो सो पुण रज्जं दिज्जा ।
(७०३-८)
कओ मुहो ते वाओ वाइ । (७१२-२)
वंदामि निमित्तिगल्लमणंति । (७१२-५)

श्री
आ
ग
मो
द्धार
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

आवश्यक-
कस्य
लोकोक्तयः

॥ ५३ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [आवश्यक+विशेषावश्यक-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ५४ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

पुण्येण रज्जं लब्धम् । (७१३-२)
कत्तिओ धम्ममासो । (८०३-२५)
जावजीवाए कत्तिओ । (८०४-२)
सव्वारंभएवित्ता कहं लोगं पत्तियाविति ।
(८१८-३)
जाणंतो सुहं परिहरति । (८४७-७)
अद्धं कुकुट्ठाः पच्यते, अद्धं प्रसवाय
कल्प्यते । (८५१-१)

अथ विशेषावश्यकलोकोक्तयः

बहुविग्धाई सेयाई । (१७-६)
न हि शुक्लं शुक्लीक्रियते, नापि स्निग्धं
स्नेह्यते । (१८-३)
व्रण-पिण्डी-पादलेपादिके लोकव्यवहारे
उपयुज्येत ? । २९-१०)
लोके सर्वत्र तुल्यनामधेयाः बाह्यः पृथु-
बुधोदराऽऽकारोऽर्थोऽपि घट उच्यते ।

(३६-३)
मुण्डितशिरसो दिनशुद्धिपर्यालोचनम् ।
(४६-१)
शान्तिकरणप्रवृत्तस्य वेतालोत्थानम् ।
(७८-८)
चिन्तया वत्स ! ते जातं शरीरकमिदं
कृशम् । (१३३-११)
न य रूढी सच्चिया सव्वा । (१४१-१)
लोकेऽपि हि यो विशेषः सोऽप्यपेक्षया
सामान्यम् यत्सामान्यं तदप्यपेक्षया
विशेष इति व्यवह्रियते । (१६९-१८)
संशयादयोऽज्ञानम् निर्णयस्त्वबाधितो
ज्ञानम् । (१८८-१५)
वक्त्राण्यो विसो न हि संदेहादलक्ष-
णया । (२०५-२)
वक्तारो भवन्ति-‘कटुकस्य, तीक्ष्णादेर्वा
वस्तुनः संबन्धी अयं गन्धः’ इति ।

(२०६-१)
लोकेऽपि सतामाकाशादीनां पर्यायविशेष-
पाऽऽधानापेक्षया करणस्य रूढत्वात् ।
(२३७-५)
आकाशं कुरु, पृष्ठं कुरु, पादौ कुरु ।
(२३७-६)
जो जहा वट्टए कालो तं तहा सेव वानरा ।
(४१०-२०)
तथा च वक्तारो भवन्ति ‘अमुकेन नक्षत्रेण
अमुकेन ग्रहेण चैत्थमित्थं च गच्छता
विनाशितः कालः’ । (४३६-४)
अरण्ये रोझानां लवणदानार्थम् ।
(४३९-१३)
पाएण पुव्वसेवा परिमउई साहणम्मि
गुरुतरिया । (५३४-१)
दासत्तं देइ अणं । (५७०-२)
दिति कसाया भवमणंतं । (५७०-२)

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

आवश्यक-
विशेषाव-
श्यकयो-
लोकोक्तयः

॥ ५४ ॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [विशेषावश्यक+ओघनिर्युक्ति-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ५५ ॥

जायं च अकारणो तमकारणो ज्ञिय
पडेजा । (५७८-८)
संघो जो नाणचरणसंघाओ । (५९१-९)
तव जीवितं पिबामि (६०५-१८)
प्रथमकोपे च यदुच्यते तत् क्रियमाणं
न खलु परिणतौ सुखयति । (६१२-१०)
अनुवर्तनीयं गुरुणां वचनम् । (६१२-१०)
जिणिउं घेप्पंति रयणाइं । (६२०-११)
अमोहं देवाणं दंसणं । (६२१-२५)
पुट्टावि न दुद्धया वंझा । (६२८-१०)
पेयालिय गुण-दोसो जोग्गो जोग्गस्स
भासेजा । (६३८-९)
'जातं तद् दधि' । (७४४-१२)
'जीवितं विषम्' सृतं कुसुम्भकम् ।
(७४४-१३)
सारिसासरिसं सव्वं । (७५७-१)
लोके मरणं गतः प्राप्तः कालगत इत्युच्यते ।

(८५३-१६)
जावन्तो वयणपहा तावन्तो वा नया ।
(९२२-१४)
यथा वीरो महावीर इति । (९३३-८)
यथा भीमो भीमसेन इति । (९३३-१०)
नाकारणंति कज्जं । (९४१-६)
सर्वनयात्मकं हि भगवद्वचनम् । (९४२-३)
ग्रामो दग्धः, पटो दग्धः । (९४९-१६)
बहुजणनाओऽवसिओ होही अगेज्जप-
कखोत्ति । (९९३-९)
भावाओ किं वओ गुरुयं । (१०१८-४)
शक्यमेव हानुष्ठानं विधीयते नाशक्यम् ।
(१०६७-९)
लोकव्यवहारे सांप्रतमल्पस्तन्दुलः, प्रचुरो
गोधूमः, संपन्नो यवः' इत्यादावनेकमप्येक-
मुच्यते । (११७९-४)
न हि दिज्जइ आहरणं पलियत्तियकज्ज-

हत्थस्स । (१२९३-१)
'जीवति पारदः' 'जीवति विषम्' 'जीवत्य-
भ्रकम्' 'जीवति लोहम्' । (१३२१-१४)
असंजमजीवियमविरयाणं । (१३२२-१६)
अथ ओघनिर्युक्तिलोकोक्तयः
महिद्वियं चरणं चारित्तरक्खणट्टा जेणियरे
तिन्नि अणुओगा । (८-२६)
अल्पं गोब्राह्मणं नन्दति । (१८-८)
मज्झबला साहू । (७१-१३)
ते स पिता भवति? येन रोदिषीति ।
(७२-१९)
जोगमि वट्टमाणे अमुगं वेलं गमिस्सा-
मो । (७३-१२)
वेद्यासमीपे वसतां लोको भणति-अहो
तपोवनमिति । (८१-८)
कम्मं निव्वाहिअं होउ । (९८-३)

श्री
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ५५ ॥
विशेषावश्यक
कौष-
निर्युक्त्यो-
लोकोक्तयः
॥ ५५ ॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [ओघनिर्युक्ति+दशवैकालिक-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ५६ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

प्रथमालिकार्थं वा यो गतस्तस्य वा हस्ते
संदिशन्ति (१०१-२५)
तस्य हस्ते संदिशति । (१०२-१६)
रात्रौ दक्षिणाया दिश उत्तरायां दिशि
देवाः प्रयान्ति (इति) लोके श्रुतिः ।
(१२५-९)
मोहनरसो भयेन द्वियते । (१५३-१७)
वक्तारो लोके दृष्टाः, यदुत जीवोऽनेन हिं-
सितो-विनाशितः, तथा घटोऽनेन हिंसि-
तो-विनाशितः । (२२१-१०)
अथ दशवैकालिकलोकोक्तयः
शास्त्राणि चादिमध्यावसानमङ्गलभाजि
भवन्ति । (२-२०)
एष उवसन्ता तवस्सिणो असंख्यं वयन्ति ।
(१०-२२)
क्षेत्रे दानादि सफलम् । (५८-१८)

कथं नु स राजा यो न रक्षति ? (८५-१०)
कथं नु स वैयाकरणो योऽपशब्दान्
प्रयुक्ते । (८५-१०)
न सा महं नोवि अहं पि तीसे । (९३-१६)
पृथक्कर्मफलभुजो हि प्राणिनः । (९४-९)
घुणक्खरमिव । (१११-१०)
घरट्टभ्रमणकल्पम् । (११४-२५)
शिष्टाचरितो मार्गः शिष्टैरनुगन्तव्यः ।
(१२७-४)
पूर्वं निरामयोऽहमासं संप्रति सामयो जातः,
सामयो वा निरामय इति । (१३१-१२)
दह्यते गिरिर्गलति भाजनमनुदरा कन्या
अलोमा षड्केति । (२०९-१)
घुणाक्षरन्यायः । (२१०-२७)
अचक्खुओ व नेतारं, बुद्धिमन्ने उ ते गिरा ।
(२१२-२८)
देहे दुःखं महाफलं, संचिन्त्य ।

(२३२-१०)
दिओ अ ठावई परं । (२५६-२५)
गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ।
(२६५-२६)
पुढविसमे मुणी हविज्जा । (२६७-३)
पुराणः पतित इति कूत्सित-नामधेयम् ।
(२७६-२६)
अनुस्रोतः सुखो लोकः । (२७९-१७)
विषं मृत्युः दधि त्रपुणी प्रत्यक्षो ज्वरः ।
(२७९-२०)
आयुधृतं तन्दुलान्वर्षति पर्जन्यः ।
(२७९-२२)
विहारचरिआ इसिणं पसत्था । (२८०-२)
असंकिलिट्ठेहिं समं वसिज्जा । (२८०-७)
अप्पा खलु सययं रक्खिअव्वो । (२८२-१३)
जहा लोणे अब्भेहिं अणुगतं तब्भं अब्भं-
तरओ भणइ एवं सोवि कामभोगपिवा-

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

ओघ-
निर्युक्ति-
दशवैका-
लिकयो-
लोकोक्तयः

॥ ५६ ॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [दशवैकालिक+पिंडनिर्युक्ति+उत्तराध्ययन-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ५७ ॥

साप परिज्ज्ञाणगतो परिज्ज्ञतो भण्डः ।
(द० चू० १४)
कथं तु राजा यो न रक्षति कथं तु
वैयाकरणः शब्दं न ब्रूयात् । (द० चू० ३४)
अथ पिण्डनिर्युक्तिलोकोक्तयः
न खल्वकामी मण्डनप्रियो भवति ।
(११-२६)
भवति च तत्कार्यत्वात्तच्छब्देन व्यपदेशो
यथा द्रुमो भक्षितोऽनेनेत्यादौ । (३७-४)
मनोज्ञाहारभोजनमिन्द्रदंष्ट्रतया ।
(४४-१९)
जो उ असज्जं साहइ किलिस्सइ न तं
च साहेई । (८६-११)
न य अइव्वा उ गुणा । (८६-२१)
दुल्लभयं खु सुयमुहं । (१२२-१०)
यो दुःखसहायो भवति तस्मै दुःखं

निवेद्यते । (१२२-२४)
दुःखसहायश्च स उच्यते यो दुःखप्रती-
कारसमर्थः । (१२२-२४)
लोके चटुकारिण एते जन्मान्तरेऽप्यदत्त-
दाना आहाराद्यर्थं श्वान इवात्मानं
दर्शयन्तीत्यवर्णवादः । (१३१-९)
स च तेषां सर्वेषामपि प्रायो भगिनीपतिः ।
(१३५-२)
पापाजीविनः पापेन-विद्यादिना परद्रोह-
करणरूपेण जीवनशीला मायिनः-शठा
इति लोके जुगुप्सा । (१४२-५)
लोके एवं श्रुतिः-यदि कुमारी ऋतुमती
भवेत् तर्हि यावन्तस्तस्या रुधिरबिन्दवो
निपतन्ति तावतो वारान् तन्माता नरकं
याति । (१४५-७)
जं संकियमावन्नो । (१४५-७)
पत्थं पुन रोगहरं । (१७९-२०)

अथोत्तराध्ययनलोकोक्तयः

लोकेऽपि हस्तिन्यश्वे च द्वयोरपि राक्षो
दृष्टिः । (३२-१९)
घृष्यतां कलिना कलिः । (५०-२०)
न चिद्रे गुरुणांतिप । (५४-२१)
कियच्चिरमयमजङ्गमोऽस्माभिरनुपाल-
नीयः । (६३-१)
कर्मकृतं लोकवैचित्र्यम् । (७५-४)
यत्कर्म कारयिष्यति तत्कारिष्यामः ।
(७५-४)
नेह वसति प्रोषितः (७९-६)
असमाणो चरे भिक्खु । (१०७-१४)
न य वित्तासप परं । (१०८-१७)
अक्रोसेज्ज परो भिक्खुं । (१११-१६)
हओ ण संजले भिक्खुं । (११४-४)
नत्थि जीवस्स नासुत्ति । (११४-११)

दशवैका-
लिकपिण्ड-
निर्युक्त्यु-
त्तराध्य-
यनानां
लोकोक्तयः

॥ ५७ ॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [उत्तराध्ययन-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ

॥ ५८ ॥

श्री-
आ-
ग-
मो-
द्धार-
क-
सं-
शो-
ध-
ित-
मु-
नि-
दी-
प-
र-
त्न-
सा-
ग-
रे-
ण-
पु-
नः-
सं-
क-
ल-
ित-

नत्थि किंचि अजादयं । (११६-१०)
गृहवासो बहुखावद्यः । (११७-३)
मं अणिज्जिउं कहं मम सहाए खाहिसि ।
(११८-१०)
परस्स लाभो न गिण्हियव्वो । (११९-७)
अदीणो ठावए पण्णं । (११९-१४)
वेएज्ज निज्जरापेही । (१२३-६)
जह्णं काएण धारए । (१२३-६)
न तेसिं पीहए मुणी । (१२४-९)
जं मए गहियं तं सुगहियं । (१७९-१)
काका नीयते । (१८४-२१)
स पुव्वमेवं ण लभेज्ज पच्छा । (२२४-५)
विसीदति सिट्ठिले आउयंमि । (२२४-६)
खिण्णं न सक्केइ विवेगमेउं । (२२४-२४)
आयाणरक्खी चरमप्पमत्तो । (२२४-२५)
रक्खेज्ज कोहं विणएज्ज माणं । (२२६-११)
मायं ण सेवेज्ज पहिज्ज लोहं । (२२६-११)

कंखे गुणे जाव सरीरमेण । (२२७-१९)
मृतं कुसुम्भकमरज्जकं, मृतमन्नमव्यञ्ज-
नम् । (२२९-१७)
स्वकृतकर्मफलभुजो हि जन्तवः ।
(२४४-१३)
ण संतसंति मरणंते, सीलवंता बहु-
स्सुआ । (२५३-८)
जावंतस्विज्जा पुरिसा सव्वे ते दुक्खसंभवा ।
(२६२-१३)
अप्पणा सच्चमेसेज्जा । (२६४-६)
मिस्तिं भूपहिं कप्पए । (२६४-६)
अत्तट्ठा सच्चमेसेज्जा । (२६४-१२)
ण कंखे पुव्वसंथवं । (२६४-१७)
अप्पमत्तो परिव्वए । (२६८-३)
पुव्वकम्मक्खयट्ठाए इमं देहमुदाहरे ।
(२६८-१३)
कालकंखी परिव्वए । (२६८-२३)

कडं लद्धूण भक्खए । (२६८-२३)
निरवेक्खो परिव्वए । (२६९-६)
गामे अनियओ चरे । (२६९-२१)
एगोऽथ लभते लाभं । (२७८-१४)
दुल्लहा तस्स उम्मज्जा अट्ठाए सुचिरा-
दवि । (२८०-१६)
कम्मसच्चा हु पाणिणो । (२८१-९)
अदीणा जंति देवयं । (२८२-१)
जिच्चमाणो न संविदे । (२८२-१२)
कुसग्गमित्ता इमे कामा । (२८३-१३)
इह कामानियट्ठस्स अत्तट्ठे अवरज्जति ।
(२८४-४)
सुच्चा नेयाउअं मग्गं जं भुजो परिभस्सति ।
(२८४-४)
अहम्मिट्ठे नरएस्सुव्वज्जइ । (२८५-३)
धम्मिट्ठे देवेषु उव्वज्जइ । (२८५-४)
अवालं सेवए मुणी । (२८५-५)

उत्तराध्य-
यनस्य
श्री लोकोक्तयः

॥ ५८ ॥

उ-
त्त-
रा-
ध-
य-
न-
स्य
श्री
ल-
ो-
क-
ो-
क-
्त-
यः

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [उत्तराध्ययन-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ५९ ॥

श्री-
आ-
ग-
मो-
द्धार-
र-
सं-
ग्र-
हे
भा-
गः
८

इयं हाहं तुज्झ आणाभोज्जा । (२८८-१)
पासमाणो न लिप्पई । (२९१-४)
दुप्परिच्चया इमे कामा । (२९२-३)
दुप्परण इमे आया । (२९६-१९)
खेलंति जहा व दासेहिं । (२९७-११)
इत्थी विप्पजहे अणगारे । (२९७-२४)
स्वस्वकर्मफलभुजो हि जन्तवः । (३१०-१२)
पियं न विज्झई किंचि । (३१०-१५)
जिणिच्चा सुहमेहति । (३१३-२२)
अप्पाणमेव जुज्झाहि । (३१३-२२)
सव्वमण्ये जिणं जितं । (३१३-२३)
कलं अग्घइ सोलसिं । (३१५-२५)
इच्छा हु आगाससमा अणंतया ।
(३१६-२०)
पडिपुचं नालमेगस्स । (३१६-२१)
संकप्पेण विहम्मसि । (३१७-१४)
समयं गोयम ! मा पमायण । (३३३-११)

जीवित्तप बहुपञ्चवायण । (३३५-३)
दुल्लभया काएण फासया । (३३७-२)
से सव्वसिणेहवज्जिण । (३३८-२४)
मा वंतं पुणोवि आविण । (३३९-५)
बुद्धे परिणिव्वुण चरे । (३४१-१२)
संति मग्गं च वृहण । (३४१-१२)
मित्तिज्जमाणो वमति । } (३४५-१७)
सुयं लद्धुण मज्झइ । }
सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ
पावंग । (३४५-१८)
अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण
भासइ । (३४५-२२)
सहसा बहुमुडिण जणे । (३५४-१८)
महप्पसाया इसिणो हवंति । (३६७-२१)
न हु मुणी कोवपरा हवंति । (३६७-२१)
न दीसई जाइविसेस कोई । (३६९-२२)
कहं सुजट्टं कुसला वयंति । (३७१-२)

सव्वं सुचिणं सफलं नराणं । (३८४-१६)
कडाण कम्माण न मुक्खु अत्थि ।
(३८४-१६)
सुचीर्णं प्रोषितव्रतम् । (३८४-२२)
पव्वज्जा हु दुक्खं । (३८५-२४)
इको सयं पच्चण्होइ दुक्खं । (३८८-१८)
कत्तारमेवं अणुजाइ कम्मं । (३८८-१८)
भोगा इमे संगकरा भवंति । (३९०-७)
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो । (३९१-२)
न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा । (३९१-९)
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ।
(३९९-१५)
साहाहि रक्खो लहइ समाहिं ।
(४०७-६)
दुक्खं खु भिक्खारिया विहारो ।
(४०६-२१)
इको हु धम्मो नरदेव ! ताणं । (४०८-८)

उत्तराध्य-
यनस्य
लोकोक्तयः

॥ ५९ ॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [उत्तराध्ययन-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ६० ॥

श्री-
आ-
ग-
मो-
द्धार-
क-
सं-
प्र-
हे-
भा-
गः
८
॥ ६० ॥

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः । (४०८-२४)
उज्जमाणं न बुज्जामो, रागद्वेषमिणा
जगं । (४०९-९)
संकमाणो तणुं चरे । (४०९-१३)
जो विज्जार्हिं न जीवई स भिक्खू ।
(४१६-१६)
टिओ उ ठावण परं । (४३०-३)
किं नाम काहामि सुण्ण । (४३२-१७)
मुच्चा पिच्चा सुहं सुअई । (४३३-७)
अणिच्चे जीवलोगंमि किं हिंसाण पस-
ज्जसि? । (४४०-८)
जीवियं चेव रूवं च विज्जुसंपायचंचलं ।
(४४०-९)
असासण सरीरंमि रइं नोवलभामहं ।
(४५३-२०)
इहलोगे निण्णिवासस्स नत्थि किंचि वि-
दुकरं । (४५८-१)

वियाणिया दुक्खविवद्वणं धणं ।
(४६६-२)
ममत्तबंध च महाभयावहं । (४६६-२)
माणुस्सं खु सुदुल्लहं । (४७३-१५)
यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति । (४७३-१७)
गुणवति धने ततः श्रीः श्रीमत्याज्ञा ततो
राज्यम् । (४७३-१८)
अप्पणा अणाहो संतो कहे नाहो भवि-
स्ससि । (४७३-२२)
सीयंति एगे बहुकायरा नरा । (४७७-८)
न वीरजायं अणुजाइ मग्गं । (४७७-१०)
चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिंदिण ।
(४८४-२४)
कालेण कालं विहरिज्ज रट्टे । (४८४-२४)
सीहो व सदेण न संतसिज्जा । (४८५-१)
न सव्व सव्वत्थऽभिरोअइज्जा । (४८५-२)
अणेग छंदांमिह माणवेहिं । (४८५-३)

रयाइं खेविज्ज पुराकडाइं । (४८५-६)
परीसहे आयगुत्ते सहिज्जा । (४८५-७)
निव्वाणमग्गं विरप उवेइ । (४८५-८)
विवित्तलयणाइं भइज्ज ताई । (४८५-१०)
मांसेनैव मांसमुपचीयते । (४९०-२६)
णेउरपेडियाक्खाणययं । (४९६-३)
सव्वसत्तु जिणामहं । (५०४-११)
नमो ते संसयाईय ! सव्वसुत्तमहोयही ! ।
(५११-९)
न वि मुंडिण समणो, न ॐकारेण
बंधणो । न मुणी रणवासेणं, कुसची-
रेण न तावसो ॥ २९ ॥ (५२५-४)
समयाप समणो होइ, बंधचेरेण बंधणो ।
नाणेण य मुणी होइ, तवेण होइ तावसो
॥ ३० ॥ (५२५-५)
कम्मुणा बंधणो होइ, कम्मुणा होइ
क्षत्तिओ ।

श्री-
आ-
ग-
मो-
द्धार-
क-
सं-
प्र-
हे-
भा-
गः
८
॥ ६० ॥

उत्तराध्य-
यनस्य
लोकोक्तयः
॥ ६० ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [उत्तराध्ययन+आचारांग-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ६१ ॥

वहस्सो कम्मुणा होइ, सुद्धो हवइ कम्मुणा
॥ ३१ ॥ (५२५-६)
भासच्छन्ना इवऽग्निगणो । (५२६-१५)
भोगी भमइ संसारे । (५३०-७)
अभोगी विप्पमुच्चई । (५३०-७)
उवलेवो होइ भोगेसु । (५३०-७)
अभोगी नोवलिप्पई । (५३०-७)
इच्छं निओइउं भंते !, वेयावच्चे व सज्झाप ।
(५३६-२)
पूर्वस्मिन्नभश्चतुर्भागे आदित्ये समुत्थिते
इव समुत्थिते । (५३६-१३)
वृथा श्रुतमचिन्तितम् । (६२२-१३)
ब्राह्मणा आयाता वशिष्ठोऽप्यायातः ।
(६२४-१५)
विविक्तवासो मुणिणं पसत्थो । (६२५-९)
कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं । (६२५-११)
त एव विधयः सुसंगृहीता भवन्ति येषां

लक्षणं प्रपञ्चोच्यते । (६३५-११)
ग्रामः समागतः । (७०१-१६)
अथाचारांगलोकोक्तयः
अस्माकं यावज्जीवमनाकुट्टिः । (२१-१५)
वीरभोग्या वसुन्धरा । (२६-१९)
दण्डभयाच्च सर्वा प्रजा बिभ्यति ।
(२६-१९)
पण्या वीरा महावीहिं । (४३-२४)
वीरेहिं एयं अभिभूय दिट्ठं । (५३-१४)
जे पमत्ते गुणट्ठीप । (५३-२७)
साधारणास्त्वनन्ताः । (५८-१६)
सम्यग्ज्ञानपूर्विका हि क्रिया फलवती ।
(६२-६)
जे गुणे से आवट्टे जे आवट्टे से गुणे ।
(६२-२२)
संति पाणा पुढो सिया । (७१-२६)

आरंभमाणा विणयं वयंति । (७८-१९)
जे गुणे से मूलट्टाणे । (९८-२३)
जे मूलट्टाणे से गुणे । (९८-२३)
किं किलास्य हसितेन हास्यास्पदस्येति ।
(१०६-२४)
न लज्जते भवान् न पश्यति आत्मानं
नावलोकयति शिरः पलितभस्मावगुण्डितं
मां दुहितृभूतामेवं गूहितुमिच्छसीति ।
(१०६-२६)
खणं जाणाहि पंडिण । (१०९-१९)
अरइं आउट्टे से मेहावी । (१११-१८)
मंदा मोहेण पाउडा । (११२-२७)
मांसेन पुष्यते मांसम् । (११५-६)
इणमेव नावकंखंति जे जणा धुवचारिणो ।
(१२१-१७)
नत्थि कालस्स णागमो । (१२१-१८)
सब्बे पाणा पियाउया । (१२१-१८)

उत्तराध्य-
यनाचारां-
गयो-
लोकोक्तयः

॥ ६१ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [आचारांग-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ६२ ॥

सर्व्वेसि जीवियं पियं । (१२१-१९)
आयाणिज्जं च आयाय तंमि ठाणे न-
चिट्ठइ । (१२२-१)
वितहं पण्णखेयच्चे तंमि ठाणंमि चिट्ठइ ।
(१२२-१)
आसंच छंदं च विगिंच धीरे ! । (१२७-३)
जेण सिया तेण नो सिया । (१२७-३)
थीभि लोण पव्वहिण । (१२७-४)
नाइचाइज्ज कंचणं । (१२८-१७)
थोवं लडुं न खिसण । (१२८-१८)
अदिस्समाणे कयविक्रयेसु । (१३१-१५)
दुहओ छेत्ता नियाइ । (१३३-१४)
लाभुत्ति न मज्झिजा । (१३४-११)
अलाभुत्ति न सोइजा । (१३४-१२)
बहुं पि लद्धुं न निहे । (१३४-१२)
कामा दुरतिक्रमा । (१३५-२३)
जीवियं दुण्णडिवूहगं । (१३५-२३)

कामकामी खलु अयं पुरिसे (१३५-२३)
धुणे कम्मसररंगं । (१४३-११)
वीरा संमत्तदंसिणो । (१४३-१२)
क्रियमाणं कृतम् । (१४४-७)
जे अणंतदंसी से अणंतारामे । (१४५-७)
केयं पुरिसे कं च नण ? । (१४६-९)
एस वीरे पसंसिए, जं बद्धे पडिमोयण ।
(१४६-१०)
कामा न सेवियव्वा । (१५१-२२)
सया मुणिणो जागरंति । (१५१-२७)
मूढे धम्मं नाभिजाणइ । (१५४-२७)
आरंभजं दुक्खमिणंति णच्चा । (१५५-१६)
माई पमाई पुण एइ गब्बं । (१५५-१७)
जे पज्जवजायसत्थस्स खेयणं से अस-
त्थस्स खेयन्ने । (१५५-१८)
अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ ।
(१५५-२०)

कम्मुणा उवाही जायइ । (१५५-२०)
संमत्तदंसी न करेइ पावं । (१५८-२७)
संसिच्चमाणा पुणरिति गब्बे । (१५९-१४)
कामेसु गिद्धा निचयं करंति । (१५९-१४)
अलं बालस्स संगेण । (१५९-२३)
आयंकदंसी न करेइ पावं । (१६०-६)
सच्चंमि धिइ कुव्वहा । (१६२-२२)
अणणं चर माहणे । (१६३-१४)
छिदिज्ज सोयं लहुभूयगामी । (१६४-७)
आयगुत्ते सया वीरे । (१६६-२)
से न छिज्जइ न भिज्जइ न उज्जइ न हंमइ
कंचणं सव्वलोण । (१६६-३)
अवरेण पुंवि न सरंति एगे । (१६७-३)
का अरई के आणंदे ? । (१६८-६)
इत्थं पि अगगहे चरे । (१६८-६)
तुममेव तुमं सित्तं । (१६८-७)
आत्तैवात्तमनोऽग्रमत्तो भिन्नम् । (१६८-२४)

आचारां-
गस्य
लोकोक्तयः

॥ ६२ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [आचारांग-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ६३ ॥

जं जाणिजा उच्चाह्वयं तं जाणिजा दूरा-
लह्वयं । (१६९-४)
मेहावी मारं तरइ । (१६९-६)
सव्वओ पमत्तस्स भयं । (१७२-३)
जे पगं नामे से बहुं नामे । (१७२-३)
जे बहुं नामे से पगं नामे । (१७२-४)
नावक्खंति जीवियं । (१७२-५)
दिट्ठेहिं निव्वेयं गच्छिजा । (१८०-११)
नाणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि ।
(१८३-८)
दुरणुचरो मग्गो वीराणं अनियट्ठगामीणं ।
(१९२-१५)
जस्स नत्थि पुरा पच्छा मज्झे तस्स
कुओ सिया । (१९४-४)
मोहेण गव्वं मरणाइ पइ । (१९९-१७)
विइया मंदस्स बालया । (२००-२१)
दुष्करं च परगुणोत्कीर्त्तनम् । (२०२-१४)

उट्ठिण नो पमायप । (२०४-१०)
पमत्ते बहिया पास । (२०८-५)
अप्पमत्तो परिव्वप । (२०८-५)
जुद्धारिहं खलु दुल्लहं । (२११-६)
निव्विण्णचारी अरप पयासु । (२११-१०)
एस से परमारामो जाओ लोगमि
इत्थीओ । (२१८-१)
पुव्वं फासा पच्छा दंडा । (२१८-४)
न हंता नवि घायप । (२२५-११)
ते पडुच्च पडिसंखाप । (२२६-३)
नियाणओ ते न लभंति सुक्खं ।
(२३२-२५)
बहुदुक्खा हु जन्तवो । (२३८-६)
सत्ता कामेसु माणवा । (२३८-६)
(णय) ओहं तरप जणगा जेण विप्पज्झा ।
(२३९-१७)
चिच्चा सव्वं विमुत्तिथं । (२४२-२१)

नममाणा वेगे जीवियं विप्परिणामंति ।
(२५१-१७)
पुट्ठावेगे नियट्ठति जीवियस्सेव कारणा ।
(२५१-१७)
निक्खंतंति तेसिं दुक्खिक्खंतं भवइ ।
बालवयणिजा हु ते नरा । (२५१-१८)
ओप समियदंसणे । (२५४-१६)
अवहिल्लेसे परिव्वप । (२५७-४)
संक्खाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिनिव्वुडे ।
(२५७-५)
सुत्तत्थजाणएणं समाहिमरणं तु कायव्यं ।
(२६२-७)
जामा तिन्नि उदाहिया । (२६८-१६)
जे णिव्वुया पावेहिं कम्महिं अणियाणा
ते वियाहिया । (२६८-१७)
जीवियं नाभिकंखिजा । (२८९-१८)
मरणं नोवि पत्थप । (२८९-१८)

आचारां-
गस्य
लोकोक्तयः

॥ ६३ ॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [आचारांग+सूत्रकृतांग+स्थानांग-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ६४ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
ि
त
मु
नि
दी
प
र
त्न
सा
ग
रे
ण
पु
नः
सं
क
ल
ि
तः

दुहओवि न सज्जिजा । (२८९-१९)
मज्झत्थो निज्जरापेही, समाहिमणुपालण ।
(२९०-१८)
ठावप तत्थ अप्पगं । (२९४-१८)
न मे देहे परीसहा । (२९४-१८)
ओउरेसु न रज्जिजा । (२९४-२०)
इच्छा लोभं न सेविजा । (२९४-२०)
दिव्वमायं न सहहे । (२९४-२१)
सोवहिणं दु लुप्पई बाले । (३०४-७)
महाकडं न से सेवे । (३०५-१४)
सव्वजगज्जीवहियं अरिहं ! तित्थं पवत्ते-
हि । (४२२-२६)
अल्लसप सव्वसहे महामुणी । (४३०-८)

अथ सूत्रकृतांगलोकोक्तयः

अज्ञो गुडमेव विषमिति मन्यते किं तस्य
मारयितुकामेनापि बुद्धिमता गुडं एव

दीयते ? । (१७-२५)
सव्वे अकंतदुक्खा य, अओ सव्वे अहिं-
सिता । एयं खु नाणिणो सारं, जन्न
हिंसइ किंचण । (५१-८)
अत्तहिअं खु दुहेण लब्भइ । (६९-६)
गुरुणो छंदानुवत्तगा विरया । (७०-४)
पगस्स गती य आगती । (७५-१४)
सव्वे सयकम्मकप्पिया, अवियत्तेण
दुहेण पाणिणो हिंडंति भयाउला सदा ।
(७५-१५)
तिविहेण वि पाण मा हणे । (७६-१९)
दैवायत्ताः कार्यसिद्धयः । (८९-७)
किं परं मरणं सिया ? । (९०-४)
जेणऽजे णो विरुज्जेजा, तेण तं तं समायरे ।
(९४-३)
सातं सातेण विज्जती । (९६-२)
जेहिं काले परिकंतं न पच्छा परितप्पण ।

(९९-१८)
बहुमायाओ इत्थिओ । (११२-८)
आहेसु विज्जाचरणं पमोक्खं ।
(२१९-२०)
खजनाश्च न बान्धवा इति व्यवहारदर्श-
नात् । (२९४-११)
सरागा अपि वीतरागा इव चेष्टन्ते ।
(३८४-१८)
अथ स्थानांगलोकोक्तयः
कष्टकशाखामर्दनम् । (१-१६)
न हि पुरुषार्थानुपयोगि भगवन्तो भाषन्ते ।
(८-१४)
काकदन्तपरीक्षा । (८-१९)
न कदाचिदनीदृशं जगत् । (७८-१३)
गुडमिश्रं दधि न गुडतया नापि दधितया
व्यपदिश्यते । (१०७-८)
तन्दुलान् वर्षति पर्जन्यः । (१२९-५)

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
शो
ध
ि
त
मु
नि
दी
प
र
त्न
सा
ग
रे
ण
पु
नः
सं
क
ल
ि
तः

आचारांग-
सूत्रकृतांग-
स्थानांगानां
लोकोक्तयः

॥ ६४ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [स्थानांग+समवायांग+भगवती-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ६५ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
र
सं
ग्र
ह
भा
गः
८

रसवती गुणनिका । (१९९-५)
प्रत्युपेक्षणाकरणात् कालोऽपि प्रत्युपेक्ष-
णेति । (१९९-७)
खंतिसूरा अरहंता । }
तवसूरा अणगारा । } (२३७-१६)
दाणसूरे वेसमणे । }
जुद्धसूरे वासुदेवे । }
यथाऽसौ भटस्तं भटं सहते तस्मान्न
भज्यत इति भावः । (२४७-२१)
यथा शठं प्रति शठत्वं कुर्यात् । (२५९-२)
पूयाहिज्जे लोए । (३४२-१४)
केलासभवणा एए, गुज्झगा आगया
महिं । (३४२-२०)
नवश्रोतःपरिश्रवा बौन्दी । (४५१-११)
अथ समवायांगलोकोक्तयः
पदार्थसार्थमभिधत्ता सक्रम एवासाव-
भिधातव्य इति न्यायः । (५-१६)
क्रियासारमेव ज्ञानम् । (१०९-१२)

अथ भगवतीलोकोक्तयः

वक्तुमुत्तिष्ठते इति ततस्तद्व्यबच्छेदा-
योक्तमुत्थयेति । (१४-१०)
जे कडे पावे कम्मे नत्थि तस्स अवेह-
यत्ता मोक्खो । (६५-१)
अहाकम्मं अहानिकरणं जहा जहा तं
भगवया दिट्ठं तथा तथा तं विप्परिण-
मिस्सतीति । (६५-७)
निन्दा हि किल द्वेषसम्भवा । (१००-१३)
अवद्ये गर्हिते संयमो भवति । (१००-१५)
जल्लेसाईं दब्बाईं परियाइत्ता कालं करेइ
तल्लेसेसु उववज्जइ । (१८८-११)
मृतशब्दापेक्षया परलोकीभूतशब्दवत् ।
(२२१-१२)
नूनमनेन भवान्तरे किञ्चिदशुभं प्राणि-
घातादि वा सेचितमकल्प्यं वा मुनिभ्यो
द्भ्रं, येनायं भोग्यप्यल्पायुः संवृत्त इति ।

(२२६-१०)

जीवदयादि पूर्वं कृतमनेन तेनायं दीर्घायुः
संवृत्तः । (२२७-१०)
आगमबलिया समणा निग्गंथा ।
(३८३-१६)
के पुब्बिं गमणयाए के पच्छा गमण-
याए ? । (४६५-१५)
पुब्बिं वा पच्छावा अवस्सविप्पजहियव्वं ।
(४६५-२६)
महासमुदे वा भुयाहिं दुत्तरो । (४६६-२६)
तिक्खं कमियव्वं । (४६६-२६)
गरुयं लंवेयव्वं । (४६६-२७)
असिधारगं वतं चरियव्वं । (४६६-२७)
धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो
खलु एत्थं किंचिवि दुक्करं । (४६७-१०)
स्वामिना धौतमस्तकस्य हि दासत्वम-
पगच्छतीति लोकव्यवहारः । (५४३-२०)
मधुघटादिन्यायः । (६२३-१८)

स्था० सम०
श्री भगवतीनां
लोकोक्तयः
॥ ६५ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [भगवती+ज्ञाताधर्मकथा+औपपातिक-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ६६ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

वृत्कुम्भादिन्यायः । (६२३-२१)
खंतिखमा पुण अणगारा भगवंतो ।
(६७१-१०)
सूक्ष्मो वायुः सूक्ष्मं मनः । (७६६-८)
न ह्योदनमात्रायामतिमात्रं व्यञ्जनं
युक्तम् । (९५४-१९)
अथ ज्ञाताधर्मकथालोकोक्तयः ।
तव य मम य भिक्खाभायणे भविस्सति ।
(१८५-२५)
भीयस्स खलु भो! पव्वज्जा सरणं
उक्कट्टियस्स सहेसगमणं, लुहियस्स अञ्चं,
तिसियस्स पाणं, आउरस्स मेसज्जं,
माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चय-
करणं, अद्धाणपरिस्संतस्स वाहणगमणं,
तरिउकामस्स पवहणं, किञ्चं परं अभि-
ओजितुकामस्स सहायकिञ्चं । (१९१-६)
मारामुक्के विव काप । (२०२-७)

पणिवइयवच्छला णं देवानुप्पिया! उत्त-
मपुरिसा । (२१९-११)
अपूर्इवयणा णं पिउत्था! उत्तमपुरिसा
वासुदेवा बलदेवा चक्रवट्टी । (२२५-१०)
जो णं णवियाए माउयाए दुइं पाउकामे
से णं निग्गच्छउत्ति । (२३७-२०)
अथ प्रश्रव्याकरणलोकोक्तयः
यथाजातपशुभूताः-शिक्षारक्षणादिवर्जि-
तबलीवर्द्धादिसदृशाः । (६४-५)
अथौपपातिकलोकोक्तयः
कपोतस्य हि पाषाणलवानपि जठराग्नि-
र्जरयतीति किल श्रुतिः । (१६-६)
सिंहस्य हि मैथुनाच्चिवृत्तस्यात्याकर्षणात्
कदाचिन्मेहनं श्रुत्यति एवं ये कचिदप-
राधे राजपुरुषैस्त्रोटितमेहनाः क्रियन्ते ते
सिंहपुच्छितका व्यपदिश्यन्त इति ।
(८७-२१)

अथ जीवाजीवाभिगमलोकोक्तयः
पञ्चालदेशनिवासिनः पुरुषाः पञ्चाला
इति । (१४४-२४)
विकसितानि यानि शतपत्राणि पुण्डरी-
काणि च द्वारादिषु प्रतिकृतित्वेन स्थि-
तानि । (१७५-१९)
तैलेन हि पक्कोऽपूपः प्रायः परिपूर्णवृत्तो
भवति न घृतपक्व इति तैलविशेषणम् ।
(१७७-२७)
सङ्घाटशब्दो युग्मवाची यथा साधुसङ्घाट
इत्यत्र । (१८१-२२)
तोरणेषु हि शोभार्थं तारका निबध्यन्ते
इति लोकेऽपि प्रतीतमिति । (१९९-४)
यत्रागत्य मनुष्या आत्मानमन्दोलयन्ति
ते अन्दोलका इति लोके प्रसिद्धाः ।
(२००-६)
जालकानि यानि भवनभित्तिषु लोके

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

भग०
ज्ञाता०
प्रश्र०
औप०
जीवाजीवा-
भिगमानां
लोकोक्तयः

॥ ६६ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [औपपातिक+प्रज्ञापना-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ६७ ॥

श्री-
आ-
ग-
मो-
द्धार-
सं-
प्र-
हे-
भा-
गः
८

प्रतीतानि । (२०९-१७)
तुल्येष्वपि सर्वशब्दो दृष्टो यथाऽनेन सर्वं
पीतं घृतमिति । (२४५-१६)
यथा सुराण्ड्रेभ्यो संक्रान्तो मगधदेशं
मागध इति । (२६१-२३)
यथा तर्जन्या संस्पृष्टा ज्येष्ठाऽङ्गुलिर्ज्येष्ठे-
वेति । (२६१-२३)
कपोतस्य हि जाठराग्निः पाषाणलवानपि
जरयतीति श्रुतिः । (२७७-२०)
यथा पञ्चालदेशनिवासिनः पञ्चालाः ।
(३८६-१६)
न खलु पश्यति सूक्ष्मान् रूपविशेषान्
मन्दलोचनः । (४६६-३८)
स्थूलदर्शनमपि हिताय मध्यस्थानाम् ।
(४६६-२८)
अथ प्रज्ञापनालोकोक्तयः
यथा 'पञ्चालदेशनिवासिनः पञ्चाला

इति । (७१-३)
जालकानि तानि च भवनभित्तिषु लोके
प्रतीतानि । (९९-१२)
यत्र सुषिरं तत्र व्यन्तराः । (११८-१९)
लोके व्यवहारः-सकषायोऽयं कषायोदय-
वानित्यर्थः । (१३५-१८)
हे साधो ! प्रतिक्रमणं कुरु स्थण्डिलानि
प्रत्युपेक्षस्वेति । (२४८-१६)
यथा अमुका ब्राह्मणी साध्वी शुभं नक्षत्र-
मद्येत्यमुकमङ्गं श्रुतस्कन्धं च पठेत्यादि ।
(२५१-१८)
पुरुषः स्वभावाद् गम्भीराशयो भवति
महत्यामपि चापदि न क्लीबतां भजत
इत्यादि । (२५१-२३)
नपुंसकः स्वभावात् क्लीबो भवति, प्रबल-
मोहानलज्वालाकलापज्वलितश्च ।
(२५१-२४)
समाऽपि काचिद् गम्भीराशया भवति

धृत्या चातीव बलवती, पुरुषोऽपि च
कश्चित्पुच्छप्रकृतिरूपो लभ्यते स्तोकाया-
मपि चापदि क्लीबतां भजते, नपुंसकोऽपि
कश्चिन्मन्दमोहानलो दृढसत्त्वश्च ।
(२५१-२६)
कश्चित् कञ्चन त्वरयन् दिवसे वर्त्तमान
एव वदति उत्तिष्ठ रात्रिर्योतेति, रात्रौ
वा वर्त्तमानायामुत्तिष्ठोद्गतः सूर्य इति ।
(२५९-८)
प्रथमपौरुष्यामेव वर्त्तमानायां कश्चित्
कञ्चन त्वरयन् एवं वदति चल मध्याह्नी-
भूतमिति । (२५९-१०)
गिरिर्दृश्यते गलति भाजनं अनुदरा कन्या
अलोमिका एडका । (२५८-६)
अहो मे निष्कारणः कोपो नैव (कोऽपि)
विरुपं भाषते न च किञ्चिद्विनाशयति ।
(२९०-२१)
तथाविधमुहूर्त्तचशाद्गुणदोषविचारणा-

श्री-
आ-
ग-
मो-
द्धार-
सं-
प्र-
हे-
भा-
गः
८

नीवाजीवा-
भिगमप्र-
ज्ञापनयो-
लोकोक्तयः
॥ ६७ ॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [प्रज्ञापना+जंबूद्वीप-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ

॥ ६८ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

शून्यः परवशीभूय कोपं कुरुते (२९१-२३)
किञ्चिद् दृष्टं न परिभाषितं सम्यगिति
व्यवहारदर्शनात् । (३११-७)
क गतो देवदत्तः? पत्तनं गतः, तथा वचन-
मात्रेणाप्यसौ गतः कोपमिति । (३२८-९)
भिन्नस्य हि वर्णप्रकर्षो भवति (३६३-८)
महीयांसो हि परमकरुणापरीतत्वात् अ-
विशेषेण सर्वेषामनुग्रहाय प्रवर्त्तन्ते ।
(४२५-२४)
पुनस्तमनुधावतीति न्यायः । (४२९-१३)
श्रूयते च जातिस्मरणादिना विज्ञाय पूर्वं-
देहमतिमोहात् (केचित्) सुरनदीं प्रत्य-
स्थिशकलानि नयन्तीति । (४४२-१)
मनुष्येषु सर्वभावसम्भवात् । (४५१-२६)
क्षत्रिया एवं मन्यन्ते परविषयापहारो-
ऽस्माकं न्यायो 'वीरभोग्या वसुन्धरा'
इति न्यायात् । (४५६-१२)
तथा च लोके वक्तारः 'आवर्जितोऽयं मया,

सम्मुखीकृत' इत्यर्थः । (६०५-२४)
अथ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिलोकोक्तयः
चन्द्रार्कपङ्कमगुणानुयायिनः शृगाल-
स्थेव । (२-२३)
लोहशालाविकीर्णानां लोहसारकणानां
चुम्बकाश्मप्रयोगेणैव । (२-२४)
कण्टकशाखामर्दनः । (३-४)
लौकिकी वागपि अमुकेन ग्रहेण नक्षत्रेण
वा इत्थमित्थं गच्छता विनाशितः काल
इति । (६-१०)
मुण्डितशिरसो दिनशुद्धिपर्यालोचनम् ।
(१२-११)
न ह्यन्यकरणेऽन्यस्य निवृत्तिर्युक्तिमती ।
(१२-१६)
गजगात्रभिन्नभिन्नदेशसंस्पर्शने बहुविध-
विवादमुखरजात्यन्धवृन्दवत् । (१२-२१)
नाद्याप्येतस्य समयो वर्त्तते । (१३-२१)
लोकेऽपि वक्तारो भवन्ति 'यदियं' जन्य-

यात्रा महर्षिकजनैराकीर्णोति (१०२-१४)
चरणमालिकासंस्थानविशेषकृतं पादा-
भरणं लोके पागडां इति प्रसिद्धम् ।
कपोतस्य हि जाठराग्निः पाषाणलवानपि
जरयतीति लौकिकश्रुतिः । (११७-१४)
सर्वं भाजनस्थं जलं पीतम् । (२२५-२६)
लौकिकैरुक्तं ब्रह्मणासृष्टमिदमण्डकं तत
इयं जगतः प्रसूतिरित्येवं सर्वत्र प्रवादो-
ऽभूत्ततोऽपि च ब्रह्माण्डपुराणं नाम-
शास्त्रमभूदिति प्रसङ्गाद्बोध्यमिति ।
(२४७-३)
तोरणेषु हि शोभार्थं तारिका निबध्यन्त
इति प्रतीतं लोकेऽपि । (२९२-१८)
सिंहावलोकनन्यायः । (३८३-१)
तर्जन्या संसृष्टा ज्येष्ठाङ्गुलिर्ज्येष्ठेवेति ।
(४२५-१०)
प्रकाशतमसोः सहावस्थायित्वविरोधः ।
(४५७-११)

श्री
आ
ग
मो
द्धार
सं
ग्र
हे
भा
गः
८

प्रज्ञापना-
जंबूद्वीपयो-
लोकोक्तयः

॥ ६८ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [जंबूद्वीप+निशीथ-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ६९ ॥

श्री-
आ-
ग-
मो-
द्धार-
क-
सं-
प्र-
हे-
भा-
भा-
८

न हि सतीं जनप्रतीतिं वयमपलपामः ।
(४५९-१७)
अथ निशीथचूर्णिलोकोक्तयः
प्रथमखंडेः—
तवस्स मूलं धिती । (२७-१-९)
तुमं किं जाणसि कूचमंडुको । (३४-२-१)
शस्त्रग्रहणाच्च संक्लिष्टतरं चित्तं ।
(१०४-२-१२)
साधुता वा वणवासो । (१०८-२-७)
रायरक्खियाय तवोहणा वणवासिणो ।
(१७४-२-१०)
क्रोधप्रहरणा ऋषयः (१७६-१-१२)
दीहो राइहत्थो (१७७-१-९)
अहिरणसोवणिण्या समणा (१७८-१-१३)
लुद्धदिट्ठंतभाविता । (२०२-१-८)
आतुरदृष्टांतसामर्थ्यात् । (२०२-२-१)
जहा राया तहा पया (२४४-१-४)

जो जिग्गहस्समत्थो न भवति तस्स किं
कहिण्ण (२६६-१-९)
जो वहति सो तणं चरति (२६७-१-२)
साधुं दृष्ट्वा ध्रुवा सिद्धिः (२७३-१-९)
जइ तुम्हे सव्वं लोगं पव्वावेह किं करेमो
(२७५-२-३)
नडपडिण्ण वा किं तस्स णाणेण ।
(२८९-२-१)
कूचमंडुके दक्खिणावहो पहाणो ।
(२९५-१-१)
अणुवसंताणकउसंजमो कओ वा सज्झाओ
(२९६-१-१०)
रोषणो य गुरुसीसपाडिच्छयाणं दुरहि-
गमो (२९९-१-५)
किं मज्झ घरं सुसाणकुडी (३२४-१-१२)
एगो वंडो दो जमदूआ चउरो णीहारी ।
(३२४-२-६)
वेज्जसत्थो य जहवि भावा ते इच्छा

भणिता । (३२५-२-१३)
समलस्स य कओ धम्मो । (३४३-२-१)
जिणसासणं पवण्णेहिं मरणस्स न
मेयव्वं । (३४७-१-४)
एस भट्टपडिण्णो हतो मया ।
(३४९-२-४)
सरणागया णो पहरिज्जंति । (३५०-२-५)
द्वितीयखंडे
णिस्सणिधिसंचया समणत्ति । (५१-१-१३)
अगीयत्थो चउरंगं णासेइ । (५४-१-८)
अहो दुदिट्ठधम्मा परतत्तिवाहिणो ।
(५९-१-५)
परं पभायकाले दधिकूरं सुणगावि खाइउं
णेच्छिहिंति । (८४-१-१२)
कामी एस अजिइदिओत्ति (८८-२-१२)
उविक्खितो वाही दुच्छेज्जो । (९०-१-१)
दुल्लभो पुत्तजम्मो । (९३-२-११)

श्री-
आ-
ग-
मो-
द्धार-
क-
सं-
प्र-
हे-
भा-
भा-
८

जंबू०
निशीथयोः
लोकोक्तयः

॥ ६९ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [निशीथ+बृहत्कल्प-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ७० ॥

अप्पणो जहिच्छा पुण्णेहिं चलति ।
(९४-१-१३)
रुट्ठो कालं ण पडिक्खति त्ति (९७-१-१०)
आत्मनः क्रियाचरितेन गुरोः क्रियाचरितं
ज्ञापयति । (९७-२-७)
जो मणोगते भावं जाणाति तस्स लोगो
आउट्ठति । (९९-१-११)
विणपणय बहुफलं दाणं । (१०३-१-५)
बारवइवणिया थावच्चासुताहरणं कहियं ।
(१०४-२-९)
सत्तुगेसु य घतं दातव्वं । (१०५-१-९)
समत्थस्स किं दिज्जति । (११६-२-१०)
णाणे भावे मूढो भवति । (१३५-२-६)
मूढस्स य दंसणचरणा ण भवति ।
(१३५-२-६)
आदीप पडिसेहियाण सव्वं पडिसेहियं ।
(१३५-२-१३)
रज्जं विलुत्तसारं । (१३६-२-१२)

लोउत्तरे जे धम्मा ते अणुधम्मा ।
(१४४-२-९)
दुट्ठसंसग्गीतो बहूदोसा अदुट्ठसंसग्गीतो
य गुणा । (१६०-२-१२)
बहू महिलियाणं कृतकभावा भवंति पुत्त-
पत्तिपिप्पि । (१७०-२-२)
सभावेण च इत्थी अल्पसत्त्वा भवंति ।
(१७१-२-१)
तृतीयखंडे—
रिसओ कोवपहरणा । (६-१-६)
पते धम्मकंचुगपविट्ठा छगलेस्सा लोगं
मुसंति । (१४-१-३)
रायकरभरेहिं भग्गाणं समणकारो वोढ-
व्वो त्ति । (१४-१-४)
अहो निरणुकंपा मग्गंतस्स वि ण देंति ।
(१९-२-६)
साधुपदोसे नियमा संसारो । (२४-१-६)
इत्थीओ सत्थेण णेयव्वाओ । (३२-१-४)

पातो सव्वाफरिसिप्पि । (४७-२-६)
सीहावलोयणेण भणति । (५४-२-२)
ससल्लो न सिज्झति । (९१-१-९)
उद्धरियसल्लो य सिज्झइ । (९१-१-९)
णिब्भओ घाहं बंधति । (१३३-१-१०)
णिरासो अंगे मुयति मरति य ।
(१३३-१-१०)

अथ बृहत्कल्पलोकोक्तयः

प्रथमखंडे—
दारुभरो य विलुत्तो नगरद्वारे अवारितो ।
(१६५-१-२)
लोउत्तरया धम्मा । (१६६-१-२)
अणुगुरुणो धम्मा । (१६६-१-८)
नत्थि अनिदाणओ होइ उब्भवो तेण
परिहर निदाणं । (१७४-१-२)
यतश्च दोषाः समुत्पद्यन्ते तत् प्रेक्षावतां
नोपादातुमुचितम् । (१७५-२-१४)

निशीथ-
बृहत्कल्पयो-
लोकोक्तयः

॥ ७० ॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [बृहत्कल्प-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ७१ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

उपभोगफलाः शालयः । (२०१-२-९)
सूत्रं पुनरर्थकरणफलम् । (२०१-१-९)
न खलु सद्विवेकसुधाधाराधौतचेतसः
सन्तः कदाचनापि स्वगुणविकल्पात् प्रवृत्ति-
मातन्वते मिथ्याभिमानाख्यप्रबलतमस्ति-
रस्कृतसंज्ञानलोचनप्रसराणामितरजन्तू-
नामेव तत्र प्रवृत्तिसम्भवात् ।
(२०४-२-११)
मुक्तेषु महाभागा विज्ञापुरिस्सा न
भायन्ति ॥ १२५५ ॥ (२०५-१-९)
तद्विहज्जणे य निउणे विज्ञापुरिसा वि-
भायन्ति । (२०५-१-१३)
इय दिप्यन्ति गुणद्वा मुक्तेषु हसिज्जमां-
णावि ॥ १२५८ ॥ (२०५-२-२)
प्रणिपातपर्यवसितप्रकोपा हि भवन्ति
महात्मानः । (२०९-२-३)
परिणाममुन्दरं तदा पातकदुकमप्युपादे-
यम् (२०९-२-१२)

न च बहुगुणपरित्यागेन स्वल्पगुणोपादानं
विदुषां कर्तुमुचितम् । (२११-१-६)
कुसला सुपइट्टियारंभा । (२११-१-१२)
तं तु न विज्जइ सज्जं जं धिइमंतो न
साहेइ । (२१९-२-११)
बालाय लोकाः पराभवनीयतया दर्शनात्
(२३२-२-१२)
नातिबलवन्तो न चातिदुर्बलाः साधवः ।
(२४०-१-५)
पकरात्रमपि हि यस्य गेहे स्थीयते तमना-
पृच्छय गच्छतां भवत्यौचित्यपरिहाणिः ।
(२४०-२-१४)
जोगमि वट्टमाणे अमुगं वेलं गमिस्सामो
(२४२-१-५)
लोके हि यो यस्याश्रयदानादिना उप-
कारी स ततः स्निग्धदृष्टयवलोकनमधु-
रसम्भाषणादिकां महतीं प्रतिपत्तिमर्हति ।
(२४५-१-१३)

सव्वेवि हु ते जिणाणाप । (२५०-२-६)
सावेक्खो जेण गच्छो उ । (२५०-२-६)
यतीनां न कल्पते गृहिणः स्नपनादि कर्तुं
भवतश्च मुधा कुर्वतो बहुफलं ।
(२९७-२-५)
अहिरण्यकाः श्रमणाः (३००-२-६)
न वर्त्तते शिष्टानां यतिभ्यो हिरण्यादि
दातुं (३००-२-७)
जो चरई सो तणं वहइ । (३०९-२-८)
निप्फायगनिप्फन्ना दोस्सिवि होंति महि-
ड्डीया । (३१६-२-४)
सीसोच्चिय सिक्खंतो आयरिओ होइ न-
न्नत्तो । (३१६-२-९)
गच्छो उ भवे महड्डीओ । (३१६-२-५)
रयणायरो उ गच्छो (३१७-१-१०)
द्वितीयखंडेः—
रीढा संपत्तीविहु न खमा संदेहियंमि
अत्थंमि (५-१-७)

श्री
आ
ग
मो
द्धार
क
सं
प्र
हे
भा
गः
८

बृहत्क-
ल्पस्य
लोकोक्तयः

॥ ७१ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [बृहत्कल्प-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ७२ ॥

नायकपुण अत्थे जा वि विवत्ती स
निहोसा । (५-१-७)
चूयफलदोसदरिसी चूयच्छायपि वजेइ ।
(५-२-१०)
पासगणवि विवकखे खरइ सपक्खं
अवेक्खंतो । (६-१-७)
भोजिकामिवादिषु शरीरमात्रभिन्नेषु न
किमपि गोपनीयम् । (७-१-७)
निगंधं नवि वायइ । (११-२-१४)
छापउं व पभायं न वि सक्का । (११-२-१४)
बालाश्च वृद्धाश्च अजंगमाश्चेति लोकेऽपि
तावदेतेऽनुकम्पनीयाः । (२२-२-५)
दुग्धासे खीरवती गावी पुस्सइ कुडुंबभर-
णट्टा मोचुं फलदं व रुक्खं को मंद-
फलऽफले पोसे । (२३-१-३)
बहुसंगहिया अज्जा होइ थिरा इंदलट्टीव ।
(३७-२-५)

सेणा बहु य सोभइ बलवइ गुत्ता तह-
ज्जावि । (३७-२-९)
ऋषयो मन्युप्रहरणाः (४६-१-२)
खट्टामल्लो (वृद्धार्थे) पूवलिआखाओ
(वृद्धार्थे) । ५९-१-८
साधुमप्रावृत्तं दृष्ट्वा गृहस्था आदर्शो दृष्ट
इत्यमंगलं मन्यन्ते (६०-१-१३)
वंदामि उप्पलज्जं अकालपरिसडिय-
पेहुणकलावं । धम्मं किहणु न काहिइ
कण्णा जस्सेत्तिया विद्धा ॥ (६१-१-३)
गोसे चिय अहाए पेच्छंताणं सुहं कत्तो
(६१-१-१०)
अश्रद्धतः कलह उपजायते (६६-२-१२)
अवच्छलत्ते य दंसणे हाणी (७३-२-६)
अकसायं खु चरित्तं
कसायसहिओ न संजओ होइ } (७३-२-८)
सीयघरसमो उ आयरिओ । (७६-२-६)

अकसायं निव्वाणं । (७६-२-१०)
दत्त्वा दानमनीश्वरः । (८६-२-१५)
कडगा य बहु महिलियाणं । (८८-१-९)
ण हु अखरीरो भवइ धम्मो (१०३-१-१३)
पाणियसइण उवाहणाउ णाविम्भलो
मुयइ । (१३९-१-८)
पंच य सक्खीउ धम्मस्स । (१४४-१-१२)
अलं विरोहेण अपंडिणहिं । (१४९-१-१५)
किं सत्तजुसस्स करेइ बुद्धी-वसुंधरेयं
जह वीरभोज्जा । (१५०-१-१७)
कज्जे सच्चेण होयव्वं । (१६२-१-३)
एते धर्मकंचुकाः प्रविष्टा लोकं मुण्णन्ति
एवमप्रीतिके चतुर्गुरवः । (१६५-१-७)
सउणीवि रक्खण णेहु । (१६५-१-५)
अम्हे ठितेल्लकच्चिय अहपवत्तं वहह
तुम्मे । (१६६-१-३)
जो जग्गति सो सया धणो ।

बृहत्क-
ल्पस्य
लोकोक्तयः

॥ ७२ ॥

“आगम-संबंधी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [बृहत्कल्प-लोकोक्तयः]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ७३ ॥

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
प्र
हे
भा
गः
८

(१६७-२-४)
नालस्सेण समं सुकृत्वं न विज्ञा सह
निहया न वेरगं ममत्तेणं नारंभेण दया-
लुया । (१६७-२-१२)
नाणुज्जोया साह । (१७६-१-४)
को दाणि हंसेण किजेज्ज कागं ।
(१७९-२-८)
न सुत्तमत्थं अतिरिच्च जाति (१९७-१-१)
अत्थो जहा गच्छति पज्जवेसु सुत्तंऽपि
अत्थाणुचरं पमाणं । (१९७-१-५)
खेत्तंरियं व किं विसमदोसं ।
(१९८-१-१५)
ण य बंधइ दिट्ठिइ दिट्ठी । (२१४-२-१५)
कायव्वो पुरिसकारो समाहिसंधाण-
णट्ठाप । (२१६-१-६)
बलसरिसो चेव होइ परिणामो ।
(२३४-१-१५)

लक्खणमिच्छंति निही । (२३५-२-९)
समणस्सवि पंचगं भंडं । (२६७-१-२)
अकारणा नत्थिह कज्जे सिद्धी ।
तृतीयखंडेः—
पूइति पूइयं इत्थियाओ पाएण ताओ
लहुसत्ता । (६-१-७)
अपेण बहुं इच्छइ । (१९-१)
विसुद्धालंबणो समणो । (१९-१)
दम्मंति दारुणाविहु दंडेण जहावराहेण ।
(२२-१-९)
दीहो हु रायहत्थो । (३३-२-१)
दत्त्वा दानमनीश्वरः । (३५-१-२)
सुणमाणावि न सुणीमो सज्झायज्झाण-
निच्चमाउत्ता । (५९-२-७)
सावज्जं सोऊण वि नहु लब्भा इक्खिउं
जइणो । (५९-२-७)
अतवो न होइ ओगो । (१०५-२-२)

विविक्कविस्त्रंभरसो हि कामः ।
णिस्संचया उ समणा । (११५-२-३)
भरिओ लोगो अवायाणं । (११६-२-१३)
कज्जं सज्जं तु साहए मतिमं ।
(११७-१-४)
विसकुंभा ते महुपिहाणा । (१२३-१-१३)
नेव य संका विसे किरिया । (१२३-२-३)
दुक्खं खु विमुचिउं गुरुणो (१३३-१-१३)
चरित्तठवणा प्रतिसेवमानेन चारिअं तटे
स्थापितम् । (१३९-२-२)
लज्जामयश्च पुरुषस्त्रियोरलङ्कारः ।
(१६७-२-१५)
भुंजामु ताव भोए दीहो कालो तवगुणाणं ।
(१७२-१-१)
स्त्रीणां च लज्जा विभूषणा । (१९६-२-११)
पृतेन वर्धते मेधा । (२०९-२)
जित्वा वखवता सभा । (२०९-२)

श्री
आ
ग
मो
द्
धा
र
सं
प्र
हे
भा
गः
८

बृहत्क-
ल्पस्य
लोकोक्तयः

॥ ७३ ॥

“आगम-संबन्धी-साहित्य” श्रेणी [भाग-1]

[भाग-1] श्री आगमीय-सूक्तावलि-आदि

आगमीय लोकोक्तयः [बृहत्कल्प+व्यवहार

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः आगमीय-सूक्तावलि-आदि (आगम-संबन्धी-साहित्य)

श्री-
आगमीय-
लोकोक्तौ
॥ ७४ ॥

पृथ्वी कलिना कलिः । (२१८-२-२)
मरणपर्यवसानो जीवलोकः । (२३१-१-८)
तपोधना अहिरण्यसुवर्णाः (२४४-२-१५)
अनियाणयं निष्वाणं } (२४८-२-१०)
अनियाणया सेया
अथ व्यवहारलोकोक्तयः
तृतीयोद्देशकैः—
मोक्षायैव तत्त्ववेदिनां प्रवृत्तेः (२७९-२-८)

आकितिमतो हि नियमा सेसा हि हवन्ति
लङ्घीभो । (२८१-१-५)
जायं पितिवसा नारी दत्ता नारी पति-
वसा । विहवा पुत्तवसा नारी, नत्थि
नारी सयंवसा ॥ (३०४-१-४)
जायंपिय रक्खन्ती मातपिया सासु-
देवरा दिण्णं । पितिभायपुत्त विहवं गुरु
गणिणी य एव अज्जपि ॥ (३०४-१-७)
एगाणिया अपुरिसा सकवाडं घर परं तु

नो पविसे । (३०४-१-१०)
लोके बहुभिरकृत्ये सेवितेऽयं न्यायः शत-
भवध्यं सहस्रमदण्डयं । (३११-१-१०)
भवसयसहस्सलद्धं जिणवयणं भावओ
जहंतस्स । जस्स न जायं दुक्खं न
तस्स दुक्खं परे दुहिते ॥ (३१४-१-११)
वृषसागारिकं नीरसमपरो वृषभश्चव-
यति । (३१६-२-१२)
इत्यागमीयलोकोक्तयः

(आगामीयसूक्तावलि १ सुभाषित २ संग्रहश्लोक ३ लोकोक्तयः ४)

卐

卐

卐

बृह०
व्यवहारयो-
लोकोक्तयः

॥ ७४ ॥

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुनः संपादितः
“आगम-सूक्तावलि-आदि” परिसमाप्ताः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

भाग-1

पूज्य आगमोद्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधितः संपादितश्च
श्री आगमसूक्तावल्यादि

(किंचित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः
“आगम-सूक्तावलि-आदि” नाम्ना परिसमाप्तः

आगम-संबंधी-साहित्य'-श्रेणि, भाग-१



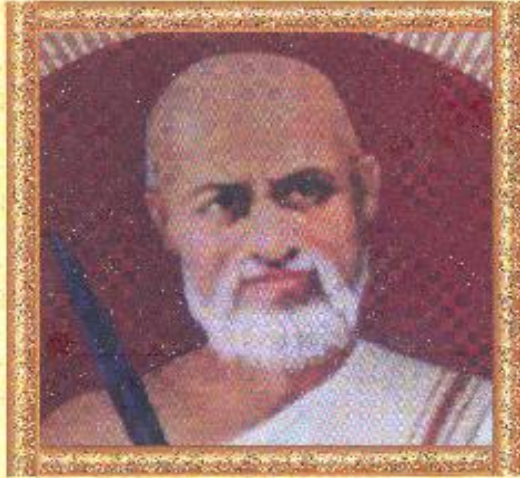
आजम

वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंखणस्स

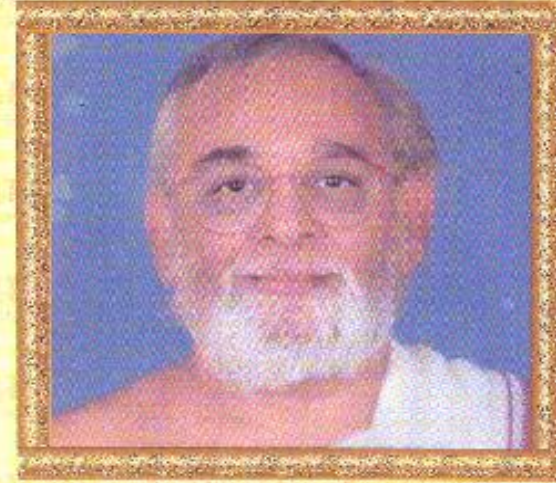
आगम_संबंधी_साहित्य

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपदत्तसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेयरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका

मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

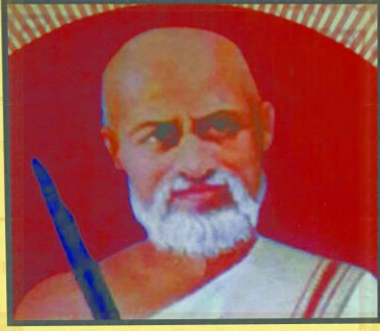
सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब



श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ
वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब पचास साल पहले परम पूज्य स्व र्गस्थ गच्छाधिपति
आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा
संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है,
जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है ।

इस संघमें पूज्य साधू -भगवंत एवं साध्वी -महाराज के लिए
उपाश्रय भी है , जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ
को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है । इस संघमें
आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी
बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है । ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की
सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की
प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है ।



मूल संशोधक
पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब



आगमीय-सूक्तावलि-आदि:

अभिनव-संकलनकर्ता
आगम दिवाकर मुनिश्री दीपल्लसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

